110 वां अंक | अवधि : छमाही
(अक्टूबर, 2025 – मार्च, 2026)

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

तोशाली

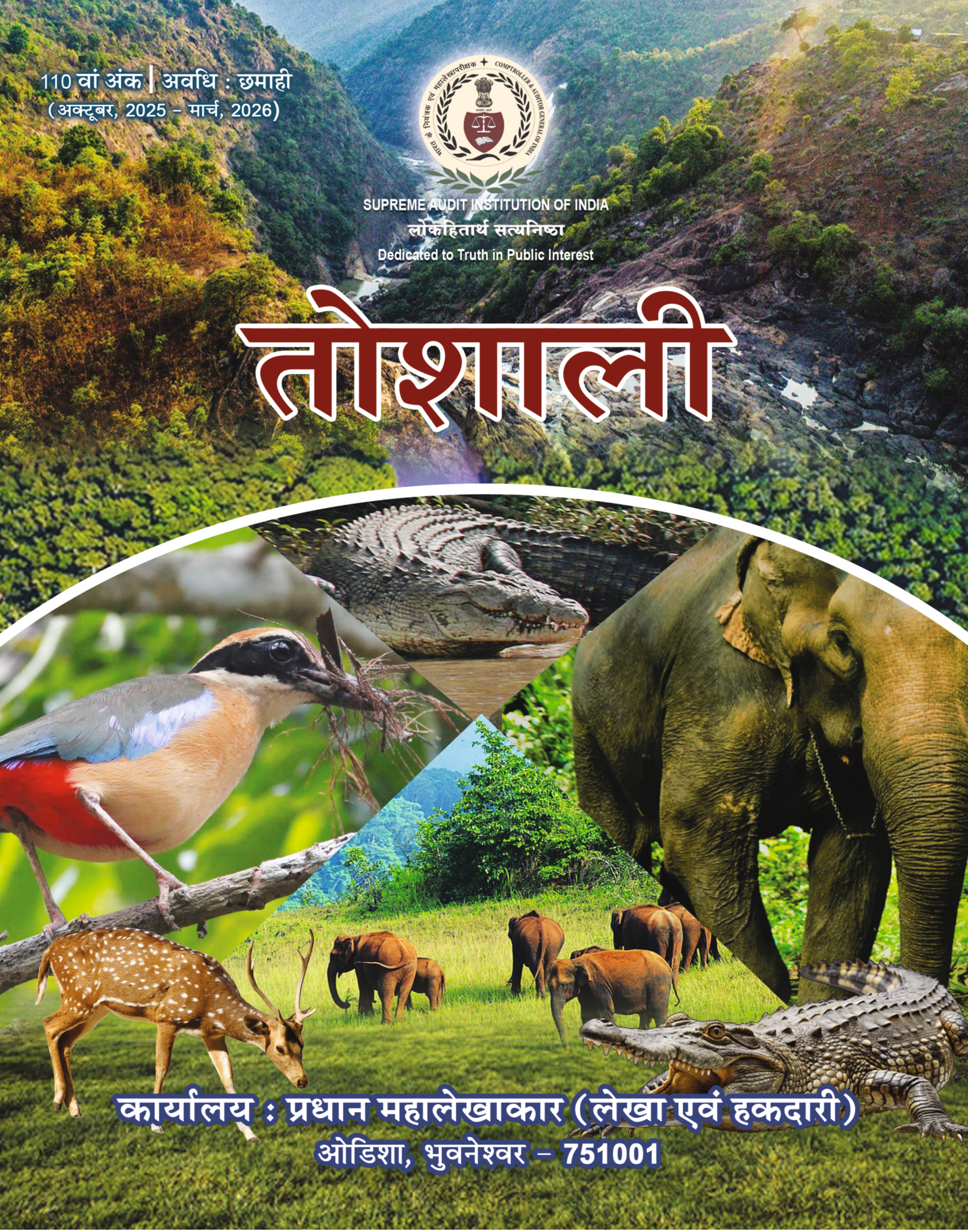

कार्यालय : प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
ओडिशा, भुवनेश्वर – 751001

पांचवें लेखापरीक्षा सप्ताह-2025 की कुछ झलकियां

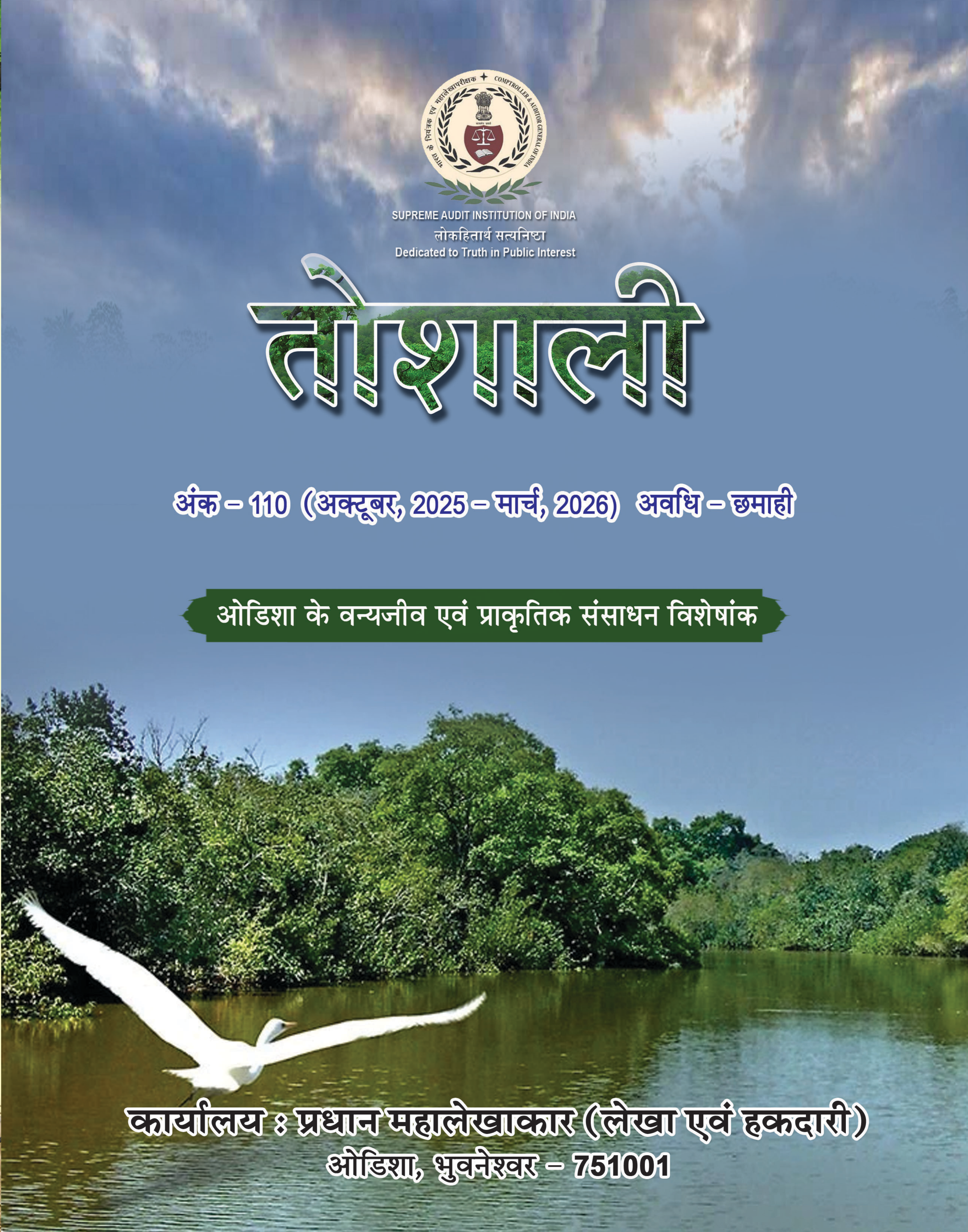

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

तोशाली

अंक – 110 (अक्टूबर, 2025 – मार्च, 2026) अवधि – छमाही

ओडिशा के वन्यजीव एवं प्राकृतिक संसाधन विशेषांक

कार्यालय : प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
ओडिशा, भुवनेश्वर – 751001

पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री डी.साहु

प्रधान महालेखाकार

संरक्षक

श्री मनोज एक्का

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

मार्गदर्शक

श्री स्वामी शुभम बैजनाथ

उप महालेखाकार (निधि एवं पेंशन)

श्री शेख आरिफ हुसैन

उप महालेखाकार (लेखा एवं वीएलसी)

संपादक

सुश्री कीर्ति श्री

सहायक निदेशक (राजभाषा)

सहयोग

सुश्री रूपा कुमारी

वरिष्ठ अनुवादक

सुश्री सुनीता देवी

कनिष्ठ अनुवादक

सुश्री अनिता दास

कनिष्ठ अनुवादक

ध्यातव्य : पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रचनाकारों के व्यक्तिगत विचार व भावनाएं हैं, कार्यालय व संपादक मंडल का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

मुख्य संरक्षक की कलम से...

यह अत्यंत हर्ष की बात है कि हमारे कार्यालय द्वारा "तोशाली" पत्रिका के 110वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। कार्यालयों द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिकाएँ प्रशासनिक परिवेश में हिंदी को जीवंत बनाए रखने का महत्वपूर्ण माध्यम रही हैं। ये पत्रिकाएँ न केवल राजभाषा के प्रयोग को प्रोत्साहित करती हैं, बल्कि कर्मियों की रचनात्मकता, चिंतन और सामाजिक सरोकारों को भी अभिव्यक्ति प्रदान करती हैं। "तोशाली" पत्रिका इसी परंपरा को सुदृढ़ करते हुए निरंतर सार्थक विषयों को पाठकों तक पहुँचा रही है।

प्रस्तुत अंक में ओडिशा की प्रकृति, वन संपदा और जैव विविधता से जुड़े विविध पक्षों को केंद्र में रखा गया है। वन्य जीवों का संरक्षण, प्राकृतिक संसाधनों का संतुलित उपयोग और पर्यावरण के प्रति उत्तरदायित्व जैसे विषय आज केवल विशेषज्ञों तक सीमित नहीं रह गए हैं, बल्कि आम जन की सहभागिता की माँग करते हैं। इस दृष्टि से इस अंक में संकलित लेख पाठकों को सोचने और समझने की नई दिशा देते हैं।

ओडिशा की भूमि अपने वन क्षेत्रों, नदियों, झीलों और समृद्ध जीव-जंतुओं के कारण विशिष्ट पहचान रखती है। इन प्राकृतिक धरोहरों का संरक्षण भविष्य की पीढ़ियों के लिए अनिवार्य है। इस अंक के माध्यम से प्रस्तुत विचार पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरुकता बढ़ाने और प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण विकास की भावना को मजबूत करने में सहायक सिद्ध होंगे।

मैं संपादक मंडल एवं सभी सहयोगी लेखकों के प्रयासों की प्रशंसा करता हूँ और आशा करता हूँ कि यह अंक पाठकों में पर्यावरण के प्रति सजगता बढ़ाने के साथ-साथ हिंदी भाषा के विकास में भी अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करेगा।

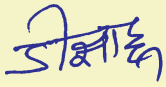

(डी. साहु)
प्रधान महालेखाकार

संरक्षक की कलम से...

"तोशाली" पत्रिका के 110वें अंक के प्रकाशन के अवसर पर मैं सभी पाठकों को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। इस अंक की विषयवस्तु "ओडिशा के वन्यजीव एवं प्राकृतिक संसाधन" समय की आवश्यकता के अनुरूप अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक है। जैव विविधता और प्राकृतिक संपदा से समृद्ध ओडिशा का वन्य जीवन न केवल हमारी प्राकृतिक धरोहर है, बल्कि पर्यावरणीय संतुलन का आधार भी है।

यह अंक वन्य जीवन संरक्षण, प्राकृतिक संसाधनों के सतत उपयोग तथा मानव और प्रकृति के सह–अस्तित्व के महत्व को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करता है। सिमलीपाल, भितरकनिका, चिलिका जैसे प्राकृतिक क्षेत्र ओडिशा की विशिष्ट पहचान हैं, जिनके संरक्षण के प्रति जन–जागरुकता आज अत्यंत आवश्यक है। इस संदर्भ में प्रस्तुत आलेख और चित्रण पाठकों को पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनाने में सहायक होंगे।

कार्यालयों में प्रकाशित हिंदी पत्रिकाएँ हिंदी भाषा के विकास, प्रसार और व्यवहारिक उपयोग को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। "तोशाली" पत्रिका न केवल राजभाषा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन में सहायक है, बल्कि कार्यालय कर्मियों में सृजनात्मक अभिव्यक्ति और वैचारिक चेतना को भी प्रोत्साहित करती है। "ओडिशा का वन्य जीवन एवं प्राकृतिक संसाधन" जैसे विषयों को हिंदी माध्यम से प्रस्तुत कर यह पत्रिका ज्ञान, जागरुकता और सामाजिक उत्तरदायित्व का सशक्त मंच बन रही है।

मैं इस अंक के प्रकाशन में जुड़े संपादक मंडल एवं सभी रचनाकारों के प्रयासों की सराहना करता हूँ और आशा करता हूँ कि "तोशाली" पत्रिका का यह अंक पाठकों के लिए उपयोगी, ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक सिद्ध होगा।

(मनोज एक्का)
वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशा.)

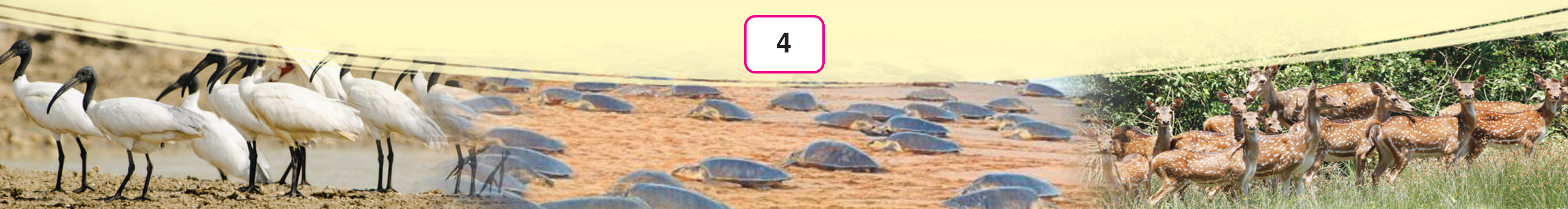

संपादकीय.....

हिंदी न केवल भारत की संपर्क भाषा है, बल्कि यह विश्व पटल पर भारतीय संस्कृति, दर्शन और मूल्यों की संवाहिका भी है। आज के वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी एक सशक्त अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में उभर रही है। विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों में हिंदी का अध्ययन-अध्यापन और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर इसकी बढ़ती पैठ यह सिद्ध करती है कि यह भाषा आधुनिकता और परंपरा के बीच एक सेतु का कार्य कर रही है। कार्यालयीन कामकाज में हिंदी का प्रयोग न केवल संवैधानिक दायित्व है, बल्कि यह जन-सामान्य के साथ आत्मीय जुड़ाव स्थापित करने का सबसे प्रभावी माध्यम भी है।

इसी गौरवशाली परंपरा को आगे बढ़ाते हुए, "तोशाली" पत्रिका का 110वां अंक हमारे सम्मुख है। यह अंक "ओडिशा के वन्यजीव एवं प्राकृतिक संसाधन" को समर्पित है। ओडिशा की यह पावन भूमि सिमलीपाल के राजसी बाघों से लेकर भितरकनिका के दुर्लभ मगरमच्छों और चिल्का की लहरों में अठखेलियां करती डॉल्फिनों तक, विविध जीव-जंतुओं का सुरक्षित आश्रय स्थल है। यहाँ के सघन वन और समृद्ध खनिज संपदा न केवल राज्य की आर्थिक रीढ़ हैं, बल्कि हमारे पारिस्थितिक तंत्र का आधार भी हैं।

इस अंक में संकलित लेख ओडिशा की इसी नैसर्गिक सुंदरता और दुर्लभ जैव-विविधता का जीवंत दर्शन कराती हैं। वन्यजीवों के संरक्षण और अपनी प्राकृतिक धरोहरों को अक्षुण्ण बनाए रखने का संदेश इस अंक के माध्यम से प्रभावी ढंग से संप्रेषित किया गया है। इन विषयों पर हिंदी में गंभीर चिंतन न केवल हमारे ज्ञानवर्धन में सहायक होगा, बल्कि भावी पीढ़ी को भी अपनी धरती के प्रति संवेदनशील बनाएगा।

मैं इस सराहनीय प्रयास के लिए संपादक मंडल और सभी रचनाकारों को अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करती हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह अंक न केवल सूचनाप्रद सिद्ध होगा, बल्कि राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में एक नया मील का पत्थर साबित होगा।

हमारे इस प्रयास के प्रति अपने विचार और सुझाव अवश्य प्रेषित करें ताकि हम इसे और परिष्कृत कर सकें।

धन्यवाद...

(कीर्ति श्री)
सहायक निदेशक (राजभाषा)

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
गृह मंत्रालय
राजभाषा विभाग

(सदैव ऊर्जावान; निरंतर प्रयासरत)

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से; अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से प्रशिक्षण और प्राइज़ से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे; अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए; अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा–हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा! जय हिंद !

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.)
हिमाचल प्रदेश, शिमला-171003

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका "तोशाली" के 109 वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई है जिसमें प्रकाशित सभी रचनाएं उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। हिंदी भाषा की सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका प्रयास सराहनीय है जिसके लिए आपका राजभाषा परिवार बधाई का पात्र है। आशा है पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

-सहायक निदेशक (राजभाषा)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा - II)
मध्य प्रदेश, 53 अरेरा हिल्स- भोपाल-462011

उपर्युक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा "तोशाली" के 109 वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में सभी रचनाएँ प्रशंसनीय है विशेष तौर पर ओडिशा की हस्त कलाएं : एक समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर, ओडिशा की कला एवं संस्कृति, पूरब का सूरज, कला एवं संस्कृति की भूमि ओडिशा, ओडिशा की कला एवं संस्कृति: एक विविधतापूर्ण सांस्कृतिक धरोहर, ओडिशा : कला संस्कृति एवं परंपरा की धरती, आदि रचनाएं सारगर्भित एवं सराहनीय हैं। पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

- सहायक निदेशक (राजभाषा)

प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.) का कार्यालय
वीरचंद पटेल पथ, पटना, बिहार-800001

आपके कार्यालय की अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका "तोशाली" के 109 वें अंक की सॉफ्ट कॉपी प्राप्त हुई। पत्रिका का मुख्य पृष्ठ अत्यंत आकर्षक होने के साथ ही पत्रिका की समग्र साज-सज्जा बेहद उत्कृष्ट है। "तोशाली" राजभाषा के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ भावाभिव्यक्ति की दृष्टि से भी अत्यंत प्रभावशाली है। इस अंक में निहित सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय एवं रोचक हैं; विशेषकर, ओडिशा की कला एवं संस्कृति, ओडिशा के लोक नृत्य, रांची से भुवनेश्वर, पूरब का सूरज एवं माँ आदि। पत्रिका के इस अंक के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मण्डली को बधाई। पत्रिका के अनवरत प्रगति एवं स्वर्णिम भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।

-सहायक निदेशक (राजभाषा)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
उत्तराखंड, देहरादून

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "तोशाली" का 109 वां अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अत्यंत ही मनमोहक है। पत्रिका विभिन्न विधाओं में लिखी गई स्वरचित रचनाओं का सुंदर संग्रह है, जिसमें संकलित संस्मरण, लेख, कविताएं आदि रचनाएं विचारोत्तेजक एवं साहित्यिक संवेदना से युक्त हैं। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिंदी की मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी। पत्रिका के उत्तम संपादन हेतु पत्रिका परिवार बधाई एवं शुभकामनाओं का पात्र है।

-सहायक निदेशक (राजभाषा)

महालेखाकार (लेखापरीक्षा) का कार्यालय

सिक्किम, लेखापरीक्षा भवन देवराली, गान्तोक-737102

आपके द्वारा प्रेषित "तोशाली" के 109 वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, जिसकी पावती सादर प्रेषित की जा रही है। इस उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक पत्रिका को प्रेषित करने के लिए आपका हार्दिक धन्यवाद। पत्रिका का अवलोकन करने पर यह अनुभव हुआ कि इसमें विविध विषयों पर प्रकाशित लेख अत्यंत सारगर्भित, प्रेरणादायक एवं पठनीय हैं। सामाजिक, सांस्कृतिक तथा समसामयिक विषयों पर प्रस्तुत सामग्री न केवल ज्ञानवर्धक है, बल्कि पाठकों को सकारात्मक चिंतन हेतु भी प्रेरित करती है। पत्रिका की प्रस्तुति, विषयवस्तु का चयन तथा संपादकीय दृष्टिकोण अत्यंत सराहनीय है। इस उत्कृष्ट प्रकाशन के लिए संपादक मंडल एवं समस्त सहयोगियों को हार्दिक बधाई। हम कामना करते हैं कि आपकी पत्रिका निरंतर विकसित होती रहे और इसकी गुणवत्ता प्रतिदिन नई ऊँचाइयों को छुए।

-वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा(केंद्रीय),

गोमती नगर,लखनऊ, उत्तर प्रदेश-226010

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी गृह पत्रिका "तोशाली" के 109 वें अंक की ई - प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा किया गया प्रयास अति सराहनीय है। पत्रिका का यह अंक साज-सज्जा एवं मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक एवं मनोहारी बन पड़ा है। साथ ही पत्रिका में समाविष्ट रचना "ओडिशा: एक झलक", "पूरब का सूरज" एवं "माँ" बहुत ही सारगर्भित एवं सराहनीय है। पत्रिका में समाविष्ट अन्य सभी रचनायें अत्यंत प्रेरक, रुचिकर एवं ज्ञानवर्धक है जो ओडिशा की कला एवं संस्कृति, सांस्कृतिक धरोहर और उसके इतिहास का वर्णन करती है। पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मंडल एवं रचनाकारों का हार्दिक अभिनन्दन एवं शुभकामनाएँ।

-वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा उद्योग एवं कार्पोरेट कार्य,

नई दिल्ली, आडिट भवन-110002

आपके कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका "तोशाली" के 109 वें अंक की ई - प्रति प्राप्त हुई, इसके लिए आपका धन्यवाद। पत्रिका का मुख्य पृष्ठ अत्यंत सुंदर है। पत्रिका में शामिल सभी लेख, कविताएं पठनीय एवं ज्ञानवर्धक है। श्री मनीष कुमार, डी.ई.ओ. की "ओडिशा: भारत की आत्मा" एवं श्री अभिषेक कुमार, सहायक लेखा अधिकारी की "पूरब का सूरज" रचनाएं विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को नव इन्द्रप्रस्थ परिवार की ओर से हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।

-सहायक निदेशक (राजभाषा)

क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान,

प्रयागराज, उत्तर प्रदेश - 211001

आपके कार्यालय की पत्रिका तोशाली के 109 वें अंक की प्राप्ति हुई। इस हेतु सादर धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ और विषय-वस्तु बेहतरीन है। इस अंक में प्रस्तुत लेख न केवल ज्ञानवर्धक हैं बल्कि वे कार्मिकों की रचनात्मक क्षमता, बौद्धिक दृष्टि और सामाजिक संवेदनशीलता को भी अभिव्यक्त करते हैं। पत्रिका में सम्मिलित समस्त रचनाएं प्रशंसनीय एवं रोचक हैं। इस विशेषांक में ओडिशा की समृद्ध कला परंपराओं जैसे-ओडिसी नृत्य, मंदिर स्थापत्य, जनजातीय लोककललाएं तथा उत्सवों का जिस प्रामाणिकता और संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुतीकरण किया गया है, वह प्रशंसा के योग्य है। विशेषांक में प्रकाशित लेखों की भाषा सरल प्रवाहपूर्ण और तथ्यात्मक है। चित्रों, संदर्भों और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का संतुलित चेतना और संरक्षण की भावना भी जागृत करता है। ऐसे सार्थक और गुणवत्तापूर्ण विशेषांक के लिए संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

-वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी/ सलाहकार

उत्कल दिवस : ओडिशा की अस्मिता और गौरव का प्रतीक

भारत विविध संस्कृतियों, भाषाओं और परंपराओं का देश है। प्रत्येक राज्य की अपनी अलग पहचान और गौरवशाली इतिहास है। पूर्वी भारत में स्थित ओडिशा अपनी समृद्ध संस्कृति, कला और ऐतिहासिक विरासत के लिए प्रसिद्ध है। ओडिशा के स्थापना दिवस को "उत्कल दिवस" के रूप में प्रत्येक वर्ष 1 अप्रैल को मनाया जाता है। यह दिन केवल राज्य गठन का उत्सव नहीं, बल्कि ओड़िया भाषा, संस्कृति और आत्म-सम्मान की विजय का प्रतीक भी है।

1 अप्रैल 1936 को ओडिशा को एक पृथक राज्य का दर्जा प्राप्त हुआ था। यह भारत का पहला राज्य था जिसका गठन भाषायी आधार पर किया गया। ब्रिटिश शासन के दौरान ओड़िया भाषी क्षेत्र अलग-अलग प्रांतों में विभाजित थे, जिससे ओड़िया भाषा और संस्कृति को नुकसान पहुंच रहा था। उस समय कई महान नेताओं और समाज सुधारकों ने ओडिशा की एकता और पहचान के लिए संघर्ष किया। मधुसूदन दास, गोपबंधु दास तथा फकीर मोहन सेनापति जैसे महान व्यक्तित्वों ने इस आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके अथक प्रयासों के फलस्वरूप ओडिशा का गठन संभव हो सका।

ओडिशा अपनी सांस्कृतिक धरोहर के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध है। जगन्नाथ मंदिर और कोणार्क सूर्य मंदिर यहां की ऐतिहासिक और धार्मिक महत्ता को दर्शाते हैं। ओडिशा का शास्त्रीय नृत्य ओडिसी भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर माना जाता है। यहां की लोककला, हस्तशिल्प और साहित्य भी अत्यंत समृद्ध हैं। सारला दास जैसे साहित्यकारों ने ओड़िया भाषा को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया।

उत्कल दिवस के अवसर पर पूरे ओडिशा में उत्सव जैसा वातावरण दिखाई देता है। विशेष रूप से राजधानी भुवनेश्वर को दुलहन की तरह सजाया जाता है। शहर की प्रमुख सड़कों, सरकारी भवनों, चौक-चौराहों और ऐतिहासिक स्थलों को रंग-बिरंगी रोशनियों, फूलों और पारंपरिक सजावट से आकर्षक रूप दिया जाता है। विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों, झांकियों, लोकनृत्यों और संगीत आयोजनों के माध्यम से ओडिशा की समृद्ध कला और संस्कृति का प्रदर्शन किया जाता है। विद्यालयों और सरकारी संस्थानों में भाषण, निबंध और सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का आयोजन होता है। लोग पारंपरिक वेशभूषा पहनकर इस दिन को गर्व और उत्साह के साथ मनाते हैं।

उत्कल दिवस हमें अपनी भाषा, संस्कृति और परंपराओं के संरक्षण की प्रेरणा देता है। यह दिवस हमें सिखाता है कि अपनी पहचान और अस्मिता की रक्षा के लिए संघर्ष और एकता अत्यंत आवश्यक है। ओडिशा का इतिहास त्याग, संघर्ष और सांस्कृतिक गौरव की प्रेरणादायक गाथा है। इसलिए उत्कल दिवस केवल ओडिशा के लोगों के लिए ही नहीं, बल्कि पूरे देश के लिए गर्व और प्रेरणा का पर्व है।

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठांक
1.	टर्टल मैन	सुश्री प्रिया कुमारी झा	11
2.	कालांतर–उत्कल से ओडिशा तक (कविता)	श्री प्रज्ज्वल उपाध्याय	15
3.	गमले का गुलाब और पिंजरे का पंछी	श्री अभिषेक कुमार	16
4.	भौगोलिक दृष्टिकोण से ओडिशा	श्री यशराज मिश्रा	19
5.	अभिव्यक्ति (कविता)	श्री शिवानंद	21
6.	समृद्ध, संपन्न ओडिशा	श्री जावेद फिरोज	22
7.	सिमलीपाल की गोद में:ओडिशा की प्राकृतिक धरोहर	श्री गौरव यादव	25
8.	ओडिशा के वन्यजीव और प्राकृतिक संसाधन	श्री आलोक कुमार मौर्य	27
9.	ओडिशा: प्रकृति का एक अद्भुत वरदान	श्री तुषार कांति साहा	29
10.	ओडिशा की माटी का गौरव (कविता)	श्री प्रिय चंदन कुमार	31
11.	ओडिशा के प्रमुख वन्यजीव अभयारण्य	श्री मनीष कुमार	32
12.	माधव और ओडिशा के जंगल	श्री रणवीर कुमार	35
13.	ओडिशा: प्रकृति और प्रगति का संगम (कविता)	सुश्री पिंकी गुर्लिया	38
14.	जंगल की ओर एक यात्रा: चंदका वन्यजीव अभयारण्य की सैर	श्रीमती कोयल चक्रवर्ती	40
15.	नीलकंठ का घर और सिमलीपाल की पुकार	श्री विश्वास कुमार सिन्हा	41
16.	श्रेष्ठ (कविता)	श्री मनोहर कुमार झा	43
17.	ओडिशा की अनमोल विरासत: जल, थल और जीवन	श्री प्रिय चंदन कुमार	44
18.	ओडिशा:प्रकृति और जीवन का संगम	सुश्री शुभश्री पात्रो	46
19.	तू जहां, मैं वहीं (कविता)	श्री हलधर स्वाईं	48
20.	ओडिशा का प्राकृतिक सौंदर्य	सुश्री अनिता दास	49
21.	जंगल की गोद में सर्दियों की यात्रा:देब्रीगढ़ वन्यजीव अभयारण्य	सुश्री रिम्पा सरकार	51
22.	गाहिरमाथा : वात्सल्य की एक गाथा	श्री प्रज्ज्वल उपाध्याय	52

●●●

टर्टल मैन

सुश्री प्रिया कुमारी झा
कनिष्ठ अनुवादक

समुद्र के किनारे बसे ओडिशा के एक छोटे से गाँव में एक ऐसे बच्चे का जन्म हुआ, जिसे बचपन से ही प्रकृति से गहरा लगाव था। उस समय किसी ने नहीं सोचा था कि यह शांत स्वभाव वाला, साधारण-सा दिखने वाला लड़का आने वाले वर्षों में लाखों ऑलिव रिडले कछुओं की जान बचाने के लिए अपनी पूरी ज़िंदगी समर्पित कर देगा। जब दूसरे बच्चे खिलौनों से खेलते, तब वह अक्सर समुद्र तट पर बैठकर लहरों को देखता। उसे समुद्र केवल पानी का विस्तार नहीं लगता था, बल्कि उसे समूचा समुद्र एक जीवित दुनिया जैसा महसूस होता था।

कई बार समुद्र किनारे बैठे-बैठे वह मरी हुई मछलियाँ, घायल पक्षी या टूटे हुए कछुए के अंडे देखता। ये दृश्य उसके मन को बेचैन कर देते। वह खुद से सवाल करता: “ये सब मर क्यों जाते हैं? इन्हें कोई बचाने वाला क्यों नहीं है?” बचपन में ही उसके भीतर करुणा और ज़िम्मेदारी का बीज पड़ चुका था।

वह पढ़ाई में सामान्य था, लेकिन उसका दृष्टिकोण समय की सीमाओं से परे था। किताबों से ज़्यादा वह अपने आसपास की दुनिया से सीखता था। स्कूल से लौटते वक्त वह अक्सर जंगल, नदी और समुद्र के किनारे रुक जाया करता और अपना काफी समय वहीं व्यतीत करता।

एक दिन उसने पहली बार ऑलिव रिडले कछुओं को देखा, छोटे-छोटे बच्चे जैसे कछुए, जो रेत से निकलकर समुद्र की ओर जा रहे थे लेकिन उसी दिन उसने यह भी देखा कि उनमें से कई कछुए गाड़ियों से कुचल गए, कई कुत्तों और पक्षियों का शिकार बन गए और कुछ को इंसानों ने पकड़ लिया।

यह दृश्य उसके मन में हमेशा के लिए बस गया।

किशोरावस्था में एक रात उसने देखा कि कुछ लोग समुद्र तट पर आए हुए कछुओं को मार कर ले जा रहे थे। वे उनके अंडे निकाल रहे थे, क्योंकि बाज़ार में उन अंडों की माँग बहुत ज्यादा थी।

उस दिन वह बहुत डर गया और उस रात वह चैन से सो भी नहीं पाया। अगले दिन उसने खुद से कहा: “अगर मैं कुछ नहीं करूँगा, तो ये सब हमेशा ऐसे ही होता रहेगा।”

यहीं से उसके जीवन की कहानी ने एक नया अध्याय शुरू किया।

यह कहानी है ओडिशा के “टर्टल मैन” की उपाधि से सम्मानित गंजम जिले के छोटे से गाँव पुरुनाबंधा के निवासी रवीन्द्रनाथ साहू की। पहली बार ओडिशा के ऋषिकुल्या समुद्र तट पर ओलिव रिडले कछुओं के साथ उनकी दोस्ती हुई थी और पिछले 27 सालों से वह इन्हें बचाने के लिए अथक प्रयास कर रहे हैं। ओलिव रिडले समुद्री कछुए की एक प्रजाति है। यह दुनिया का दूसरा सबसे छोटा समुद्री कछुआ है। दुनिया का सर्वाधिक संकटग्रस्त जीवित समुद्री कछुआ ओलिव रिडले हर साल जाड़ों में ओडिशा के समुद्री तट पर अंडे देने आता है और गर्मियों में लौट जाता है।

साल 1994 में साहू एक वैज्ञानिक,डॉ. पांडव के साथ रात के समय ऋषिकुल्या नदी के मुहाने पर गए थे। उस वक्त वह ये नहीं जानते थे कि उसी एक रात में उनके जीवन की दिशा बदल जाएगी। उस रात उन्होंने पहली बार 30,000 रिडले कछुओं को एक साथ घोंसला बनाते देखा। इसी दृश्य ने साहू को इन कछुओं से एक विशेष जुड़ाव महसूस कराया, जिसने अंततः उन्हें एक संरक्षणवादी बनने के लिए प्रेरित किया। कुछ खोज–बीन करने के बाद उन्हें पता चला कि हर साल ये कछुए यहां पर प्रजनन प्रक्रिया के लिए आते हैं और अंडे देते हैं। पर वहाँ के स्थानीय लोग इन अंडों को बाजार में बेच देते हैं, जिस कारण इन कछुओं की प्रजाति धीरे–धीरे खत्म हो रही है। इसी आकस्मिक अनुभव ने उन्हें अपने जीवन का उद्देश्य समझने में मदद की और इसके बाद से साहू ने ऑलिव रिडले कछुओं का संरक्षण कार्य शुरू किया।

जब साहू ने संरक्षणवादी के रूप में अपने शुरुआती कदम उठाए,तो उन्हें ग्रामीणों के विरोध का सामना करना पड़ा, जो उस समय केवल कछुए के अंडे बेचकर पैसा कमाने में रुचि रखते थे। यहाँ तक कि कई बार उन्हें धमकियाँ भी मिलीं, क्योंकि कछुओं के अवैध शिकार से कुछ लोगों की कमाई होती थी। लेकिन रवीन्द्रनाथ डरे नहीं उन्होंने तय कर लिया कि "अगर सरकार नहीं करेगी, समाज नहीं करेगा – तो मैं अकेला ही सही, लेकिन कोशिश ज़रूर करूँगा।" उन्होंने खुद के पैसों से रात में समुद्र तट पर पहरा देना शुरू किया, कछुओं के अंडों को सुरक्षित जगह पहुँचाया, लोगों को समझाना शुरू किया। यहाँ तक कि कई बार वह पूरी रात बिना सोए समुद्र किनारे रहते। शुरुआत में वह अकेले थे लेकिन धीरे–धीरे कुछ मछुआरे, कुछ बच्चे और कुछ शिक्षक उनके साथ जुड़ने लगे। उन्होंने बच्चों को सिखाया "कछुए सिर्फ जानवर नहीं हैं, ये समुद्र का संतुलन हैं" और देखते ही देखते यह एक जन आंदोलन बन गया। फिर धीरे–धीरे समय के साथ वहाँ के लोगों में भी जागरूकता का संचार हुआ और आगे चल कर उन्होनें भी इस कार्य में उनका पुरजोर सहयोग किया।

इसके अलावा, मीडिया को दिये गए एक इंटरव्यू में उन्होंने बताया कि "जब मैंने यह काम अपने हाथ में लिया, तब मैं केवल एक छात्र था। लेकिन जिस दिन मैंने कछुओं को

सामूहिक रूप से घोंसला बनाते देखा, उसी दिन मैंने अपना जीवन कछुओं को समर्पित कर दिया। उस दिन से, मैं हर शाम घोंसला बनाने के समय समुद्र तट पर पहुँच जाता था और सुबह देर तक वहीं रहता था। किशोर होने के कारण, ग्रामीण मेरी बात नहीं सुनते थे और मुझसे झगड़ा करते थे। ग्रामीणों को यह प्रथा बंद करने के लिए मनाने में लगभग छह साल लग गए।"

साहू अपना गुजारा चलाने के लिए महीने में 20 दिन डेयरी फार्म में काम करते हैं और जीविका कमाने के लिए विभिन्न वन्यजीव परियोजनाओं में भी योगदान देते हैं। वे अपनी तनख्वाह का एक हिस्सा घर चलाने में इस्तेमाल करते हैं और बाकी रकम से अपना गैर सरकारी संगठन "ऋषिकुल्या समुद्री कछुआ संरक्षण समिति" चलाते हैं, जिसमें अब 56 सदस्य हैं। "ऋषिकुल्या समुद्री कछुआ संरक्षण समिति" एक गैर–सरकारी संगठन (एनजीओ) है जिसकी स्थापना रवींद्रनाथ साहू ने ऑलिव रिडले कछुओं के संरक्षण के एकमात्र उद्देश्य से की है।

साहू कहते हैं, "इन प्रजातियों की रक्षा करने से न तो ग्रामीणों को और न ही मुझे कोई आर्थिक लाभ मिलता है। लेकिन फिर भी हम ऐसा करते हैं क्योंकि हम उनका सम्मान करते हैं।" "टर्टल मैन" द्वारा शुरू की गई ऑलिव समुद्री कछुआ संरक्षण परियोजना के कारण ऋषिकुल्या बीच पर इन कछुओं के आगमन में प्रतिवर्ष धीरे–धीरे वृद्धि हो रही है। वास्तव में, गंजम जिले में स्थित इस समुद्र तट पर हर साल अनगिनत संख्या में कछुए घोंसला बनाते हैं और इसलिए साहू

द्वारा शुरू की गई इस नेक संरक्षण परियोजना के प्रभावी साबित होने के साथ, आशा है कि "ओडिशा के टर्टल मैन" की यह अद्भुत कहानी पूरे देश के युवाओं को प्रेरित करेगी।

देश में सामुदायिक सहभागिता के प्रेरणादायी उदाहरण के रूप में, ओडिशा के तटवर्ती तीन गांव आज लुप्तप्राय ऑलिव रिडले कछुओं की रक्षा की मशाल थामे खड़े हैं और इस आंदोलन की अगुवाई साहू कर रहे हैं। साहू कहते हैं, "ये हमारे लिए सिर्फ कछुए नहीं हैं, ये भगवान विष्णु का अवतार हैं। आपने वह कथा तो सुनी ही होगी कि कैसे भगवान विष्णु ने "कुर्मा" या कछुए का अवतार लेकर देवताओं को राक्षसों पर विजय दिलाने में मदद की थी। "कछुआ" और "टर्टल" भले ही अलग-अलग वर्गीकरण परिवारों से आते हों, लेकिन आखिरकार वे सरीसृप ही हैं।"

कछुओं का प्रजनन काल नवंबर के आसपास शुरू होता है और घोंसला बनाने का काम फरवरी के आसपास शुरू होता है। घोंसला बनाने की प्रक्रिया के 45 से 50 दिन बाद बच्चे निकलते हैं। इस दौरान, तट के किनारे का पूरा क्षेत्र मछली पकड़ने के लिए प्रतिबंधित क्षेत्र घोषित कर दिया जाता है और बड़े समुद्री जहाजों का समुद्र में प्रवेश वर्जित कर दिया जाता है।

पोडामपेटा गांव के एक मछुआरे राव के अनुसार सामूहिक घोंसला बनाने का मौसम आमतौर पर 10 दिनों तक चलता है। इसलिए उस दौरान वह मछली पकड़ना पूरी तरह बंद कर देते हैं और घर पर ही रहते हैं। हालांकि मछली पकड़ने के दिनों के अलावा बाकी दिनों में उनके लिए गुजारा करना बहुत मुश्किल हो जाता है, लेकिन वह कछुओं के लिए ऐसा करते हैं।

ओलिव रिडले कछुओं के संरक्षण ने न केवल उनके जीवन को एक उद्देश्य दिया है, बल्कि जनता का ध्यान भी आकर्षित किया है। बहुत से वन्यजीव प्रेमी भी यहाँ आते हैं और उनके काम को देखकर आश्चर्यचकित रह जाते हैं। दरअसल, अब कछुओं को भी समझ आ गया है कि यहाँ उन्हें कोई नुकसान नहीं होगा, इसलिए वे कभी-कभी गाँव के घरों के पास भी अंडे दे देते हैं। यह गाँव जितना ग्रामीणों का है, उतना ही उन कछुओं का भी है।

ऑलिव रिडले कछुओं की लोकप्रियता इतनी अधिक है कि इसने ओडिशा सरकार को ओडिशा में होने वाले सभी अंतरराष्ट्रीय खेल आयोजनों के लिए उन्हें शुभंकर घोषित करने के लिए प्रेरित किया और पहली बार वर्ष 2017 में एशियाई एथलैटिक्स चैंपियनशिप के लिए इन्हें आधिकारिक मास्कॉट (शुभंकर) के रूप में चुना गया था।

संरक्षण उपायों से अच्छे परिणाम मिले हैं और लुप्तप्राय ऑलिव रिडले कछुओं की संख्या में वृद्धि हुई है, जो हर साल समुद्र तट पर आते हैं। हालांकि गहिरमाथा और देवी नदी का मुहाना राज्य के अन्य स्थान हैं जहां घोंसले बनते हैं, लेकिन ऋषिकुल्या में हर साल रिकॉर्ड संख्या में सामूहिक घोंसले बनते हैं।

1994 में मात्र 30,000 कछुओं की तुलना में आज लगभग चार से पाँच लाख कछुए हर साल प्रजनन के लिए इस समुद्र तट पर आते हैं। वर्ष 2025 में प्रजनन के लिए 6,98,000 (लगभग 7 लाख) कछुए आए, जो एक रिकॉर्ड है। हालांकि यह मछली पकड़ने के लिए प्रतिबंधित क्षेत्र है, फिर भी पड़ोसी राज्यों और ओडिशा के अन्य जिलों से कुछ नावें कभी-कभी इस क्षेत्र में प्रवेश कर जाती हैं, जो एक गंभीर खतरा है। पहले अवैध मछली पकड़ने के कारण लगभग 10,000 कछुए मर जाते थे; अब यह संख्या काफी हद तक घट गयी है।

घोंसला बनाने का मौसम मार्च में समाप्त होता है और 45-50 दिनों के बाद अंडों से बच्चे निकलने की प्रक्रिया शुरू होती है। हालांकि, संरक्षण के सभी प्रयासों के बावजूद, कछुओं की मृत्यु दर अभी भी अधिक है। अंडों से बच्चे निकलने की सफलता दर 90 से 95 प्रतिशत है, लेकिन जीवित रहने की दर केवल 1,000 में 1 है। हर साल हजारों कछुए (विशेषकर मादाएँ) मछलियों के जाल में फँसने, नावों से चोट लगने, अवैध शिकार और प्रदूषण के कारण मर जाते हैं। साल 2025 के "अरिबाड़ा" (सामूहिक घोंसला बनाना) के दौरान भारतीय तटरक्षक बल (ICG) ने 5,387 सतह गश्त और हवाई निगरानी की और लगभग 366 अवैध नावों को रोक कर उनकी सुरक्षा सुनिश्चित की।

अब साहू, जिन्होंने डाल्फिन, प्रवासी पक्षियों और अन्य दुर्लभ प्रजातियों के संरक्षण के लिए भी काम करना शुरू कर दिया है, वन्यजीवों के प्रति जागरूकता बढ़ाना चाहते हैं और इसी दिशा में नियमित रूप से स्कूली बच्चों के साथ अभियान चलाते हैं। वे हर साल 23 मई को "विश्व कछुआ दिवस" भी मनाते हैं, जिसे वे "कछुओं का जन्मदिन" कहते हैं, और बच्चों में चॉकलेट बांटते हैं।

साहू कहते हैं, "मैंने अपना जीवन वन्यजीवों के संरक्षण के लिए समर्पित कर दिया है। अब मैं अन्य लुप्तप्राय प्रजातियों के बारे में जागरूकता फैलाने का भी काम कर रहा हूँ। लेकिन मुझे ऑलिव रिडले कछुए बेहद प्यारे हैं। मैं हर साल उनके आने का बेसब्री से इंतजार करता हूँ। वे मेरे दोस्त हैं। मैं इन कछुओं के प्रति किसी भी प्रकार का दुर्व्यवहार बर्दाश्त नहीं करूँगा।"

रवीन्द्रनाथ साहू ने अपने जीवन में:

- लाखों कछुओं के अंडों को सुरक्षित करवाया ।
- हज़ारों घायल कछुओं को समुद्र में वापस छोड़ा।
- प्रशासन को मजबूर किया कि वह कानून लागू करे।

वह बिना किसी बड़े पद, बिना बड़ी डिग्री के – केवल नीयत और प्रेम से यह सब कर रहे थे। मीडिया ने उन्हें नाम दिया–"**Turtle Man of Odisha**" लेकिन रवीन्द्रनाथ कहते हैं: "मैं कोई हीरो नहीं हूँ। मैं बस अपना फर्ज निभा रहा हूँ।" उन्हें कई पुरस्कार मिले, लेकिन वह आज भी साधारण कपड़ों में, समुद्र किनारे वैसे ही चलते हैं जैसे पहले चलते थे। आज ओडिशा का समुद्र तट दुनिया के सबसे सुरक्षित कछुआ प्रजनन स्थलों में गिना जाता है। इसका श्रेय बहुत हद तक रवीन्द्रनाथ साहू जैसे लोगों को जाता है। उन्होंने यह साबित किया कि: "एक अकेला इंसान भी, अगर ठान ले, तो पूरी प्रजाति को बचा सकता है।"

रवीन्द्रनाथ साहू की कहानी हमें सिखाती है:

- बदलाव बड़े पद से नहीं, बड़े दिल से आता है।
- प्रकृति की रक्षा करना कोई विकल्प नहीं, ज़िम्मेदारी है।
- एक साधारण इंसान भी असाधारण काम कर सकता है।

•••

आप जिस तरह बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए। भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए।

– महावीर प्रसाद द्विवेदी

कालांतर : उत्कल से ओडिशा तक

श्री प्रज्ज्वल उपाध्याय
सहायक लेखा अधिकारी

आज सुना रहा हूं मैं जीवंत एक नई कहानी
रंगत जिस प्रदेश की नई, विरासत वही पुरानी
देवमाली सा मुकुट है जिसका, चरणों में समुद्र का पानी
उसी ओडिशा की गौरव गाथा सुनिए आज मेरी जुबानी

जिस धरती की रक्षा करते स्वयं प्रभु जगन्नाथ
और है जिन्हें मिला बाबा लिंगराज का भरपूर साथ
यूं ही नहीं कहलाती यह मंदिरों की यशोभूमि
भक्ति भाव, आस्था प्रगाढ़, इसके उदगार हैं अंदरूनी

इसी धरती पर है जन्मा ओडिसी नृत्य मनमोहक
भाव विह्वल करतीं जिसकी मुद्राएं, कथाएं हैं जिसकी रोचक
कटक की तारकशी की बारीकी के क्या हैं कहने
संबलपुरी इकत रेशम की साड़ी हर स्त्री पहने

त्योहारों में रचे-बसे हैं जिस प्रांत के उदगार
बाली जात्रा, दुर्गा पूजा और नुआखाई त्योहार

इसके जल-थल-वायु मण्डल को कुदरत ने क्या खूब नवाज़ा
नदी, पर्वत, सागर, जंगल – सभी कर देते मन तरोताज़ा
महानदी, ब्राह्मणी, बैतरणी – करतीं ये धरती आच्छादित
हिलोरें लेता विशाल सागर देख जिसको मन होता आह्लादित

सिमलीपाल, भीतरकनिका और चिलिका झील सुरम्य
खंडगिरि-उदयगिरि, धौली, कोणार्क का ऐश्वर्य अदम्य
कोरापुट, दारिंगबड़ी, क्योंझर के पर्वत रमणीक
पखाल, पीठा, रसगोल्ला, छेना, खाजा-स्वादिष्ट और सटीक

करने हासिल चला इसे जब, चिरविजयी मगध भूपति
मचा त्राहिमाम चहुँओर कलिंग में, अत्याचार की हुई अति

पर हुआ हृदय परिवर्तन, अशोक ने परम संतोष तब पाया
जब धौली की पावन धरा ने संसार को 'धम्म' सिखाया

फिर शताब्दियों तक ओड्रदेश ने की स्वर्णकाल अनुभूति
शैलोद्भव, सोमवंश केसरी, गंग-सूर्य, गजपति
तोशाली का वैभव-ऐश्वर्य, जब पहुँचा देश-विदेश
धन-धान्य, खुशहाली से अभिभूत हुआ सारा परिवेश

पर गुरबत के दिन लौट आए, जाने लगी किसकी नज़र
जब उत्कल-धरा पर अंग्रेज़ी आक्रमण की फैली बुरी ख़बर
तब यहाँ के वीर सपूतों ने क्रांति का बीड़ा उठाया
अपने शौर्य-ओ-साहस का लोहा जन-जन से मनवाया

उठाई शमशीर बख्शी जगबंधु ने, हुआ पाइक विद्रोह
कलिंग-रक्षा का संकल्प किए गोरों से भिड़ गए जो
डलहौज़ी की हड़प-नीति की हुई संबलपुर में खिलाफ़त
जब वीर सुरेंद्र साईं ने की दशकों गदर की हिफाज़त

फिर हुआ देश आज़ाद, ओडिशा बना संघ का राज्य
मयूरभंज से मलकानगिरी, बलांगीर से भद्रक अविभाज्य

सन् '57 में हुआ हिराकुद बांध का आविर्भाव
जब शहरों तक पहुँची बिजली, और सिंचे गाँव के गाँव
खनिज संपदा विकसित हुई, बना पारादीप समुद्री बंदर
कालांतर में ये सभी कहलायें "आधुनिक भारत के मन्दिर"

आज उत्कल-भूमि अग्रसर है, करने चहुँ दिशा में प्रगति
संपूर्ण राज्य में विकास की मुख्यधारा ने पकड़ी गति
क्योंकि चुनौतियों की मझधार से पार पाती है जिसकी तरणी
चारु हासमयी, चारु भासमयी – वंदे उत्कल जननी।

•••

गमले का गुलाब और पिंजरे का पंछी

श्री अभिषेक कुमार
सहायक लेखा अधिकारी

पिछले साल की बात है मैं कोलकाता शहर की तंग गलियों से गुजर रहा था। गगनचुंबी अट्टालिकाओं और शहर की भीड़–भाड़ ने मुझे हतप्रभ कर दिया था। हावड़ा स्टेशन पर हमेशा उमड़ता जन समुद्र हो या शहर की गलियों में दौड़ते–भागते लोग, मुझे सोचने पर विवश कर रहे थे। तभी मेरी नजर कंक्रीट के जंगल में बने घोंसलों अर्थात् बहुमंजिला इमारतों की बालकनियों/झरोखों पर पड़ी। एक फ्लैट के बालकनी में गुलाब का एक पौधा जिसमें सुर्ख लाल रंग के गुलाब का फूल शोभा पा रहा था। पास में ही एक पिंजरे में एक तोता लटक रहा था। मैं दो पल रुका फिर वर्तमान परिदृश्य के बारे में सोचने लगा कि मानो सभ्यता ने विकास के नाम पर स्वार्थपरता के चरम को प्राप्त लिया है।

मैंने सोचा कि अगर इंसानों की तरह गमले का गुलाब और पिंजरे का तोता भी बात करते होंगे तो इनके बीच क्या बातें होती होंगी। शायद वे आधुनिक मानव के स्वार्थी प्रकृति के बारे में अपनी–अपनी व्यथा की कथा कहते होंगे। तोता तो स्वभाव से ही बातूनी होता है शायद वो गुलाब को चिढ़ाता होगा कि अब तुममें वह बात नहीं रही अर्थात तुम्हारी मूल प्रकृति तुम्हारी सुगंध तुमसे छिन गई। अब तुममें और कागज के फूलों में कोई अंतर नहीं। जब मैं आजाद था तो फूलों की दुकानों पर लोगों को फूलों पर इत्र छिड़कते देखता था। तोते की बात सुनकर गुलाब ने भी गंभीरता से कहा– मैं तो जो हूं सो हूं पर तुम्हारे पंखों में भी अब जान नहीं रही। तुम्हारा एकाकी जीवन मेरे सीमित आयु से कहीं दुखदायी है। फिर तोता कहता है – तुमने ठीक कहा। गमले के फूलों / पौधों की आयु बहुत कम होती है क्योंकि इनका धरती से जुड़ाव खत्म हो गया होता है। मैंने यहां पिंजरे में लटके–लटके गमले के पौधों को बदलते देखा है। जो पेड़ या जीव जमीन से जुड़े होते हैं या जिनमें मानवीय छेड–छाड़ नहीं होती उनकी आयु प्रकृति तय करती है। लेकिन आजकल मानव ने अत्यधिक उपज के चक्कर में संकर नस्लों की बाढ़ ला दी है तथा मूल बीज लुप्तप्राय हो गए हैं। मानव पहले तो बेतहाशा आबादी बढ़ाते हैं फिर जंगलों को काटते हैं। खेती की जमीन में बड़ी–बड़ी इमारतें खड़ी करते हैं और प्रकृति प्रेम के नाम पर गमलों में बागवानी करके खुद को महान प्रकृति प्रेमी बताते हैं। उन्मुक्त दिनों में मैं कभी–कभी नर्सरी में लगे आम के पेड़ पर बैठा करता था और वहां पौधों के व्यापार को देखता था कि कैसे आधुनिक मानव ने अपने फ्लैट रूपी घोंसलों के लिए छोटे–छोटे आकार के पौधे तैयार करते हैं। मानव शुरू से ही प्रकृति को जितना चाहता है, हर बार हार जाता है।

तोते की बात सुनकर गुलाब ने हामी भरी और कहा कि मानव ने केवल पेड़ पौधे ही नहीं बल्कि पशु–पक्षियों के साथ भी अन्याय किया है। जंगलों के कटने से पशु–पक्षी बेघर हुए और उनकी संख्या बहुत कम हो गई जिसके कारण कीट–पतंगों की संख्या बढ़ने लगी है। मानव पहले तो पशु–पक्षियों को बेघर करते हैं फिर सुंदर–सुंदर पिंजरों में रंग–बिरंगे पक्षियों को पालते हैं और पशु प्रेम के नाम पर घरों में कुत्ते पालते हैं। मुझे तो बड़े–बड़े इमारतों में बने फ्लैट्स पक्षियों के घोसलों की नकल जान पड़ते हैं परंतु ये इनकी बढ़ती जनसंख्या के कारण उत्पन्न होने वाला एक संकट ही है। मानव समाज को अपनी जनसंख्या वृद्धि के अतिरिक्त सभी की वृद्धि खटकती है और अपना पेट भरने के लिए पौधों के संकर नस्लों पर निर्भरता को बढ़ाती है जो पेट तो भरता है परंतु मूल गुणवत्ता से रहित है। फिर तोते ने अपना अनुभव सुनाते हुए कहा कि आधुनिक मानव दिखावा बहुत करता है। इनसे तो लाख गुना बेहतर जंगलों में रहने वाले आदिवासी लोग हैं जो प्रकृति का

सम्मान करते हैं और प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा भी करते हैं। पोषक तत्वों के नाम पर जानवरों, पक्षियों का खून बहाकर मांस का व्यापार करने वाले आधुनिक मानव महान भारतीय परंपरा का मजाक उड़ाते हैं। इन्हें गाय से अधिक चिंता कुत्तों की होती है। तभी तो कुत्ते घरों में पाले जाते हैं और शहरों में गाएं सड़क पर कूड़ा खाकर असमय मरती हैं। इन्हें मांस पोषक तत्व से भरपूर और पंचगव्य फालतू लगते हैं।

तोते ने आगे कहा कि शायद शिक्षा के नाम पर अंधानुकरण ही इसका कारण है। अब तो दुधारू पशुओं की संख्या भी कम हो गई जिसके कारण लोग कृत्रिम दूध, दही,पनीर और अन्य जहरीली सामग्रियां बनाने लगे हैं तथा इन्हें दूध से बने स्वास्थ्यवर्धक चीजों के नाम पर बेचते हैं। ये पैसा बनाने के चक्कर में अपने मानव समाज के विनाश में पुरजोर भागीदारी निभा रहे हैं। साथ ही साथ पर्यावरण का भी नाश कर रहे हैं। गुलाब ने अपना कटु अनुभव सुनाते हुए कहा कि जब मैं एक गांव में जमीन में लगे गुलाब के झुरमुट की एक डाली था तो ज्यादा खुश था। मेरी आयु भी अधिक थी और फूल भी अधिक आते थे और फूलों में खुशबू भी हुआ करती थी। हमारे फूल पूजा में उपयोग होते थे। मैंने पास के खेतों में जहरीले रसायन के छिड़काव को भी देखा है। कभी-कभी हवा के तेज झोकों के कारण जहरीले रसायन हमारे पत्तों पर भी आ गिरते थे और फिर हमारे पत्ते मुरझा जाते थे। स्वस्थ होने में एकाध सप्ताह लग जाया करता था। जहरीले रसायनों के छिड़काव से मानव केवल कीट-पतंगों, खर-पतवारों को ही नष्ट नहीं करते हैं बल्कि ये मूर्ख मानव लोगों में भी कई गंभीर बीमारियों को उत्पन्न करते हैं। आधुनिक मानव विकास के नाम पर विनाश की सारी तैयारी करके बैठा है। जिसका पहला शिकार पेड़-पौधे, दूसरा शिकार पशु-पक्षी और आखिरी शिकार स्वयं मानव ही होगा। अगर मानवों का भस्मासुर वाला यही रवैया रहा तो मानव सभ्यता भी इतिहास बनकर रह जाएगी।

गुलाब की गांव वाली बात सुनकर तोता भावुक हो गया उसे अपने उन्मुक्त दिनों की याद आ गई। तोते ने कहा कि जानते हो भाई मेरा जन्म भी उत्कल भूमि के समृद्ध जंगलों के बीच हुआ था। एक विशाल पीपल का पेड़ हमारा ठिकाना था। हम तोता परिवार अच्छी संख्या में पीपल के खोधरों(घोसलों) में आनंद से रहते थे। खुला आकाश हमारे लिए कौतूहल का विषय था। जब मैंने उड़ना सीखा था तो

अपने परिवार के साथ बादलों को छूने की कोशिश किया करता था। गांव, शहर, पहाड़, नदियां, समुद्र,रेगिस्तान सब हमारी जद में थे। पर एक दिन जंगल में बड़ी – बड़ी मशीनों के कर्णभेदी स्वर सुनाई देने लगे। पशु–पक्षी घबराकर इधर–उधर भागने लगे। सैकड़ों साल पुराने उस पीपल के पेड़ को कुछ ही घंटों में टुकड़ों में बदल दिया गया। जो पक्षी उड़ सकते थे उड़ गए पर अंडे घोसलों में ही नष्ट हो गए। उस दिन सारा जंगल निरीह प्राणियों के चीत्कार से कांप उठा था। फिर हम तो ठहरे पंखों वाले जीव, हमने जंगल के पास के गांव में एक पेड़ पर शरण ली। किंतु कुछ ही दिन बीते थे हमारी स्वतंत्रता को स्वार्थी मानवों की नजर लग गई। कुछ बहेलियों ने हममें से कई तोतों को बच्चों सहित पकड़ लिया और हमें बाजारों में बेच दिया गया। फिर कोलकाता के इस जानवर प्रेमी ने खरीद लिया। तबसे इन्होंने मेरा भरसक ख्याल रखा है और मुझसे सब प्यार भी बहुत करते हैं। पर इतना भी प्यार नहीं करते कि मुझे आजादी दे दें। अब इन्हें मैं प्रेमी कहूं या परपीड़क कुछ समझ नहीं आता।

उन्मुक्त दिनों में मैं कई सौ किलोमीटर की उड़ानें भी भरता था। बड़े–बड़े घने बसे शहर जहां पेड़ों का पतन गमलों तक हुआ है और पशु गले के पट्टों में कैद हैं। इसके अतिरिक्त मैंने कुछ ऐसे शहर भी देखे हैं जहां के लोगों ने पेड़–पौधों और पशु–पक्षियों का भी उतना ही ध्यान रखा है जितना खुद का रखते हैं। जब तक मानव पशु–पक्षी, पेड़–पौधों तथा अन्य प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा नहीं करता है तब तक स्वयं भी रक्षित नहीं है। शहरों की जहरीली हवा का जनक भी मानव है। परंतु परिणाम सारा जीव–जगत भोगता है। मानव स्वार्थपरता से रहित होकर जब तक परोपकार को नहीं अपनाता है तब तक कल्याण का अधिकारी नहीं होगा। शहरों से चिड़ियों की चहचहाहट लुप्त होती जा रही और वाहनों का शोर अब उनका स्थान ले रहा है। गुलाब और तोते की व्यथा की कथा हमें आत्म मंथन के लिए एक मौका देती है। अगर फिर भी हम नहीं जागे तो परिणाम अप्रिय ही होगा।

कोई भी संवेदनशील व्यक्ति प्रकृति से विरक्त होकर नहीं रह सकता। गौर करें तो पता चलता है कि प्रकृति के पंच तत्वों से ही हमारा शरीर भी बना है। प्रकृति का हर पहलू इन्हीं पंच तत्वों से बना है। प्रकृति की एक भी कड़ी अगर टूट जाती है तो मानव इससे अछूता नहीं रह सकता। पक्षियों के न रहने से कीट पतंगों की संख्या बेतहाशा बढ़ती है और इन्हें मारने के लिए कीट नाशकों का उपयोग किया जाता है। कीट–पतंगे तो तत्काल मर जाते हैं परंतु मानव इनके धीमे जहर से धीरे–धीरे प्रभावित होता रहता है। इतिहास साक्षी है जहरीले रसायनों के प्रयोग के पहले गंभीर बीमारियों का खतरा भी बहुत कम हुआ करता था।

मैं खुद को भाग्यशाली मानता हूं कि मेरी कर्मभूमि ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर है जो मानों जंगलों के बीच में बसी है। यहां कंक्रीट के जंगल भी हैं परंतु उन्हें प्राकृतिक जंगलों ने घेर रखा है और जहरीली हवाओं को अपने काबू में कर रखा है। पर्याप्त चौड़ी सड़कें और सड़कों के किनारे पीले/लाल गुलमोहर, नीम, पीपल, बरगद तथा अन्य औषधीय पेड़–पौधे बहुतायत में लगे हुए हैं। वन्य जीवों के संरक्षण के लिए अभयारण्य भी हैं। लोगों का प्रकृति के प्रति जुड़ाव प्रत्यक्ष ही दिखता है। मैंने सरकारी संस्थाओं के अतिरिक्त कई सामान्य नागरिकों को भी सड़क किनारे पेड़ों की रक्षा करते देखा है। न्यू एजी कॉलोनी में इतने सारे पेड़ पौधे है कि सुबह में सबेरे–सबेरे चिड़ियों के मीठे कलरव से ही नींद खुल जाती है। हमें ऐसे शहर की कल्पना करनी होगी जिसमें गांव भी रह सकें। मैंने ओडिशा राज्य के कई जिलों का भ्रमण भी किया है। उत्कल की यह पावन भूमि प्राकृतिक संसाधनों का खजाना है। सरकारों ने यहां के प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा के लिए जागरूकता अभियान भी चलाए हैं। वन्य जीव अभयारण्यों को अपने संरक्षण में लेकर सरकारों ने प्रशंसनीय कार्य किया है तथा लुप्त हो रहे जीव जंतुओं को भी संरक्षित करने का कार्य किया है। ओडिशा की हरी–भरी धरती, गर्वित पहाड़, आनंद के हिलोरें लेता समुद्र हमेशा लोगों को सुख प्रदान करे मैं श्री जगन्नाथ से यही कामना करता हूं।

●●●

भौगोलिक दृष्टिकोण से ओडिशा

श्री यशराज मिश्रा
लेखाकार

भारत विश्व के उन देशों में से एक है जहाँ भौगोलिक, सांस्कृतिक और सामाजिक विविधताएं व्यापक रूप से देखने को मिलती है। भारत का प्रत्येक राज्य अपनी भौगोलिक संरचना, जलवायु, प्राकृतिक संसाधनों और सांस्कृतिक पहचान के कारण विशिष्ट स्थान रखता है। इन्हीं राज्यों में से एक प्रमुख राज्य है – ओडिशा, जो पूर्वी भारत में स्थित अपनी प्राकृतिक समृद्धि, ऐतिहासिक विरासत और सांस्कृतिक परंपराओं के लिए प्रसिद्ध है। ओडिशा न केवल कृषि, खनिज और उद्योगों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, बल्कि भारत की समुद्री सीमा, जैव विविधता और सांस्कृतिक धरोहर में विशेष योगदान देता है।

ओडिशा का कुल क्षेत्रफल लगभग 1,55,707 वर्ग किलोमीटर है, जो भारत के कुल क्षेत्रफल का लगभग 4.87 प्रतिशत है। इसका विस्तार उत्तर से दक्षिण लगभग 700 किलोमीटर तथा पूर्व से पश्चिम लगभग 500 किलोमीटर तक है। राज्य के पूर्व में बंगाल की खाड़ी स्थित है, जबकि उत्तर–पूर्व में पश्चिम बंगाल, उत्तर में झारखंड, पश्चिम और उत्तर–पश्चिम में छत्तीसगढ़ तथा दक्षिण में आंध्र प्रदेश स्थित हैं। इस भौगोलिक स्थिति के कारण ओडिशा में समुद्री, पठारी और पर्वतीय सभी प्रकार की भौगोलिक विशेषताएँ देखने को मिलती हैं।

अक्षांशीय और देशांतरीय दृष्टि से ओडिशा 17°31′ उत्तरी अक्षांश से 22°31′ उत्तरी अक्षांश तथा 81°31′ पूर्वी देशांतर से 87°29′ पूर्वी देशांतर के बीच स्थित है। यह स्थिति राज्य को उष्ण कटिबंधीय मानसूनी जलवायु प्रदान करती है। बंगाल की खाड़ी से सटे होने के कारण राज्य का तटीय भाग समुद्री प्रभाव में रहता है, जबकि आंतरिक भागों में महाद्वीपीय प्रभाव अधिक दिखाई देता है। इसी कारण राज्य के विभिन्न भागों में तापमान, वर्षा और आर्द्रता में उल्लेखनीय भिन्नता पाई जाती है।

भौतिक दृष्टि से ओडिशा का भूगोल अत्यंत विविध है और इसे कई प्राकृतिक भागों में बाँटा जा सकता है। राज्य का पूर्वी भाग विस्तृत तटीय मैदानों से घिरा हुआ है, जो बंगाल की खाड़ी के समानांतर फैले हुए हैं। ये तटीय मैदान मुख्यत: नदियों द्वारा लाई गई जलोढ़ मिट्टी से बने हैं और अत्यंत उपजाऊ हैं। सुवर्णरेखा नदी से लेकर ऋषिकुल्या नदी तक फैले इन मैदानों को बहु–डेल्टा क्षेत्र भी कहा जाता है, क्योंकि यहाँ कई नदियाँ अपने डेल्टा बनाकर समुद्र में गिरती हैं। इन मैदानों में कृषि अत्यंत विकसित है और यहाँ मुख्य रूप से धान की खेती की जाती है। इसके अतिरिक्त गन्ना, दलहन, तिलहन और सब्जियों का उत्पादन भी व्यापक रूप से होता है।

तटीय मैदानों के साथ–साथ ओडिशा की लगभग 450 किलोमीटर लंबी समुद्री तटरेखा भी अत्यंत महत्वपूर्ण भौगोलिक विशेषता है। यह तटरेखा बालासोर से लेकर गंजाम जिले तक फैली हुई है। इस तटीय क्षेत्र में रेत के टीलों, लैगूनों, खाड़ी क्षेत्रों और डेल्टाओं का विकास हुआ है। चिलिका झील, जो एशिया की सबसे बड़ी खारे पानी की झीलों में से एक है, इसी तटीय क्षेत्र की एक विशिष्ट भौगोलिक संरचना है। यह झील बंगाल की खाड़ी से एक संकरी जलधारा द्वारा जुड़ी हुई है और अपनी अद्वितीय पारिस्थितिकी के लिए विश्व प्रसिद्ध है। चिलिका झील प्रवासी पक्षियों, मछलियों और अन्य जलीय जीवों का महत्वपूर्ण आवास है और ओडिशा के भूगोल में इसका स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

तटीय मैदानों के पश्चिम की ओर बढ़ने पर भू–भाग धीरे–धीरे ऊँचा होने लगता है और मध्यवर्ती पहाड़ी एवं पठारी क्षेत्र आरंभ हो जाता है। यह क्षेत्र मुख्यत: पूर्वी घाट पर्वतमाला का भाग है। पूर्वी घाट ओडिशा के मध्य और दक्षिणी भागों में फैले हुए हैं और इनकी ऊँचाई पश्चिमी घाट की तुलना में कम है, फिर भी ये भौगोलिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इन

पहाड़ियों में अनेक घाटियाँ, जलप्रपात और घने वन क्षेत्र पाए जाते हैं। यह क्षेत्र खनिज संसाधनों से भी समृद्ध है और यहाँ लौह अयस्क, बॉक्साइट तथा अन्य खनिज पाए जाते हैं।

ओडिशा के मध्य भाग में कई पठार भी स्थित हैं, जिनकी औसत ऊँचाई 300 से 600 मीटर के बीच है। ये पठार प्राचीन भूगर्भीय संरचनाओं से बने हैं और गोंडवाना युग की चट्टानों का प्रतिनिधित्व करते हैं। पठारी क्षेत्रों की मिट्टी अपेक्षाकृत कम उपजाऊ होती है, फिर भी यहाँ मोटे अनाज, दालें और कुछ नकदी फसलें उगाई जाती हैं। इन क्षेत्रों में आदिवासी जनसंख्या का निवास अधिक है, जो पारंपरिक कृषि और वन–आधारित जीवनशैली पर निर्भर करती है।

ओडिशा का पश्चिमी भाग ढलानयुक्त उच्चभूमि से युक्त है, जिसे पश्चिमी रोलिंग अपलैंड्स कहा जाता है। यह क्षेत्र छत्तीसगढ़ के पठार की ओर ढलान बनाता है और यहाँ की स्थलाकृति लहरदार है। इस भाग में भी कृषि और वानिकी दोनों का महत्व है। नदियों द्वारा काटी गई घाटियाँ इस क्षेत्र को और अधिक जटिल बनाती हैं।

नदी प्रणाली ओडिशा के भूगोल का एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटक है। राज्य की अधिकांश नदियाँ पूर्व की ओर बहती हैं और बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं। इनमें सबसे महत्वपूर्ण नदी महानदी है, जो ओडिशा की जीवनरेखा मानी जाती है। महानदी का उद्‌गम छत्तीसगढ़ के अमरकंटक क्षेत्र से होता है और यह ओडिशा में प्रवेश करने के बाद एक विस्तृत डेल्टा बनाती हुई समुद्र में गिरती है। इसका जलग्रहण क्षेत्र राज्य के लगभग 42 प्रतिशत भूभाग को समाहित करता है। यह नदी सिंचाई, पेयजल आपूर्ति और जलविद्युत उत्पादन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

महानदी के अतिरिक्त ब्राह्मणी, बैतरणी, सुवर्णरेखा, बुढ़ाबालंगा, ऋषिकुल्या और वंशधारा जैसी नदियाँ भी ओडिशा के भूगोल में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ब्राह्मणी नदी शंख और कोयल नदियों के संगम से बनती है और औद्योगिक तथा कृषि क्षेत्रों को जल प्रदान करती है। बैतरणी नदी गोनसिका पहाड़ियों से निकलती है और अपने मार्ग में उपजाऊ मैदानों का निर्माण करती है। इन नदियों के कारण तटीय मैदानों में घनी जनसंख्या और समृद्ध कृषि संभव हो पाई है।

ओडिशा की जलवायु मुख्यतः उष्णकटिबंधीय मानसूनी प्रकार की है। यहाँ ग्रीष्म ऋतु मार्च से जून तक रहती है, जब तापमान कई बार 40 डिग्री सेल्सियस से ऊपर पहुँच जाता है। जून से सितंबर तक दक्षिण–पश्चिम मानसून सक्रिय रहता है और राज्य को अधिकांश वर्षा इसी अवधि में प्राप्त होती है। औसतन ओडिशा में 1450 से 1600 मिमी वार्षिक वर्षा होती है। अक्टूबर से दिसंबर तक उत्तर–पूर्व मानसून का हल्का प्रभाव दिखाई देता है, जबकि जनवरी और फरवरी के महीने अपेक्षाकृत शीतल होते हैं। तटीय क्षेत्र में समुद्र के प्रभाव के कारण तापमान में अत्यधिक उतार–चढ़ाव नहीं होता, जबकि आंतरिक भागों में तापमान अधिक चरम होता है।

भौगोलिक स्थिति के कारण ओडिशा प्राकृतिक आपदाओं के प्रति भी संवेदनशील है। बंगाल की खाड़ी से उत्पन्न चक्रवात अक्सर ओडिशा के तटीय भागों को प्रभावित करते हैं। इसके अतिरिक्त बाढ़, सूखा और तटीय कटाव जैसी समस्याएँ भी राज्य के विभिन्न भागों में देखने को मिलती हैं। फिर भी नदियों द्वारा लाई गई उपजाऊ मिट्टी और प्रचुर जल संसाधन राज्य की कृषि आधारित अर्थव्यवस्था को सहारा प्रदान करते हैं।

ओडिशा का वनावरण भी इसके भूगोल का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। राज्य का लगभग एक–तिहाई क्षेत्र वनाच्छादित है। ये वन मुख्यतः मध्य और पश्चिमी पहाड़ी क्षेत्रों में पाए जाते हैं। यहाँ उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन प्रमुख हैं, जिनमें साल, सागौन, बाँस आदि वृक्ष पाए जाते हैं। ये वन न केवल जैव विविधता का संरक्षण करते हैं, बल्कि आदिवासी समुदायों के जीवनयापन का भी आधार हैं।

जैव विविधता की दृष्टि से ओडिशा अत्यंत समृद्ध है। सिमलीपाल, भितरकनिका और सतकोसिया जैसे राष्ट्रीय उद्यान और अभयारण्य राज्य के भूगोल को विशेष पहचान प्रदान करते हैं। भितरकनिका क्षेत्र अपने मैंग्रोव वनों और खारे पानी के मगरमच्छों के लिए प्रसिद्ध है, जबकि सिमलीपाल बाघ अभयारण्य के रूप में जाना जाता है। ये सभी क्षेत्र भौगोलिक, पारिस्थितिक और पर्यावरणीय दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि ओडिशा का भूगोल अत्यंत बहुआयामी और विविध है। तटीय मैदान, पर्वतीय क्षेत्र, पठार, नदियाँ, झीलें, वन और खनिज संसाधन–सभी मिलकर ओडिशा को एक विशिष्ट भौगोलिक इकाई बनाते हैं। यही भौगोलिक विविधता राज्य की कृषि, उद्योग, जनसंख्या वितरण, संस्कृति और आर्थिक गतिविधियों को गहराई से प्रभावित करती है। ओडिशा का भूगोल न केवल प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण है, बल्कि यह राज्य के समग्र विकास की नींव भी प्रदान करता है।

•••

अभिव्यक्ति

श्री शिवानंद
कनिष्ठ अनुवादक

इक आग बस जलती रही
ऊर्जित रहा जिससे तन मन,
इक नाद बस बजती रही
जिससे रहा मन मस्त मगन,

इक दीप स्मिति सा,
करता रहा हर क्षण प्रकाशित
इक वेदना थी छिपी कुछ,
जिससे रहा यह मन आह्लादित,

कुछ भाव निर्झर से थे निकले,
बह रहा जिससे नदी सा,
कुछ घाव अन्तर से थे गहरे
भर रहा जिससे सभी का,

कुछ मूल्य थे पुरखों के जिनसे,
डिगना भाता नहीं मन को,
हो जाए कुछ भी क्यों भले,
रण छोड़ना आता ना मुझको,

संघर्ष ज्यों बढ़ता रहा,
निर्विघ्न होता गया हर पथ,
टिक ना पाया सामने कुछ,
थे भले कितने ही नायक,

शूल जो भी आए पथ पर,
बन गए सब पुष्प खिलकर,
था काम जिनका बेधना,
वे भी प्रदर्शित करते हैं पथ,

जिस तरह से प्रकृति यह,
निस्वार्थ सब कुछ दे रही है,
कुछ काम आऊँ जग के भी,
यह कामना मेरी रही है ।

●●●

हिन्दी उन सभी गुणों से अलंकृत है जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में सभासीन हो सकती है।

– ***मैथिलीशरण गुप्त***

समृद्ध, सम्पन्न ओडिशा

श्री जावेद फिरोज
कनिष्ठ अनुवादक

भारत के पूर्वी तट पर स्थित ओडिशा राज्य जैव–विविधता की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। यहाँ के घने वन, विस्तृत तटीय क्षेत्र, नदियाँ, झीलें और पर्वतीय भूभाग अनेक प्रकार के वन्य जीवों के लिए आदर्श आवास प्रदान करते हैं। ओडिशा का वन्य जीवन न केवल राज्य की प्राकृतिक धरोहर है, बल्कि पर्यावरण संतुलन बनाए रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

ओडिशा का लगभग 33% क्षेत्र वनाच्छादित है। यहाँ उष्णकटिबंधीय आर्द्र एवं शुष्क पर्णपाती वन पाए जाते हैं। महानदी, ब्राह्मणी, बैतरणी और सुवर्णरेखा जैसी नदियाँ वन्य जीवों के लिए जल स्रोत उपलब्ध कराती हैं। तटीय क्षेत्र और दलदली भूमि विशेष रूप से पक्षियों और जलीय जीवों के लिए उपयुक्त हैं।

राष्ट्रीय उद्यान और अभयारण्य:

सिमलीपाल राष्ट्रीय उद्यान – मयूरभंज जिले में स्थित यह ओडिशा का सबसे बड़ा और प्रसिद्ध राष्ट्रीय उद्यान है, जो बाघ, हाथी, हिरण और अनेक पक्षियों का घर है। इस उद्यान का नाम "सेमल" या लाल कपास के पेड़ों से पड़ा, जो यहां बहुतायत में पाये जाते है। इसकी स्थापना वर्ष 1980 में की गई थी। यूनेस्को द्वारा 2012 में इस उद्यान को बायोस्फीयर रिज़र्व घोषित किया गया। यहां मौजूद बरेहीपानी जलप्रपात ओडिशा का सबसे उंचा और भारत की दूसरा सबसे उंचा जलप्रपात है। सिमलीपाल विश्व के कुछ चुनिंदा स्थानों में से है जहाँ मेलानिस्टिक (काले) बाघ पाए जाते हैं। यह भारत के सबसे बड़े साल वन क्षेत्रों में से एक है। ब्रिटिश काल में यह शिकार गाह के रूप में जाना जाता था, जिसे बाद में संरक्षण क्षेत्र बनाया गया।

भितरकनिका राष्ट्रीय उद्यान – यह उद्यान ओडिशा के केंद्रापाड़ा जिले में स्थित है। 1998 में इसे राष्ट्रीय उद्यान घोषित किया गया। भारत का दूसरा सबसे बड़ा मैंग्रोव वन क्षेत्र होने की वजह से यह अपने मैंग्रोव वनों के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ एशिया की सबसे बड़ी आबादियों में से एक खारे पानी के मगरमच्छ पाए जाते हैं। विश्व का सबसे बड़ा जीवित खारे पानी का मगरमच्छ (लगभग 23 फीट लंबा) यहीं दर्ज किया गया। 300 से अधिक पक्षियों की प्रजातियाँ (किंगफिशर, डार्टर, व्हाइट बेलीड सी ईगल) पायी जाती है। यह तटीय क्षेत्रों को चक्रवात और समुद्री कटाव से सुरक्षा प्रदान करता है। इसे "ओडिशा का अमेज़न" भी कहा जाता है।

चिल्का झील – चिल्का झील एशिया की सबसे बड़ी खारे पानी की लैगून झील है, यह प्रवासी पक्षियों के लिए विश्व प्रसिद्ध है। इसका क्षेत्रफल मानसून में 1,100 वर्ग किमी और ग्रीष्म ऋतु में 900 वर्ग किमी हो जाता है। 1981 में इसे रामसर साइट होने का दर्जा प्राप्त हुआ था। यह भारत की पहली रामसर साइट है। चिल्का को विशेष बनाता है मीठे/खारे मिश्रित जल में पाई जाने वाली इरावदी डॉल्फिन। सतपाड़ा डॉल्फिन देखने का मुख्य केंद्र है। यह झील सर्दियों में पक्षी प्रेमियों का स्वर्ग मानी जाती है। पक्षियों की विविध प्रकार की प्रजातियाँ पाई जाती है विशेषकर प्रवासी पक्षियों (साइबेरिया, मंगोलिया, मध्य एशिया से) की। यहाँ खारे एवं मीठे पानी की मछलियों की 150 से अधिक प्रजातियाँ पाई जाती है। झील के बीच में कालीजाई मंदिर स्थित है जो आस्था का एक प्रमुख स्थल है। चिल्का को "ओडिशा की जीवनरेखा" भी कहा जाता है।

गहिरमाथा समुद्री अभयारण्य – यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्राकृतिक संरक्षण क्षेत्र है। यह अभयारण्य मुख्यत: अपने विश्व–प्रसिद्ध ऑलिव रिडले समुद्री कछुओं के लिए

जाना जाता है। जैव विविधता और समुद्री जीवन के संरक्षण की दृष्टि से इसका स्थान न केवल भारत में, बल्कि पूरे विश्व में अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह ओडिशा के केंद्रापड़ा जिले में, बंगाल की खाड़ी के तट पर स्थित है और भितरकनिका राष्ट्रीय उद्यान के निकट फैला हुआ है। वर्ष 1997 में इसे औपचारिक रूप से समुद्री अभयारण्य घोषित किया गया था, जिससे यह भारत का पहला समुद्री अभयारण्य बना।

इस अभयारण्य की सबसे बड़ी विशेषता यहाँ होने वाली अरिबाड़ा की प्राकृतिक घटना है। अरिबाड़ा वह प्रक्रिया है जिसमें हजारों की संख्या में ऑलिव रिडले कछुए एक साथ समुद्र तट पर आकर अंडे देते हैं। हर वर्ष जनवरी से फरवरी के बीच यह दृश्य देखने को मिलता है, जो प्रकृति का एक अद्भुत चमत्कार माना जाता है।

सतकोसिया गॉर्ज अभयारण्य

ओडिशा राज्य का एक प्रमुख वन्यजीव अभयारण्य है। यह महानदी नदी द्वारा निर्मित भव्य सतकोसिया घाटी (गॉर्ज) के आसपास फैला हुआ है। घने साल, सागौन और मिश्रित पर्णपाती वन से समृद्ध है। बाघ, तेंदुआ, हाथी, सांभर, चीतल, घड़ियाल, मगरमच्छ एवं अनेक पक्षी प्रजातियाँ (ईगल, किंगफिशर आदि) का घर तथा सतकोसिया टाइगर रिज़र्व का हिस्सा भी है। यह घड़ियाल संरक्षण के लिए प्रसिद्ध तथा जैव विविधता का महत्वपूर्ण केंद्र है।

ओडिशा भारत के उन राज्यों में से एक है जो प्राकृतिक संसाधनों से अत्यंत समृद्ध है। यहाँ खनिज, वन, जल, समुद्री संसाधन और उपजाऊ भूमि प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। ये संसाधन राज्य की अर्थव्यवस्था, उद्योग, कृषि और जनजीवन का आधार हैं। प्राकृतिक संसाधनों की विविधता के कारण ओडिशा को भारत के प्रमुख संसाधन-सम्पन्न राज्यों में गिना जाता है।

खनिज संसाधन

ओडिशा भारत के खनिज संसाधनों से समृद्ध राज्यों में एक प्रमुख स्थान रखता है। राज्य की भौगोलिक संरचना प्राचीन पठारी क्षेत्र से बनी है, जिसके कारण यहाँ विभिन्न प्रकार के खनिज प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। ओडिशा की अर्थव्यवस्था के विकास में खनिज संपदा की महत्वपूर्ण भूमिका है।

ओडिशा लौह अयस्क उत्पादन में भारत के अग्रणी राज्यों में से एक है। क्योंझर, सुंदरगढ़ और मयूरभंज जिलों में उच्च गुणवत्ता का लौह अयस्क पाया जाता है। इसके अलावा यहाँ बॉक्साइट, कोयला, मैंगनीज, क्रोमाइट और चूना पत्थर जैसे महत्वपूर्ण खनिज भी उपलब्ध हैं। विशेष रूप से, सुकिंदा घाटी विश्व के प्रमुख क्रोमाइट उत्पादक क्षेत्रों में गिनी जाती है।

राज्य में उपलब्ध खनिज संसाधनों के कारण अनेक लौह-इस्पात उद्योग, ऊर्जा संयंत्र और खनिज आधारित कारखाने स्थापित हुए हैं, जिससे रोजगार के अवसर बढ़े हैं और औद्योगिक विकास को गति मिली है। परंतु, खनन गतिविधियों से पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव भी पड़ता है, जैसे वन क्षरण और जल प्रदूषण।

अत: यह आवश्यक है कि ओडिशा की खनिज संपदा का उपयोग सतत विकास के सिद्धांतों के अनुसार किया जाए, ताकि आर्थिक विकास के साथ-साथ पर्यावरण संतुलन भी बना रहे और भविष्य की पीढ़ियों के लिए संसाधनों का संरक्षण सुनिश्चित हो सके।

वन संसाधन

ओडिशा का लगभग एक-तिहाई क्षेत्र वनों से आच्छादित है। यहाँ मुख्यत: उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन पाए जाते हैं। ओडिशा अपने समृद्ध वन संसाधनों के लिए प्रसिद्ध है। राज्य में घने जंगल, पहाड़ियाँ और नदी घाटियाँ हैं, जिनमें सागौन, साल, सियाल जैसी वनों की प्रजातियाँ पाई जाती हैं। सिमलीपाल, सतकोसिया और भितरकनिका जैसे अभयारण्य वन्य जीवन और जैव विविधता के संरक्षण में महत्वपूर्ण हैं। यहाँ हाथी, बाघ, तेंदुआ, सांभर, मगरमच्छ और अनेक पक्षी प्रजातियाँ पाए जाते हैं। वन केवल लकड़ी और औषधीय वनस्पतियों का स्रोत नहीं हैं, बल्कि पर्यावरण संतुलन, जल संरक्षण और जलवायु नियंत्रण में भी सहायक हैं। ओडिशा के वन संसाधन राज्य की प्राकृतिक धरोहर हैं।

जल संसाधन

ओडिशा जल संसाधनों से समृद्ध राज्य है। यहाँ महानदी, ब्रह्मणी, बाँध, भद्रक, कोसी जैसी कई प्रमुख नदियाँ बहती हैं।

राज्य में तालाब, झीलें और जलाशय भी प्रचुर मात्रा में हैं। चिल्का झील और बालासोर का समुद्री तट मछली पालन और पर्यटन के लिए महत्वपूर्ण हैं। ओडिशा के नदी तट और जलाशय सिंचाई, बिजली उत्पादन और जैव विविधता संरक्षण में मदद करते हैं। सही प्रबंधन से ये संसाधन राज्य की आर्थिक और पर्यावरणीय समृद्धि सुनिश्चित कर सकते हैं।

समुद्री और तटीय संसाधन

ओडिशा का लगभग 480 किलोमीटर का तटीय क्षेत्र राज्य के समुद्री और तटीय संसाधनों से समृद्ध है। यहाँ गहिरमाथा, ऋशिकुल्या और भितरकनिका जैसे समुद्री और मैंग्रोव क्षेत्र हैं। ये तट मछली पकड़ने, ऑलिव रिडले कछुओं के संरक्षण और जैव विविधता के लिए महत्वपूर्ण हैं। चिल्का झील मछली पालन और प्रवासी पक्षियों के लिए प्रसिद्ध है। तटीय जल कृषि, पर्यटन और नौवहन में योगदान देते हैं। ओडिशा के समुद्री और तटीय संसाधन न केवल आर्थिक समृद्धि का आधार हैं, बल्कि पारिस्थितिकी और जैव विविधता के संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

कृषि एवं भूमि संसाधन

ओडिशा के कृषि और भूमि संसाधन राज्य की आर्थिक विकास की रीढ़ हैं। यहाँ की मिट्टी उपजाऊ है जिसमें, गेहूं, मक्का, दलहन, तिलहन जैसी फसलें उगाई जाती हैं। महानदी और उसकी सहायक नदियाँ सिंचाई के लिए महत्वपूर्ण हैं। राज्य में भूमि का बड़ा हिस्सा कृषि योग्य है, जिससे ग्रामीण रोजगार और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित होती है। सतत कृषि और भूमि प्रबंधन से ओडिशा न केवल अपनी खाद्य आवश्यकताओं को पूरा करता है, बल्कि प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में भी योगदान देता है।

ऊर्जा संसाधन

ओडिशा ऊर्जा संसाधनों में समृद्ध राज्य है। यहाँ कोयला, प्राकृतिक गैस, जल, सौर और पवन ऊर्जा उपलब्ध हैं। कोयला खदानें झारसुगुड़ा और अंगुल में प्रमुख हैं, जो थर्मल पावर प्लांटों को ईंधन देती हैं। महानदी और उसकी सहायक नदियाँ जलविद्युत उत्पादन में उपयोग होती हैं। राज्य में सौर और पवन ऊर्जा के विकास की भी क्षमता है। ऊर्जा संसाधन उद्योग, कृषि और घरेलू उपयोग के लिए आवश्यक हैं। सतत और पर्यावरण अनुकूल ऊर्जा उत्पादन से ओडिशा की आर्थिक वृद्धि और प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण सुनिश्चित किया जा सकता है।

ओडिशा का वन्य जीवन एवं प्राकृतिक संसाधन राज्य की सबसे बड़ी शक्ति एवं राज्य की प्राकृतिक संपदा का अमूल्य हिस्सा है। यहाँ की जैव-विविधता न केवल पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखती है, बल्कि पर्यटन और अनुसंधान के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। वन्य जीवों का संरक्षण करना हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ भी इस प्राकृतिक धरोहर का आनंद ले सकें। ये संसाधन न केवल आर्थिक विकास का आधार हैं, बल्कि जनजीवन और पर्यावरण संतुलन के लिए भी अनिवार्य हैं। इनका संरक्षण और सतत उपयोग करके ही ओडिशा समृद्ध और सुरक्षित भविष्य की ओर बढ़ सकता है।

•••

मैं हिंदी का प्रेमी हूँ। सांस्कृतिक जीवन में हिंदी के महत्व को भली-भांति समझता हूँ।
भारतीय एकता का मुख्य साधन हिंदी बन चुकी है।

- डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी

सिमलीपाल की गोद में : ओडिशा की प्राकृतिक धरोहर

श्री गौरव यादव
सहायक लेखा अधिकारी

ओडिशा की धरती सदियों से अपनी प्राकृतिक संपदा, सांस्कृतिक विविधता और लोकजीवन के लिए जानी जाती है। यहाँ की नदियाँ, जंगल, खनिज और वन्यजीव न केवल राज्य की पहचान हैं, बल्कि भारत की जैव विविधता का भी महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। जब मैंने सिमलीपाल राष्ट्रीय उद्यान की यात्रा की, तो यह केवल एक पर्यटन यात्रा नहीं थी, बल्कि प्रकृति के साथ एक गहन संवाद था। इस यात्रा ने मुझे ओडिशा की प्राकृतिक धरोहर को नए दृष्टिकोण से देखने का अवसर दिया।

भुवनेश्वर से निकलते समय मेरे मन में उत्सुकता और रोमांच का मिश्रण था। ट्रेन और फिर सड़क मार्ग से जब हम मयूरभंज जिले की ओर बढ़े, तो धीरे-धीरे शहरी हलचल पीछे छूटती गई और सामने फैले हरे-भरे जंगलों ने मन को शांति दी। रास्ते में गाँवों के दृश्य, खेतों में काम करते किसान, और बच्चों की खिलखिलाती आवाजें इस यात्रा को और भी जीवंत बना रही थीं। सड़क के दोनों ओर फैले साल और सागौन के वृक्ष मानो स्वागत कर रहे हों। हवा में मिट्टी और पत्तों की गंध थी, जो शहरों में शायद ही महसूस होती है।

राष्ट्रीय उद्यान के प्रवेश द्वार पर पहुँचते ही एक अलग ही संसार सामने था। यहाँ का वातावरण इतना शांत और निर्मल था कि लगता था जैसे समय थम गया हो। पक्षियों की चहचहाहट, झरनों की कलकल ध्वनि और हवा की सरसराहट मिलकर एक अद्भुत संगीत रच रहे थे।

जैसे ही मैंने उद्यान के भीतर कदम रखा, मुझे लगा कि मैं किसी जीवंत संग्रहालय में प्रवेश कर रहा हूँ। हर पेड़, हर झाड़ी, हर पत्थर अपनी कहानी कह रहा था। सिमलीपाल का जंगल घना और रहस्यमय है। यहाँ चलते हुए कभी-कभी सूरज की किरणें भी मुश्किल से जमीन तक पहुँच पाती हैं। मैंने देखा कि कैसे छोटे-छोटे पौधे बड़े वृक्षों की छाया में भी जीवन तलाश लेते हैं।

जंगल में चलते हुए अचानक हिरणों का एक झुंड सामने आया। उनकी आँखों में जिज्ञासा थी, परंतु वे सतर्क भी थे। थोड़ी ही देर में वे झाड़ियों में गायब हो गए। यह दृश्य मुझे यह सोचने पर मजबूर कर गया कि जंगल का हर जीव अपने अस्तित्व की रक्षा में कितना सजग है।

ओडिशा की धरती खनिजों से भरपूर है। लौह अयस्क, बॉक्साइट, कोयला और क्रोमाइट यहाँ की पहचान हैं। जब मैंने सिमलीपाल की पहाड़ियों में घूमते हुए लाल मिट्टी और पत्थरों को देखा, तो मुझे यह एहसास हुआ कि यह केवल जंगल नहीं है, बल्कि धरती का खजाना भी है। हर पत्थर, हर चट्टान अपने भीतर खनिजों की कहानी छिपाए हुए है। सिमलीपाल और इसके आसपास का क्षेत्र लौह अयस्क के लिए जाना जाता है। यहाँ की लाल मिट्टी और पहाड़ी संरचना में लौह अयस्क की प्रचुरता है। यह खनिज ओडिशा के इस हिस्से को औद्योगिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण बनाता है। लौह अयस्क का उपयोग इस्पात निर्माण में होता है, और यही कारण है कि ओडिशा भारत के प्रमुख इस्पात उत्पादक राज्यों में गिना जाता है। ओडिशा भारत में क्रोमाइट का भी सबसे बड़ा उत्पादक है,

और सिमलीपाल क्षेत्र में भी इसकी उपस्थिति दर्ज की गई है। क्रोमाइट का उपयोग स्टेनलेस स्टील और अन्य मिश्र धातुओं के निर्माण में होता है। यह खनिज आधुनिक उद्योगों के लिए अत्यंत आवश्यक है। सिमलीपाल की पहाड़ियों में क्रोमाइट की परतें प्राकृतिक रूप से मौजूद हैं। यह खनिज यहाँ की भूगर्भीय संरचना को विशेष बनाता है। सिमलीपाल के आसपास बॉक्साइट की भी उपस्थिति है। बॉक्साइट से एल्यूमिनियम तैयार किया जाता है, जो आधुनिक जीवन में हर जगह उपयोग होता है चाहे वह परिवहन हो, निर्माण हो या घरेलू उपकरण। हालाँकि सिमलीपाल के भीतर कोयले की खदानें नहीं हैं, लेकिन इसके आसपास के क्षेत्रों में कोयले की उपस्थिति दर्ज की गई है। कोयला ऊर्जा का प्रमुख स्रोत है और ओडिशा की औद्योगिक गतिविधियों में इसका बड़ा योगदान है। खनिजों का दोहन यदि अनियंत्रित रूप से किया जाए, तो यह जंगल की पारिस्थितिकी को नुकसान पहुँचा सकता है। इसलिए सरकार और स्थानीय प्रशासन यहाँ खनिज उत्खनन पर सख्त नियंत्रण रखते हैं।

सिमलीपाल में खनिजों से अधिक महत्वपूर्ण हैं यहाँ की जंगल और नदियाँ। यहाँ के जंगलों में साल, सागौन, महुआ और बाँस प्रमुख हैं। महुआ के फूलों से ग्रामीण शराब बनाते हैं, बाँस से घर और उपकरण तैयार होते हैं। साल की लकड़ी मजबूत होती है, जिसका उपयोग निर्माण में होता है। नदियाँ जैसे ब्राह्मणी, बंसधारा और महानदी राज्य को जीवन देती हैं। सिमलीपाल में बहने वाली छोटी-छोटी धाराएँ इन बड़ी नदियों की सहायक हैं। सिमलीपाल में कई खूबसूरत झरने हैं। उनमें से बरेहीपानी और जोरांदा झरने सबसे प्रसिद्ध हैं। बरेहीपानी झरना भारत का दूसरा सबसे ऊँचा झरना है। जब मैंने उसे देखा, तो लगा जैसे आकाश से दूध की धाराएँ गिर रही हों।

सिमलीपाल राष्ट्रीय उद्यान एशियाई हाथियों और बाघों के लिए प्रसिद्ध है। मैंने जंगल में हाथियों के पदचिह्न देखे। गाइड ने बताया कि यहाँ हाथियों के बड़े-बड़े झुंड विचरण करते हैं। बाघों की उपस्थिति का एहसास तो हर जगह था। हालांकि मैंने उन्हें प्रत्यक्ष नहीं देखा, लेकिन जंगल की खामोशी और गाइड की कहानियाँ यह बताने के लिए पर्याप्त थीं कि वे यहाँ के असली राजा हैं। इसके अलावा गौर (भारतीय बाइसन), काले हिरण, चीतल और अनेक पक्षी प्रजातियाँ यहाँ पाई जाती हैं। मोर अपने पंख फैलाकर नृत्य करते हुए दिखे। हॉर्नबिल की आवाज दूर से सुनाई दी।

इस यात्रा ने मुझे यह एहसास कराया कि प्रकृति केवल देखने की वस्तु नहीं है, बल्कि जीवन का आधार है। जब मैंने जंगल की गहराई में बैठकर पक्षियों की आवाज सुनी, तो लगा जैसे वे मुझे कुछ कह रहे हों। मैंने महसूस किया कि मनुष्य और प्रकृति का संबंध कितना गहरा है। यदि हम प्रकृति का सम्मान करें, तो वह हमें जीवन देती है। लेकिन यदि हम उसका दोहन करें, तो वह हमें चेतावनी भी देती है।

सिमलीपाल केवल एक राष्ट्रीय उद्यान नहीं है, बल्कि ओडिशा की आत्मा है। यहाँ की जैव विविधता, प्राकृतिक संसाधन और सांस्कृतिक महत्व इसे अद्वितीय बनाते हैं। ओडिशा के लोग प्रकृति के साथ सामंजस्य में जीते हैं। उनके त्योहार, गीत और नृत्य प्रकृति से जुड़े हैं। महुआ के फूल, बाँस से बने घर और जंगल से प्राप्त औषधियाँ उनके जीवन का हिस्सा हैं। सिमलीपाल की यात्रा मेरे लिए एक आत्मिक अनुभव थी। इसने मुझे यह सिखाया कि विकास और संरक्षण साथ-साथ चलने चाहिए। यदि हम प्रकृति का सम्मान करेंगे, तो आने वाली पीढ़ियाँ भी इसकी सुंदरता का आनंद ले सकेंगी।

•••

ओडिशा के वन्यजीव एवं प्राकृतिक संसाधन

श्री आलोक कुमार मौर्य
सहायक लेखा अधिकारी

"घन, वन, भूमि रचित अंगे,
नील, भूधर-माला साजे तरंगे,
कल-कल मुखरित चारु विहंगे।
जननी, जननी, जननी।।"

सुप्रसिद्ध कवि लक्ष्मीकांत महापात्र अपनी ओड़िया कविता "वंदे उत्कल जननी" में ओडिशा के प्राकृतिक संसाधनों एवं वन्य जीवन का सजीव वर्णन करते हुए कहते हैं कि ओडिशा का शरीर मानो समुद्र द्वारा धोया गया है। इसके तट ताड़ और तमाल के वृक्षों से सुशोभित हैं और यहाँ की नदियाँ स्वच्छ हैं, जिनके किनारे शीतल हवाएँ बहती हैं। इसी प्रकार, अगली पंक्तियों में वे ओडिशा की पर्वतमालाओं, वनों, पशुओं और पक्षियों का सुंदर चित्रण करते हैं।

ओडिशा, जो भारत के पूर्वी तट पर स्थित है और जिसे भूतकाल में "कलिंग" के नाम से जाना जाता था, अपनी प्राकृतिक संपदा के लिए प्रसिद्ध है। ओडिशा के प्राकृतिक संसाधनों और वन्य जीवन को ओडिशा पर्यटन की टैगलाइन- "भारत का सबसे अच्छा छिपा हुआ रहस्य" (India's Best Kept Secret)" भली-भांति चरितार्थ करती है।

प्राकृतिक संसाधनों में ओडिशा की नदियाँ सबसे महत्वपूर्ण हैं। ये नदियाँ राज्य की धमनियों की तरह कार्य करती हैं। महानदी को ओडिशा की "जीवन रेखा" कहा जाता है। शिवनाथ, हसदेव, मांड और ईब (बाईं ओर) तथा ओंग, तेल और जोंक (दाईं ओर) इसकी प्रमुख सहायक नदियाँ हैं। काठजोड़ी, बिरूपा, पाइका, चित्रोत्पला, कुआखाई और दया नदी इसकी प्रमुख वितरिकाएँ हैं। इसके अतिरिक्त ब्राह्मणी, वैतरणी, ऋषिकुल्या और सुवर्णरेखा राज्य की अन्य प्रमुख नदियाँ हैं।

इन नदियों को नियंत्रित करने और उनके जल के सदुपयोग (सिंचाई और बिजली उत्पादन) के लिए कई बाँध बनाए गए हैं। महानदी पर बना हीराकुंड बाँध दुनिया के सबसे लंबे मिट्टी के बाँधों में से एक है। रेंगली और कोलाब बाँध कुछ अन्य प्रमुख परियोजनाएँ हैं। ये नदियाँ और इनकी वितरिकाएँ समुद्र में मिलने से पहले डेल्टा बनाती हैं, जो चावल के उत्पादन के लिए अत्यंत उपजाऊ और उपयुक्त होता है।

ओडिशा के प्रचुर जल संसाधनों में चिल्का झील का विशेष स्थान है, जो एशिया की सबसे बड़ी खारे पानी की झील है। यहाँ दुर्लभ इरावदी डॉल्फिन (Irrawaddy Dolphin) देखी जा सकती हैं। सर्दियों में यहाँ साइबेरिया और ईरान जैसे दूरस्थ स्थानों से लाखों प्रवासी पक्षी आते हैं। 'नलबाणा पक्षी अभयारण्य" इस झील का मुख्य आकर्षण है।

ओडिशा भारत के खनिज संसाधनों में अत्यंत समृद्ध राज्य है। यहाँ लौह अयस्क (Iron Ore) का विशाल भंडार है, जो भारत के कुल भंडार का लगभग 33% है। इसके प्रमुख खनन क्षेत्र क्योंझर, सुंदरगढ़ और मयूरभंज जिलों में स्थित हैं। बॉक्साइट (Bauxite) के मामले में राज्य की स्थिति और भी मजबूत है, जहाँ देश का लगभग 50% भंडार कोरापुट, रायगड़ा और कालाहांडी क्षेत्रों में पाया जाता है।

ऊर्जा संसाधनों की बात करें तो, कोयला (Coal) भी यहाँ प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है; भारत के कुल कोयला भंडार का लगभग 24% हिस्सा यहाँ है, जो मुख्य रूप से तालचेर (अनुगुल) और इब घाटी (झारसुगुड़ा) में केंद्रित है। सबसे विशेष स्थिति क्रोमाइट (Chromite) की है, जिसमें राज्य का लगभग एकाधिकार है। भारत का 95% क्रोमाइट भंडार यहीं स्थित है, जो मुख्य रूप से जाजपुर की सुकिंदा घाटी में पाया जाता है। इन संसाधनों के कारण ओडिशा भारत में इस्पात (Steel) और एल्युमीनियम उत्पादन का केंद्र बन गया है, जिसका एक उत्कृष्ट उदाहरण राउरकेला स्टील प्लांट है।

ओडिशा में वन्यजीव संरक्षण के लिए कई वन्यजीव

अभयारण्य और राष्ट्रीय उद्यान बनाए गए हैं। यहाँ की जैव-विविधता इसे भारत के अन्य राज्यों से अलग बनाती है, जहाँ बाघों से लेकर दुर्लभ समुद्री कछुओं तक का वास है।

1. **सिमलीपाल राष्ट्रीय उद्यान:** प्रमुख राष्ट्रीय उद्यानों में सिमलीपाल का नाम सर्वप्रथम आता है। यह मयूरभंज जिले में स्थित है और भारत के सबसे पुराने टाइगर रिजर्व में से एक है। यह "मैदानी बाघों" (Plain Tigers) और दुर्लभ "ब्लैक टाइगर" (Melanistic Tigers) के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ हाथी, गौर (भारतीय बाइसन) और पक्षियों की 300 से अधिक प्रजातियाँ पाई जाती हैं।
2. **भीतरकनिका राष्ट्रीय उद्यान:** सिमलीपाल के बाद, केंद्रपाड़ा जिले में स्थित भीतरकनिका राष्ट्रीय उद्यान भारत का दूसरा सबसे बड़ा मैंग्रोव पारिस्थितिकी तंत्र (सुंदरवन के बाद) है। यह विशाल 'खारे पानी के मगरमच्छों' का घर है और इसे रामसर साइट (Ramsar Site) के रूप में भी मान्यता प्राप्त है। ब्राह्मणी और वैतरणी नदियाँ इस उद्यान के बीच से गुजरती हैं।
3. **गहिरमाथा समुद्री अभयारण्य:** इसी क्रम में गहिरमाथा विश्व का सबसे बड़ा ओलिव रिडले समुद्री कछुओं (Olive Ridley Turtles) का प्रजनन स्थल है। हर साल लाखों कछुए यहाँ अंडे देने (Arribada) के लिए आते हैं।

ओडिशा के प्राकृतिक संसाधनों में यहाँ की पर्वतमालाएँ चार चाँद लगाती हैं। महेंद्रगिरी, जो पूर्वी घाट की बड़ी पहाड़ियों में से एक है, और देवमाली, जो ओडिशा की सबसे ऊँची पहाड़ी है (कोरापुट जिले में स्थित), पर्यटन के प्रमुख केंद्र हैं।

ओडिशा के प्राकृतिक संसाधनों और वन्य जीवन के कारण यहाँ पर्यटन की असीमित संभावनाएँ हैं। यहाँ की मनोरम पहाड़ियाँ, समुद्र तट, झीलें और राष्ट्रीय अभयारण्य पर्यटकों के प्रमुख आकर्षण हैं। पुरी के "गोल्डन बीच" और कोणार्क के "चंद्रभागा बीच" पर लोग समुद्र की लहरों का आनंद लेते हैं। कोरापुट की पहाड़ियाँ और दरिंगबाड़ी (जिसे "ओडिशा का कश्मीर" भी कहा जाता है) यहाँ की तीक्ष्ण गर्मी से राहत प्रदान करती हैं तथा वहाँ से मनोरम दृश्य देखे जा सकते हैं। नंदनकानन वन्यजीव अभयारण्य में विभिन्न प्रकार के जीव-जंतु देखे जा सकते हैं। यहाँ का प्रमुख आकर्षण "सफेद बाघ" है, जो मुख्य रूप से इसी अभयारण्य में पाया जाता है।

वर्तमान में ओडिशा के प्राकृतिक संसाधनों एवं वन्य जीवन को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। खनिज उत्खनन के कारण वनों की कटाई और वन्यजीवों के आवास का विनाश एक बड़ी समस्या है। खनिज संसाधनों से इतना परिपूर्ण होने के बावजूद ओडिशा भारत के गरीब राज्यों में से एक है। इसके लिए एक लोकोक्ति यहाँ सही चरितार्थ होती है "दीपक तले अँधेरा।"

इसके अलावा, वनों की कटाई और कृषि के लिए जंगलों के अतिक्रमण से यहाँ "मानव और वन्यजीव संघर्ष" बढ़ रहा है। जंगलों के कम होने से हाथी, तेंदुए तथा अन्य जंगली जानवर अक्सर गाँवों की ओर रुख करते हैं, जिससे जन-धन की हानि होती है। ग्लोबल वार्मिंग के कारण समुद्र का जलस्तर बढ़ रहा है, जिससे तटीय इलाकों में जीवन अस्त-व्यस्त हो सकता है। जलवायु परिवर्तन के कारण अकस्मात और तेज चक्रवात काफी निरंतरता से आ रहे हैं, जिनसे निपटना सरकारी तंत्र के लिए कठिन होता जा रहा है।

प्रकृति की इस अनमोल विरासत को बचाने के लिए ओडिशा सरकार और केंद्र सरकार कई परियोजनाएँ चला रही हैं। जैसे हाथियों और बाघों के संरक्षण के लिए "प्रोजेक्ट टाइगर" और "प्रोजेक्ट एलीफेंट"। पर्यटन को बढ़ावा देने और स्थानीय समुदायों को शामिल करने के लिए सिमलीपाल, सतकोसिया और चिल्का में "इको-टूरिज्म" को प्रोत्साहित किया जा रहा है। ओडिशा के प्राकृतिक संसाधनों एवं जीवों को बचाने के लिए सरकार प्रतिबद्धता से काम कर रही है।

ओडिशा की धरती केवल खनिजों की खान नहीं है, बल्कि यह प्रकृति के विविध रूपों का एक जीवंत संग्रहालय है। यहाँ के गहरे-घने जंगल, कलकल करती नदियाँ और शांत समुद्र तट न केवल राज्य की सुंदरता बढ़ाते हैं, बल्कि भारत की पारिस्थितिक सुरक्षा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन बनाना ही ओडिशा के इन प्राकृतिक संसाधनों को भविष्य की पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखने का एकमात्र मार्ग है।

●●●

ओडिशा : प्रकृति का एक अद्भुत वरदान

श्री तुषार कांति साहा
सहायक लेखा अधिकारी

ओडिशा भारत के पूर्वी तट पर बंगाल की खाड़ी के किनारे स्थित एक ऐसा राज्य है, जिसे प्रकृति ने असाधारण रूप से समृद्ध बनाया है। घने वन, विविध वन्यजीव, विशाल खनिज भंडार, लंबी समुद्र तट रेखा, नदियों का जाल, झीलें, पर्वतीय क्षेत्र और समृद्ध आदिवासी संस्कृति-ये सभी तत्व मिलकर ओडिशा को भारत के सबसे महत्वपूर्ण प्राकृतिक राज्यों में शामिल करते हैं। ओडिशा का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल लगभग 1,55,707 वर्ग किलोमीटर है, जो भारत के कुल क्षेत्रफल का लगभग 4.7 प्रतिशत है। ओडिशा राज्य की समुद्री तटरेखा 480 किलोमीटर लंबी है, जो इसे समृद्ध समुद्री संसाधन प्रदान करती है। ओडिशा के लगभग 33 से 34 प्रतिशत भू-भाग पर वन फैले हुए हैं, जिनका कुल क्षेत्रफल लगभग 52000 वर्ग किलोमीटर है। यही वन, राज्य की जैव विविधता और अन्य वन्यजीव संरक्षण का आधार हैं। ओडिशा के प्राकृतिक संसाधन न केवल पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखते हैं, अपितु राज्य की अर्थव्यवस्था, ग्रामीण आजीविका, औद्योगिक विकास और सांस्कृतिक पहचान का भी मूल आधार है।

ओडिशा की प्राकृतिक समृद्धि का मुख्य कारण इसकी भौगोलिक विविधता है। राज्य को मोटे तौर पर चार प्राकृतिक भागों में बांटा जा सकता है-तटीय मैदान, मध्यवर्ती नदी बेसिन, पूर्वी घाट का पर्वतीय क्षेत्र और उत्तरी पठार। तटीय क्षेत्र में समुद्र तट, मुहाने, लैगून, दलदली भूमि और मैंग्रोव वन पाए जाते हैं। चिलिका झील एशिया की सबसे बड़ी खारे पानी की झील है और यह जैव विविधता की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। मध्य भाग में महानदी, ब्राह्मणी और बैतरणी जैसी नदियाँ बहती है, जो कृषि और मानव को सहारा देती है। दक्षिण और पश्चिमी भाग में स्थित पूर्वी घाट क्षेत्र घने वनों, पहाड़ियों और आदिवासी बहुल इलाके के लिए प्रसिद्ध है। उत्तरी पठारी भाग खनिज संपदा और साल वनों के लिए जाना जाता है। इन सभी क्षेत्रों के कारण ओडिशा में उष्ण कटिबंधिय आर्द्र पर्णपाती वन, शुष्क पर्णपाती वन, अर्ध सदाबहार वन, मैंग्रोव पारिस्थितिकी तंत्र, आर्द्रभूमि और समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र विकसित हुए हैं।

ओडिशा अपनी इन विविध पारिस्थितिक प्रणालियों के कारण समृद्ध वन्यजीवन से संपन्न है। ओडिशा के वनों में 102 प्रकार के दुर्लभ और महत्वपूर्ण स्तनधारियों की प्रजातियाँ पाई जाती हैं। यहाँ रॉयल बंगाल टाइगर, एशियाई हाथी, तेंदुआ, भालू, गौर (भारतीय बायसन), जंगली कुत्ता, सांभर, चीतल, बार्किंग डियर, जंगली सूअर और पेंगोलिन जैसे जीव मिलते हैं। ओडिशा पूर्वी भारत के प्रमुख हाथी आवास क्षेत्रों में से एक है। यहाँ एशियाई हाथियों की संख्या लगभग 2000 से अधिक मानी जाती है। मयूरभंज, क्योंझर, अंगुल और सुंदरगढ़ जिले हाथियों के प्रमुख क्षेत्र हैं।

यह राज्य अनेक प्रकार के स्थानीय और प्रवासी पक्षियों का महत्वपूर्ण आवास है, जिससे ओडिशा को पक्षी प्रेमियों और पक्षी पर्यवेक्षकों के लिए स्वर्ग माना जाता है। यहाँ लगभग 450 से अधिक पक्षी प्रजातियाँ पाई जाती हैं। चिलिका झील और भीतरकनिका जैसे आर्द्रभूमि दक्षिण एशिया के सबसे बड़े प्रवासी पक्षी आवासों में से एक है। हर वर्ष लगभग 10 से 12 लाख प्रवासी पक्षी सर्दियों में साइबेरिया, रूस और मध्य एशिया से यहाँ आते हैं। फ्लेमिंगो, पेलिकन, बत्तख, बगुले, सारस, किंगफिशर और समुद्री चील यहाँ आमतौर पर देखे जा सकते हैं। चिलिका की नलबाना द्वीप को 1987 में पक्षी अभयारण्य घोषित किया गया था।

सरीसृपों और उभरचरों की दृष्टि से ओडिशा भारत में एक विशिष्ट स्थान रखता है। यहाँ लगभग 132 सरीसृप प्रजातियाँ

और 26 उभयचर प्रजातियाँ पाई जाती हैं। ओडिशा भारतवर्ष में एकमात्र ऐसा राज्य है जहाँ मगरमच्छों की तीन प्रजातियाँ – खारे पानी का मगरमच्छ, मगर (मगरमच्छ) और घड़ियाल पाई जाती है। इसके अतिरिक्त यहाँ विभिन्न प्रकार से साँप, छिपकलियाँ, कछुए एवं मेढक भी पाए जाते हैं। ओडिशा का समुद्री तट विश्व प्रसिद्ध ऑलिव रिडले समुद्री कछुओं के सामूहिक अंडे देने के लिए भी जाना जाता है। गंजाम जिले में स्थित ऋषिकुल्या रूकेरी विश्व के सबसे बड़े कछुआ प्रजनन स्थलों में से एक है और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संरक्षण की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

ओडिशा में 811 से अधिक प्रजातियों की मछलियाँ पाई जाती हैं। यहाँ की नदियों, झीलों और तटीय जल में डॉलफिन, कछुए, केकड़े और सैकड़ों प्रकार की मछलियाँ पाई जाती है। यहाँ का तटीय क्षेत्र सामुद्रिक मत्स्य उद्योग, झींगा उत्पादन, नमक उद्योग और बंदरगाह विकास के लिए महत्वपूर्ण है। चिलिका झील अपनी मत्स्य विविधता के लिए संपूर्ण भारतवर्ष में प्रसिद्ध है और साथ ही यह हजारों मछुआरों की आजीविका का स्रोत भी है।

इन अमूल्य वन्यजीव संपदाओं की रक्षा के लिए ओडिशा सरकार ने संरक्षित क्षेत्रों का एक व्यापक नेटवर्क विकसित किया है। राज्य में वन्यजीवों के इन सीटू संरक्षण (प्राकृतिक आवास में संरक्षण) के उद्देश्य से 19 वन्यजीव अभ्यारण्य, दो राष्ट्रीय उद्यान – भीतरकनिका राष्ट्रीय उद्यान एवं सिमलीपाल राष्ट्रीय उद्यान, दो संरक्षण आरक्षित क्षेत्र – सिमलीपाल–हड़गढ़–कुलडिहा संरक्षण आरक्षित क्षेत्र तथा ब्रूटांग संरक्षण आरक्षित क्षेत्र, दो बाघ अभयारण्य– सिमलीपाल टाइगर रिजर्व और सतकोसिया टाइगर रिजर्व, तीन हाथी अभयारण्य–मयूरभंज, महानदी एवं संबलपुर हाथी अभयारण्य तथा एक जैव मंडल आरक्षित क्षेत्र–सिमलीपाल बायोस्फियर रिजर्व अधिसूचित हैं। राज्य में वन्यजीवों के एक्स सीटू संरक्षण (प्राकृतिक आवास के बाहर संरक्षण) हेतु कुल 10 चिड़ियाघर स्थापित हैं। जैसे –सतकोसिया/टिकरपाड़ा में घड़ियाल, भितरकनिका/डांगमल में खारे पानी का मगरमच्छ, सिमलीपाल/रामतीर्थ में मगर तथा नंदनकानन प्राणी उद्यान में भारत की तीनों मगरमच्छ प्रजातियों का बंदी प्रजनन कार्यक्रम।

रॉयल बंगाल टाइगर और भारतीय हाथी ओडिशा में पाए जाने वाले सबसे प्रमुख और संकटग्रस्त जीवों में से हैं। हालांकि, राज्य के वन्यजीव आज आवास विनाश, अवैध शिकार, अवैध वन्यजीव व्यापार और मानव वन्यजीव संघर्ष जैसी गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। इन चुनौतियों से निपटने के लिए वन विभाग आधुनिक तकनीकों जैसे कृत्रिम बुद्धिमता (AI), डीप लर्निंग, कैमरा ट्रैप, ड्रोन और सैटेलाइट निगरानी प्रणालियों का उपयोग करके शिकार रोकी गतिविधियों को मजबूत कर रहा है और वन्यजीव अपराधों पर नियंत्रण का प्रयास कर रहा है। वन्यजीव संरक्षण केवल सरकार की ही नहीं, बल्कि पूरे समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है। जन–जागरूकता, स्थानीय समुदायों की भागीदारी, सतत विकास नीतियाँ और पर्यावरणीय कानूनों का कड़ाई से पालन ही यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि ओडिशा की समृद्ध वन्यजीव धरोहर आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रह सके।

•••

हिंदी भाषा एक ऐसी सार्वजनिक भाषा है, जिसे बिना भेद–भाव प्रत्येक भारतीय ग्रहण कर सकता है।

– ***मदन मोहन मालवीय***

ओडिशा की माटी का गौरव

श्री प्रिय चंदन कुमार
सहायक लेखा अधिकारी

हरे साल के झुरमुट बोलें, नदियों की है धार निराली,
प्राणवायु से महक रही है, ओडिशा की डाली-डाली।
केवल कोयला-लोहा ही क्या, यहाँ संपदा और बड़ी,
जहाँ प्रकृति के आंगन में, जीवन की हर साँस जुड़ी।
चिल्का के नीले पानी में, चंचल डॉल्फिन इठलाती,
दूर देश से आए पंछी, अपनी नई कथा सुनाती।
खारे पानी का वह सागर, जीवन का है बड़ा आधार,
नीले आँचल में समेटे, कुदरत का अनमोल प्यार।
गहिरमाथा की रेत पुकारे, कछुओं का है जहाँ बसेरा,
लाखों नन्हें जीवन लाते, एक नया-सा यहाँ सवेरा।
अनुशासन की यह परिभाषा, लहरों के संग आती है,
धरती के इस संरक्षण की, जग को राह दिखाती है।
सतकोसिया की गहरी घाटी, जहाँ महानदी बहती है,
घड़ियालों की मूक कहानी, पानी के संग चलती है।
देब्रीगढ़ के शांत वनों में, चौसिंगा का वास यहाँ,
तेंदुए की आहट से गूंजे, सुंदर सा आकाश यहाँ।
आओ मिलकर हाथ बढ़ाएं, इस विरासत को बचाएं हम,
वन्यजीव और प्रकृति को, अपना मीत बनाएं हम।
ओडिशा की यह हरियाली ही, हमारी असली पहचान है।

●●●

सभी भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक है तो वो देवनागरी ही हो सकती है।

–जस्टिस कृष्णास्वामी अय्यर

ओडिशा के कुछ प्रमुख वन्यजीव अभयारण्य

श्री मनीष कुमार
लेखाकार

1. टिकरपाड़ा वन्यजीव अभयारण्य: ओडिशा की एक प्राकृतिक धरोहर

टिकरपाड़ा वन्यजीव अभयारण्य भारत के ओडिशा राज्य का एक अत्यंत सुंदर और पारिस्थितिक रूप से महत्वपूर्ण वन्यजीव स्थल है। यह महानदी नदी के तट पर स्थित है और अपने मनोहारी प्राकृतिक दृश्यों, समृद्ध जैव विविधता तथा शांत वातावरण के लिए प्रसिद्ध है। यह सतकोसिया गॉर्ज पारिस्थितिकी तंत्र का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो इसे पूर्वी भारत का एक प्रमुख संरक्षण क्षेत्र बनाता है।

अंगुल जिले में स्थित टिकरपाड़ा अभयारण्य गहरी घाटियों, हरे-भरे जंगलों, पथरीली पहाड़ियों और घुमावदार नदी घाटियों से युक्त है। इस अभयारण्य की सबसे प्रमुख विशेषता महानदी नदी द्वारा पूर्वी घाटों को चीरते हुए बनाई गई अद्भुत गॉर्ज है। यह विशिष्ट भौगोलिक संरचना न केवल क्षेत्र की सुंदरता बढ़ाती है बल्कि अनेक प्रकार के वनस्पति और जीव-जंतुओं को आश्रय भी प्रदान करती है।

यह अभयारण्य साल, सागौन, बाँस और औषधीय पौधों से युक्त शुष्क पर्णपाती वनों के लिए जाना जाता है। ये वन अनेक वन्यजीव प्रजातियों के लिए भोजन और आश्रय उपलब्ध कराते हैं। टिकरपाड़ा विशेष रूप से मगरमच्छों (मगर) की आबादी के लिए प्रसिद्ध है, जिन्हें अक्सर नदी के किनारों पर धूप सेंकते देखा जा सकता है। इसके अतिरिक्त यहाँ तेंदुआ, गौर, सांभर, चीतल, जंगली सूअर और लंगूर जैसे स्तनधारी जीव भी पाए जाते हैं।

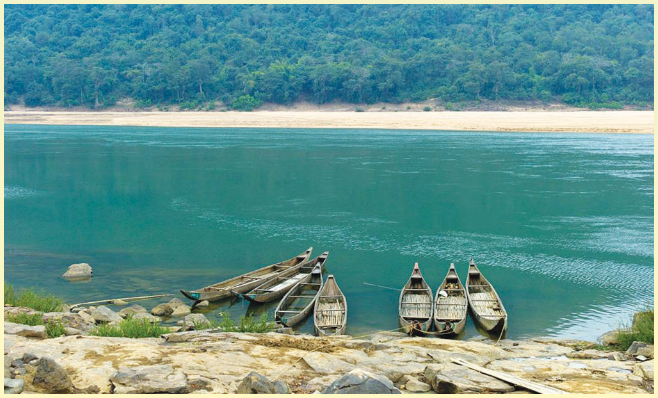

टिकरपाड़ा वन्यजीव अभयारण्य में पक्षी जीवन भी अत्यंत समृद्ध है। यहाँ स्थानीय और प्रवासी पक्षियों की अनेक प्रजातियाँ पाई जाती हैं, जिससे यह पक्षी प्रेमियों के लिए एक आदर्श स्थल बन जाता है। हॉर्नबिल, मोर, बाज, किंगफिशर और तोते जैसे पक्षी यहाँ सामान्य रूप से देखे जा सकते हैं। नदी का पारिस्थितिकी तंत्र जलीय जीवों को भी समर्थन देता है, जिससे अभयारण्य की जैव विविधता और अधिक समृद्ध होती है।

वन्यजीव संरक्षण के साथ-साथ टिकरपाड़ा में इको-पर्यटन की सुविधाएँ भी उपलब्ध हैं, जैसे प्रकृति पथ भ्रमण, नदी नौकायन, मगरमच्छ दर्शन और वन विश्राम गृह। ये गतिविधियाँ पर्यटकों को प्राकृतिक वातावरण का आनंद लेने का अवसर देती हैं, वह भी पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार रहते हुए।

अंततः टिकरपाड़ा वन्यजीव अभयारण्य ओडिशा की प्राकृतिक विरासत का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। इसकी जैव विविधता, आकर्षक प्राकृतिक दृश्य और संरक्षण महत्व इसे एक अमूल्य पारिस्थितिक धरोहर बनाते हैं। इस अभयारण्य का संरक्षण न केवल वन्यजीवों के लिए, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए प्राकृतिक संतुलन बनाए रखने हेतु भी अत्यंत आवश्यक है।

2. डेब्रीगढ़ वन्यजीव अभयारण्य: जैव विविधता का एक सुरक्षित आश्रय

ओडिशा के पश्चिमी भाग में, संबलपुर शहर के निकट

स्थित डेब्रीगढ़ वन्यजीव अभयारण्य राज्य के सबसे स्वच्छ और जैविक रूप से समृद्ध संरक्षित क्षेत्रों में से एक है। लगभग 347 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला यह अभयारण्य विशाल हीराकुंड जलाशय के समीप स्थित है, जहाँ घने वन और विस्तृत जलराशि मिलकर एक अनोखा प्राकृतिक परिदृश्य बनाते हैं।

डेब्रीगढ़ चारों ओर से ऊँची पहाड़ियों, गहरी घाटियों और पर्णपाती वनों से घिरा हुआ है, जहाँ साल, सागौन और बाँस के वृक्ष प्रमुख हैं। इसके पूर्वी सीमा पर स्थित हीराकुंड जलाशय इस क्षेत्र के पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह जलाशय वन्यजीवों और प्रवासी पक्षियों के लिए जल का प्रमुख स्रोत है, जिससे यह क्षेत्र एक महत्वपूर्ण पारिस्थितिक क्षेत्र बन जाता है।

यह अभयारण्य वनस्पतियों और जीव–जंतुओं की समृद्ध विविधता का घर है। यहाँ चीतल, सांभर, जंगली सूअर, भौंकने वाला हिरण और गौर जैसे कई वन्यजीव पाए जाते हैं। डेब्रीगढ़ विशेष रूप से तेंदुओं की उपस्थिति के लिए जाना जाता है, जिससे यह ओडिशा में तेंदुओं का एक महत्वपूर्ण आवास बन गया है। इसके अलावा, छोटे स्तनधारी जीव, सरीसृप और कीट भी इस क्षेत्र की जैव विविधता को समृद्ध करते हैं।

पक्षी प्रेमियों के लिए भी यह स्थान अत्यंत आकर्षक है। यहाँ मोर, बगुले, हेरॉन, किंगफिशर तथा सर्दियों में आने वाले कई प्रवासी पक्षी देखे जा सकते हैं। जलाशय का शांत जल पक्षियों के लिए आदर्श वातावरण प्रदान करता है।

डेब्रीगढ़ वन्यजीव अभयारण्य वन्यजीव संरक्षण और पर्यावरण सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वन विभाग द्वारा अवैध शिकार रोकने, वनाग्नि नियंत्रण और आवास पुनर्स्थापन के लिए निरंतर प्रयास किए जाते हैं। यहाँ नियंत्रित रूप से इको–टूरिज्म को बढ़ावा दिया गया है, जिससे पर्यटन और संरक्षण के बीच संतुलन बना रहे। स्थानीय समुदायों को भी संरक्षण प्रयासों से जोड़ा गया है, जिससे मानव और वन्यजीवों के बीच सामंजस्य स्थापित हो सके।

अभयारण्य में निर्देशित सफारी, प्रकृति भ्रमण पथ और निगरानी मीनारें उपलब्ध हैं, जहाँ से पर्यटक जिम्मेदारी के साथ वन्यजीवों का अवलोकन कर सकते हैं। ये गतिविधियाँ न केवल मनोरंजन प्रदान करती हैं, बल्कि लोगों को जैव विविधता और संरक्षण के महत्व के प्रति जागरूक भी करती हैं। डेब्रीगढ़ धीरे–धीरे ओडिशा के एक आदर्श इको–पर्यटन स्थल के रूप में उभर रहा है।

डेब्रीगढ़ वन्यजीव अभयारण्य केवल एक संरक्षित वन क्षेत्र नहीं है, बल्कि यह प्रकृति की सहनशीलता और विविधता का जीवंत उदाहरण है। अपनी समृद्ध वन्यजीव संपदा, सुंदर प्राकृतिक दृश्य और निरंतर संरक्षण प्रयासों के साथ, डेब्रीगढ़ न केवल संकटग्रस्त प्रजातियों के लिए सुरक्षित आश्रय प्रदान करता है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत भी है। इस अभयारण्य का संरक्षण ओडिशा ही नहीं, बल्कि पूरे क्षेत्र के पर्यावरणीय संतुलन के लिए अत्यंत आवश्यक है।

3.चंदका वन्यजीव अभयारण्य: भुवनेश्वर के निकट एक हरित स्वर्ग

चंदका वन्यजीव अभयारण्य ओडिशा राज्य के सबसे महत्वपूर्ण प्राकृतिक संरक्षण क्षेत्रों में से एक है। यह ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर के बाहरी क्षेत्र में स्थित है और तेजी से हो रहे शहरी विकास तथा समृद्ध जैव विविधता के बीच एक हरित सुरक्षा कवच के रूप में कार्य करता है। घने जंगलों, विविध वन्यजीवों और सुंदर प्राकृतिक दृश्यों के लिए प्रसिद्ध चंदका अभयारण्य संरक्षण, शिक्षा और इको–पर्यटन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

चंदका वन्यजीव अभयारण्य भुवनेश्वर से लगभग 20 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है और लगभग 193 वर्ग

किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है। विशेष रूप से घटती हुई हाथियों की संख्या की रक्षा के उद्देश्य से इस वन क्षेत्र को वर्ष 1982 में वन्यजीव अभयारण्य घोषित किया गया, ऐतिहासिक रूप से यह क्षेत्र सदियों से जनजातीय समुदायों और वन्यजीवों का आश्रय स्थल रहा है।

यह अभयारण्य मुख्यत: शुष्क पर्णपाती वनों से आच्छादित है और वनस्पतियों की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। यहाँ साल (शोरिया रोबस्टा), सागौन, बाँस, नीलगिरी तथा कई औषधीय पौधे पाए जाते हैं। ये वन मिट्टी संरक्षण, जलवायु संतुलन और वन्यजीवों के लिए उपयुक्त आवास प्रदान करने में सहायक हैं।

चंदका वन्यजीव अभयारण्य एशियाई हाथियों के लिए विशेष रूप से जाना जाता है, जो अक्सर चंदका और आसपास के वन क्षेत्रों के बीच विचरण करते हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ चीतल, सांभर, भौंकने वाला हिरण, जंगली सूअर, तेंदुआ और जंगली बिल्ली जैसे जीव पाए जाते हैं। सरीसृपों में साँप और मॉनिटर छिपकली भी यहाँ देखी जाती हैं।

पक्षी जगत की दृष्टि से भी यह अभयारण्य अत्यंत समृद्ध है। यहाँ मोर, किंगफिशर, कठफोड़वा, हॉर्नबिल और चील जैसी अनेक स्थानीय एवं प्रवासी पक्षी प्रजातियाँ पाई जाती हैं, जिससे यह पक्षी प्रेमियों के लिए एक आकर्षक स्थल बन गया है।

चंदका वन्यजीव अभयारण्य तेजी से फैलते शहरी क्षेत्रों के निकट जैव विविधता संरक्षण और पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह भूजल स्तर को बनाए रखने और वायु गुणवत्ता सुधारने में भी सहायक है। हालाँकि, मानव–वन्यजीव संघर्ष, अतिक्रमण और आवास विखंडन जैसी चुनौतियाँ इसके संरक्षण में बाधा उत्पन्न करती हैं। वन विभाग द्वारा किए जा रहे संरक्षण प्रयास और जन–जागरूकता कार्यक्रम इस नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र की रक्षा के लिए आवश्यक हैं।

भुवनेश्वर के निकट स्थित होने के कारण यह अभयारण्य एक लोकप्रिय इको–पर्यटन स्थल बन गया है। प्रकृति भ्रमण, वन सफारी और पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रम विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं और प्रकृति प्रेमियों को आकर्षित करते हैं। उत्तरदायी पर्यटन संरक्षण प्रयासों को समर्थन प्रदान करता है।

चंदका वन्यजीव अभयारण्य ओडिशा की एक अमूल्य प्राकृतिक धरोहर है। यह न केवल वन्यजीवों और वनों की रक्षा करता है, बल्कि मनुष्य और प्रकृति के बीच सामंजस्यपूर्ण सह–अस्तित्व का संदेश भी देता है। भविष्य की पीढ़ियों के लिए इस जैव विविधता को सुरक्षित रखना अत्यंत आवश्यक है।

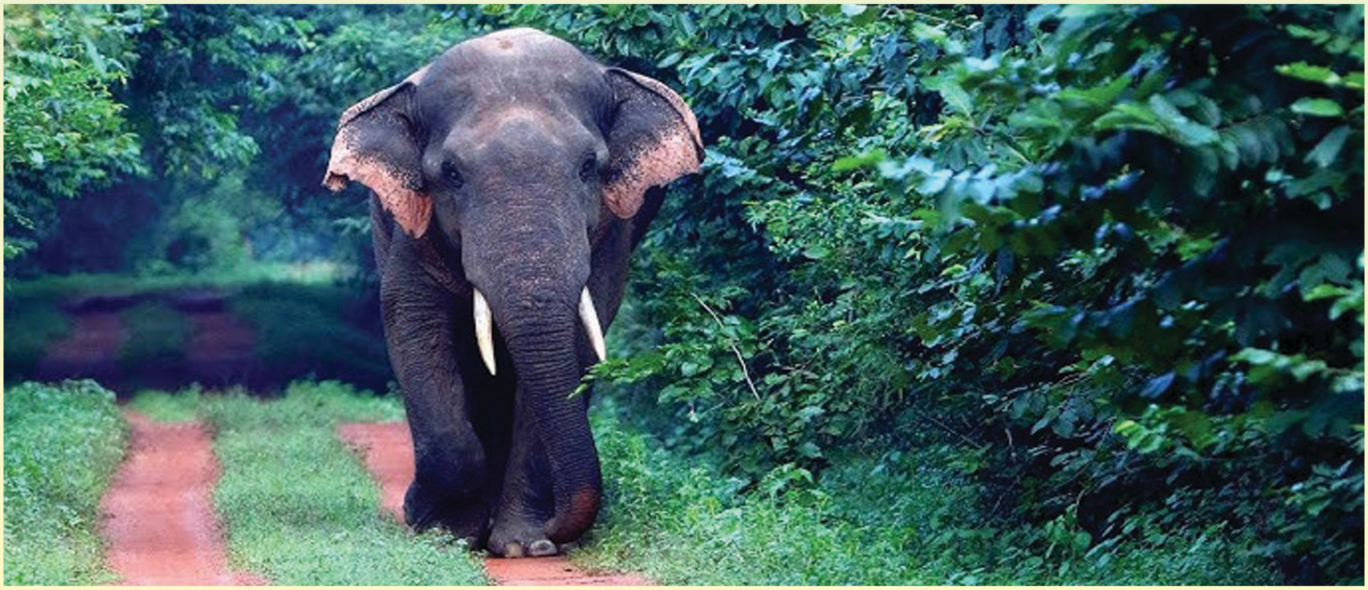

●●●

माधव और ओडिशा के जंगल

श्री रणवीर कुमार
लेखाकार

माधव का जन्म 1947 की बरसाती सुबह हुआ था – वही साल जब भारत आज़ाद हुआ। लेकिन मयूरभंज के साल जंगलों के बीच बसे उसके छोटे से आदिवासी गाँव में आज़ादी का कोई जश्न नहीं था। वहाँ दुनिया की सीमाएँ नक्शों से नहीं, पहाड़ियों से तय होती थीं। राष्ट्र की परिभाषा शहरों में लिखी जा रही थी; माधव की दुनिया जंगल की साँसों में बसती थी।

उनके पिता एक छोटे किसान थे जिनके पास ज़मीन का एक छोटा सा टुकड़ा था। मिट्टी साधारण थी, लेकिन जंगल बहुत उदार था। अनाज खेतों से आता था; बाकी सब कुछ पेड़ों से आता था – फल, जड़ी-बूटियाँ, जलाऊ लकड़ी और कहानियाँ। शाम को, बड़े-बुजुर्ग बाघों के बारे में दुश्मन के तौर पर नहीं, बल्कि जंगल के रखवालों के तौर पर बात करते थे। हाथी प्राचीन यात्रियों की तरह पहाड़ियों से गुज़रते थे। उनकी मौजूदगी से कोई हैरान नहीं होता था; इंसान कई प्रजातियों में से सिर्फ़ एक थे। नदियाँ इतनी साफ़ थीं कि उनसे पानी पिया जा सके। बच्चे वहाँ तैरते थे जहाँ मछलियाँ चाँदी के तीरों की तरह चमकती थीं। माधव के लिए जंगल सिर्फ़ एक संसाधन नहीं था – यह रिश्ता, पहचान और सुरक्षा था। जिसे बाद में "जैव विविधता" कहा गया, वह बस वैसा ही जीवन था जैसा हमेशा से रहा था। उसका बचपन हरियाली की गोद में बीता। जंगल उसके लिए जगह नहीं था- वह परिवार था। पेड़ों के नाम रिश्तेदारों की तरह याद थे। नदियाँ उसकी पहली शिक्षिका थीं। वह पानी को सिर्फ पीता नहीं था, उसकी आवाज़ सुनता था। इंसान इस दुनिया का मालिक नहीं, उसका हिस्सा था।

उस समय जंगल खत्म होने की कल्पना भी पाप जैसी लगती थी।

प्रचुरता का युग (1947-1960)

बचपन में माधव ने अभाव का अर्थ नहीं जाना। खेत छोटे थे, पर जंगल विशाल था। भूख कभी स्थायी मेहमान नहीं बनी। फल, कंद-मूल, जड़ी-बूटियाँ, लकड़ी –सब कुछ संतुलन में लिया जाता था। गाँव के नियम लिखे नहीं थे, पर सभी के भीतर अंकित थे।

कुछ उपवन पवित्र थे। कुछ पेड़ कभी नहीं काटे जाते। शिकार भी प्रार्थना के बाद होता। जंगल सिर्फ संसाधन नहीं था –वह नैतिक व्यवस्था था।

माधव को नहीं पता था कि जिस धरती पर वह नंगे पाँव दौड़ता है, वह एक दिन सिमलीपाल टाइगर रिज़र्व कहलाएगी। उसके लिए वह पहले से ही पवित्र थी। संरक्षण कोई नीति नहीं, जीवन की स्वाभाविक भाषा थी।

विकास का झटका (1960-1985) –जवानी के साथ दुनिया बदल गई।

पहली बार माधव ने जंगल में मशीन की आवाज़ सुनी –एक ऐसी आवाज़ जो पक्षियों के गीत को चीरती हुई आती थी। ओडिशा औद्योगिक नक्शे पर उभर रहा था। खदानें खुलीं। स्टील प्लांट खड़े हुए। सड़कें पहाड़ियों के सीने पर सीधी लकीर की तरह उतर आईं।

रोज़गार के लालच में माधव भी घर छोड़ गया। खनन क्षेत्रों में उसने पहाड़ों को उड़ते देखा-सचमुच उड़ते हुए। विस्फोट के बाद धूल आसमान को ढक लेती, और उसे लगता मानो जंगल अपनी साँस खो रहा हो।

नदियाँ, जिनसे वह बचपन में पानी पीता था, अब गंदी थीं। हाथी गाँवों में भटकते, जैसे अपना रास्ता भूल गए हों। अख़बारों ने इसे "मानव-वन्यजीव संघर्ष" कहा। माधव ने इसे एक घायल घर की चीख की तरह महसूस किया। जंगल

के रास्ते जिन्हें वह बचपन में जानता था, मशीनों के नीचे गायब हो गए। हाथी भ्रमित और गुस्से में गाँवों में भटकने लगे, उनके रास्ते टूट गए थे। जिसे बाद में अखबारों ने "मानव–वन्यजीव संघर्ष" कहा, माधव ने उसे दुख के रूप में महसूस किया – एक जंगल की याददाश्त खोने की आवाज़।

फिर भी, इसी अंधेरे में एक नई भाषा जन्म ले रही थी –संरक्षण की भाषा। वैज्ञानिक आए। जंगल को मापा जाने लगा, दर्ज किया जाने लगा। सिमलीपाल को टाइगर रिज़र्व घोषित किया गया। पहली बार सरकार ने कहा: "इसको बचाना है।"

माधव दुविधा में था। उसकी मजदूरी से घर चलता था। पर हर कमाई के साथ उसे लगता, वह अपने बचपन के पेड़ों का कर्ज़दार हो गया है। इंडस्ट्री से परिवारों का पेट भरता था, जिसमें उनका अपना परिवार भी शामिल था। लेकिन हर सैलरी चेक में गिरते हुए पेड़ की गूंज सुनाई देती थी।

संरक्षण की जागृति (1985-2010)

मध्य उम्र में, माधव घर लौटे और फॉरेस्ट गार्ड के रूप में नौकरी की। यह नौकरी से ज़्यादा अपनेपन की वापसी थी। तब तक, ओडिशा की पारिस्थितिक कहानी बदलने लगी थी। संरक्षण ने उदासीनता की जगह ले ली थी। वर्दी पहनते समय उसे लगा जैसे वह अपने अतीत की रक्षा करने जा रहा है।

जंगल बदला था, पर मरा नहीं था। उसमें जिद्दी जीवन बचा हुआ था।

उसने प्रोजेक्ट टाइगर को जड़ पकड़ते देखा। भितरकनिका के मगरमच्छ लौटे। चिल्का झील फिर से पक्षियों से भर उठी। गाँवों को संयुक्त वन प्रबंधन में शामिल किया गया–जैसे इतिहास ने एक अधूरा वादा पूरा किया हो।

माधव बच्चों को पौधे लगाते देखता और मुस्कुराता। वह उन्हें कहानियाँ सुनाता–डराने के लिए नहीं, जोड़ने के लिए। वह चाहता था कि अगली पीढ़ी जंगल को किताब में नहीं, दिल में रखे। माधव ने स्कूली बच्चों के साथ पौधे लगाए। वह सुबह–सुबह गश्त के रास्तों पर चलते थे। उन्होंने जंगल की कहानियाँ सुनाईं, जैसा कि उन्हें याद था – अतीत को रोमांटिक बनाने के लिए नहीं, बल्कि अगली पीढ़ी को विरासत का एहसास दिलाने के लिए। इको–टूरिज्म धीरे–धीरे उभरा। आदिवासी ज्ञान को पारिस्थितिक ज्ञान के रूप में पहचाना गया। अपने जीवन में पहली बार, माधव ने देखा कि विकास और संरक्षण एक–दूसरे से बात करने की कोशिश कर रहे हैं, न कि खाई के पार से चिल्ला रहे हैं। उसे विश्वास होने लगा कि जंगल फिर से साँस ले सकता है।

पहली बार उसे लगा कि विकास और प्रकृति एक ही मेज पर बैठकर बात करना सीख रहे हैं।

बदलते मौसम का समय (2010–वर्तमान)

अब वह बूढ़ा है। उसकी चाल धीमी है, पर आँखें अभी भी जंगल की दिशा पहचानती हैं। अब एक बूढ़े आदमी के रूप में, माधव अपने घर के बाहर बैठे हैं और एक अलग ओडिशा को बदलते हुए देख रहे हैं। कुछ संरक्षित क्षेत्रों में जंगल का दायरा फिर से बढ़ गया है। वन्यजीव नाजुक लचीलापन दिखाते हैं। लेकिन खतरे अब केवल स्थानीय नहीं हैं – वे वैश्विक हैं।

दुनिया फिर बदल रही है – इस

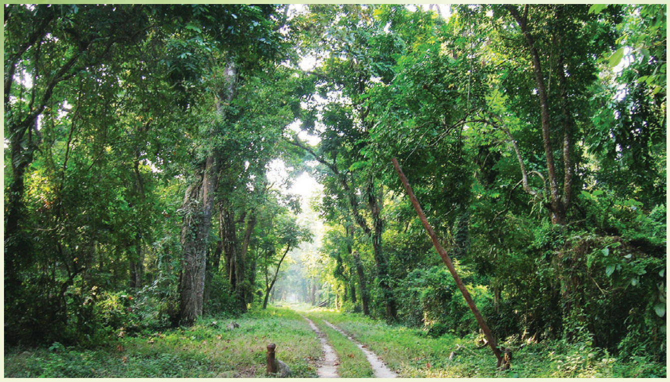

बार और बड़े पैमाने पर। चक्रवात अधिक उग्र हैं। समुद्र तट पीछे हट रहे हैं। गर्मी लंबी हो रही है। बारिश का भरोसा टूट गया है।

लेकिन वह गर्व से देखता है कि ओडिशा लड़ना सीख गया है। मैंग्रोव समुद्र के खिलाफ रक्षा की आखिरी पंक्ति के रूप में खड़े हैं। गर्मियाँ और ज़्यादा गर्म होती हैं। बारिश अप्रत्याशित रूप से होती है। लेकिन आपदा प्रबंधन जीवन बचाता है। बच्चे जलवायु के बारे में पढ़ते हैं, सिर्फ मौसम के बारे में नहीं।

अब ओडिशा अपने जलवायु लचीलेपन के लिए जाना जाता है। आपदा प्रबंधन जान बचाता है। मैंग्रोव बहाली परियोजनाएँ हरी ढाल की तरह बढ़ रही हैं। नवीकरणीय ऊर्जा के प्रयोग चुपचाप फैल रहे हैं। शासन ने अनुकूलन करना सीख लिया है, भले ही संघर्ष जारी है।

उसके पोते–पोतियाँ उन पार्कों में घूमते हैं जिनकी रक्षा उसने की थी। जंगल अब अदृश्य नहीं है। वह चर्चा का विषय है, नीति का केंद्र है, भविष्य की उम्मीद है।

माधव समझता है – उसकी ज़िंदगी ओडिशा की पर्यावरण यात्रा का नक्शा है:मासूमियत → शोषण → जागृति → ज़िम्मेदारी।

संस्कृति और यादें : अब जब वह शाम को घर के बाहर बैठता है, हवा में साल के पत्तों की वही पुरानी गंध आती है। हर मोड़ पर प्रकृति ने उसकी संस्कृति लिखी। त्योहार पेड़ों के साथ जुड़े थे। गीत नदियों से जन्म लेते थे। कहानियाँ जानवरों से भरी थीं। जंगल गया तो भाषा भी बदल जाती– यह वह जानता था। वह आँखें बंद करता है। उसे अपना बचपन दिखता है – नंगे पाँव दौड़ता हुआ एक लड़का, जिसे लगता था जंगल हमेशा रहेगा। वह मुस्कुराता है। जंगल अब भी है। बस अब उसे बचाने के लिए लोग जाग गए हैं।

माधव के अपने पोते-पोतियों से कहे गए अंतिम शब्द सार को दर्शाते हैं:

"जंगल ने मुझे पाला। अगर तुम इसकी रक्षा करोगे, तो यह तुम्हें भी पालेगा।" प्रकृति तब जीवित रहती है जब लोग निष्कर्षण के बजाय प्रबंधन को चुनते हैं। वन्यजीव और प्राकृतिक संसाधन स्थिर संपत्ति नहीं हैं – वे जीवित प्रणालियाँ हैं जो मानवीय निर्णयों द्वारा आकार लेती हैं।

•••

राष्ट्र के एकीकरण के लिए सर्वमान्य भाषा से अधिक बलशाली कोई तत्व नहीं। मेरे विचार में हिंदी ही ऐसी भाषा है।

– लोकमान्य गंगाधर तिलक

ओडिशा: प्रकृति और प्रगति का संगम

सुश्री पिंकी गुर्लिया
लेखाकार

भारत के पूर्वीतट का
एक अनमोल हिस्सा,
जहाँ सागर का विस्तार है,
नाम उसका है ओडिशा।

महानदी के ऊँचे बाँध से
खेतों में छाई हरियाली,
धान के कटोरे की महिमा
सबसे है गौरवशाली।

ब्राह्मणी और वैतरणी की
है पावन जल की धारा,
इन नदियों के संगम से
है सजा यह प्रदेश प्यारा।

ऋषिकुल्या की गोदी में
कछुओं का मेला लगता,
वंशधारा के आँगन में
हर कोना–कोना जगता।

जहाँ नदियाँ और समंदर
आपस में मिल जाते,
मैंग्रोव की जड़ों में
जीवन के गहरे राज समाते।

कीचड़ भरे किनारों पर
जब मगरमच्छ हैं सुस्ताते,
अपनी शक्ति और सन्नाटे से
सबको चकित कर ये जाते।

रंग–बिरंगे किंगफिशर की,
यहाँ चहक सुनाई देती,
जंगली सूअर और हिरणों की,
टोली दिखाई देती।

भितरकनिका की यह धरती,
अद्भुत और अनोखी,
हवाओं की नमी, पानी की हलचल,
शीतल हो जाए मन जहाँ।

सिमिलिपाल के घने वनों में,
बाघों की पद चाप है,
मयूरभंज की वादियों में,
कुदरत का मिलाप है।

हाथियों के झुंड चलते,
जैसे पर्वत डोलते,
मृग–छौने वन–प्रांतरों में,
अपनी खुशियाँ तोलते।

चिलिका के नीले जल में,
डॉल्फिन की है अठखेलियाँ,
विदेशी पक्षी सुलझाते,
ऋतुओं की पहेलियाँ।

कालाहांडी से क्योंझर तक है,
हरियाली की चादर,
जहाँ हर जीव और जंतु को,
मिलता है गहरा आदर।

तोशाली

नंदनकानन के आँगन में,
श्वेत बाघ का राज बसा,
कानन के शांत सरोवर में,
पशु–पक्षियों का वास कसा।

क्योंझर और मयूरभंज की,
धरती रत्न उगलती,
लौह–अयस्क की लाल चमक से,
विकास की राह निकलती।

अनुगुल और तालचेर में है,
कोयले का काला सोना,
ऊर्जा की इस शक्ति से है,
रोशन हर एक कोना।

कोरापुट की वादियों में,
बॉक्साइट का अंबार खड़ा,
खनिज संपदा की दौड़ में,
ओडिशा सबसे आगे बढ़ा।

सुकिंदा की खदानों में,
क्रोमाइट का राज है,
झारसुगुड़ा के धुएँ में,
प्रगति का विश्वास है।

मशीनों का शोर यहाँ,
और ट्रकों की लंबी कतारें,
खनिजों की यह खान,
उत्कल को वैभव से सँवारे।

धान के खेतों की हरियाली,
जैसे मखमली चादर हो,
बरगढ़ से कोरापुट तक
खुशहाली का मंजर हो।

नुआखाई का पावन पर्व,
जब नयी फसल घर आती ,
मेहनत के पसीने से
हर थाली है मुस्कुराती।

कंधमाल की सुनहरी हल्दी,
औषधीय वरदान यहाँ,
काजू और कॉफी की खेती,
बढ़ा रही सम्मान यहाँ।

पहाड़ों का संगीत यहाँ है,
झरनों की अपनी लय,
संसाधनों से पूर्ण यह माटी,
भारत का अक्षय–हृदय।

संस्कृति, शक्ति और प्रकृति का,
है जहाँ अनूठा संगम,
विकास की ऊँची लहरों पर,
बढ़ता जिसका हर कदम।

अतिथि सत्कार की यह भूमि,
सबका मन मोह लेती ,
अपनी गौरवमयी विरासत से,
जग को नई दिशा देती।

धन्य है उत्कल की यह माटी,
धन्य यहाँ का हर इंसान,
प्रगति के पथ पर सदा चले,
मेरा प्यारा ओडिशा महान।

●●●

जंगल की ओर एक यात्रा: चंदका वन्यजीव अभयारण्य की सैर

श्रीमती कोयल चक्रवर्ती
सहायक लेखा अधिकारी

शहर की भागदौड़ और शोर-शराबे से दूर एक सुकून भरा दिन बिताने के लिए मैंने ओडिशा के भुवनेश्वर के बाहरी क्षेत्र में स्थित चंदका वन्यजीव अभयारण्य जाने का निर्णय लिया। जैसे ही मैंने अभयारण्य के भीतर प्रवेश किया, वातावरण पूरी तरह बदल गया। वाहनों का शोर और भीड़-भाड़ पीछे छूट गया और उसकी जगह पक्षियों की चहचहाहट, पत्तों की सरसराहट और हवा की मधुर ध्वनि ने ले ली।

अभयारण्य की ओर जाने वाली सड़क के दोनों ओर ऊँचे साल और सागौन के पेड़ खड़े थे, जो एक हरी सुरंग का आभास दे रहे थे। पेड़ों की घनी छाया से छनकर आती धूप जंगल की ज़मीन पर सुंदर आकृतियाँ बना रही थी। मिट्टी और हरियाली की ताज़ी खुशबू ने मन और शरीर दोनों को तरोताज़ा कर दिया। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो प्रकृति स्वयं हमारा स्वागत कर रही हो।

जंगल में भ्रमण के दौरान मैंने खुले मैदानों में शांति से चरते हुए कई हिरण देखे। मोर अपने रंग-बिरंगे पंख फैलाकर नृत्य कर रहे थे और रंगीन पक्षी एक डाल से दूसरी डाल पर उड़ते दिखाई दे रहे थे। हमारे साथ चल रहे वन-मार्गदर्शक ने हमें चंदका की समृद्ध जैव विविधता और एशियाई हाथियों के लिए इसके महत्व के बारे में बताया। हालाँकि हमें हाथियों के पैरों के निशान और दूर से आती उनकी चिंघाड़ सुनाई दी, लेकिन वे जंगल की गहराई में ही छिपे रहे, जिससे अनुभव और भी रोमांचक बन गया।

मेरी यात्रा का सबसे यादगार क्षण तब आया जब मैं एक मचान (वॉच टॉवर) के पास शांत खड़ी होकर पूरे जंगल को निहार रही थी। चारों ओर फैली शांति मन को गहराई से सुकून दे रही थी, जिसे कभी-कभार पक्षियों और कीटों की आवाज़ें भंग कर देती थीं। उस पल मुझे एहसास हुआ कि जब हम प्रकृति से जुड़ते हैं, तो जीवन कितना शांत और सुंदर हो जाता है।

चंदका वन्यजीव अभयारण्य केवल एक पर्यटन स्थल नहीं है, बल्कि यह संरक्षण और वन्यजीवों के साथ सह-अस्तित्व का जीवंत पाठ पढ़ाता है। जब सूर्य अस्त होने लगा और आकाश सुनहरे व नारंगी रंगों से सज गया, तो मेरे मन में इस अद्भुत अनुभव के लिए गहरी कृतज्ञता भर गई।

चंदका वन्यजीव अभयारण्य की यह यात्रा मेरे लिए अविस्मरणीय रही। इसने मुझे वनों और वन्यजीवों के संरक्षण के महत्व का एहसास कराया। मैं शांत मन, यादों से भरे कैमरे और प्रकृति के नाजुक संतुलन के प्रति नए सम्मान के साथ घर लौटी।

•••

नीलकंठ का घर और सिमलीपाल की पुकार

श्री विश्वास कुमार सिन्हा
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

प्रकृति की गोद में एक सुबह

ओडिशा की धरती मात्र भौगोलिक सीमाओं का विस्तार नहीं है, बल्कि यह प्रकृति के अनंत वैभव की एक जीवंत गाथा है। मयूरभंज जिले के सिमलीपाल टाइगर रिजर्व के बफर जोन में बसे एक छोटे से गाँव में सुबह की शुरुआत पक्षियों के कलरव से नहीं, बल्कि साल और महुआ के पत्तों से छनकर आती उस खामोशी से होती है, जो बहुत कुछ कह जाती है। बिस्वा, जो पिछले दो दशकों से एक समर्पित सरकारी कर्मचारी रहे थे, अपनी सेवानिवृत्ति के बाद वापस अपनी मिट्टी की ओर लौट आए थे। उनका हृदय हमेशा से ओडिशा के वनों और वन्यजीवों के लिए धड़कता था। एक सुबह, जब वे अपने पोते, अयान को लेकर सिमलीपाल के कोर क्षेत्र की ओर गश्ती दल के साथ निकले, तो उनके मन में अपनी सेवा के दौरान देखे गए ओडिशा के विकास और पर्यावरण के संतुलन की यादें ताजा हो गईं।

बिस्वा ने अयान को बताया, "देखो बेटा, यह जो तुम ऊंचे-ऊंचे साल और सागौन के पेड़ देख रहे हो, ये ओडिशा के "हरे फेफड़े" हैं। हमारे राज्य का लगभग 33 प्रतिशत हिस्सा वनाच्छादित है, जो हमें पूरे देश में एक विशिष्ट पहचान देता है। सिमलीपाल केवल एक जंगल नहीं है, यह एशिया का सबसे बड़ा साल का जंगल है और यूनेस्को की बायोस्फीयर रिजर्व सूची का गौरव है।"

अयान, जो शहर की कंक्रीट की दुनिया से आया था, चकित होकर देख रहा था। उसे लगा कि संसाधन का अर्थ केवल कोयला, लोहा या बॉक्साइट होता है, जो ओडिशा की खानों से निकलता है। बिस्वा ने उसके भ्रम को तोड़ते हुए कहा, "प्राकृतिक संसाधन केवल वे नहीं जिन्हें हम बेच सकें, बल्कि वे भी हैं जो हमें जीवन देते हैं। यह शुद्ध हवा, जलप्रपात और यहाँ का अनूठा पारिस्थितिकी तंत्र ही हमारा असली धन है।"

जैव-विविधता का अनूठा संसार

जैसे-जैसे वे जंगल की गहराई में बढ़ रहे थे, बिस्वा ने ओडिशा की विविध स्थलाकृतियों का वर्णन करना शुरू किया। उन्होंने बताया कि कैसे ओडिशा का समुद्रतट दुनिया के सबसे दुर्लभ कछुओं -"ऑलिव रिडले"- का मिलन स्थल है। गहिरमाथा की रेत पर जब लाखों कछुए एक साथ आते हैं, तो वह प्रकृति के अनुशासन का सबसे बड़ा प्रमाण होता है।

"अयान, क्या तुम्हें पता है कि हमारे राज्य में खारे पानी के मगरमच्छों का सबसे बड़ा ठिकाना भीतरकनिका है?" बिस्वा ने पूछा। "वहाँ के मैंग्रोव (Mangroves) न केवल

वन्यजीवों को शरण देते हैं, बल्कि चक्रवातों के समय एक सुरक्षा दीवार बनकर ओडिशा के तटों की रक्षा भी करते हैं। यह प्राकृतिक संसाधन हमारी सुरक्षा का कवच है।"

बातचीत के दौरान उन्होंने चिलिका झील का भी जिक्र किया। एशिया की सबसे बड़ी खारे पानी की यह लैगून न केवल इरावदी डॉल्फिनों का घर है, बल्कि सर्दियों में कैस्पियन सागर और बैकाल झील से आने वाले लाखों प्रवासी पक्षियों की शरणस्थली भी है। बिस्वा ने समझाया कि कैसे ये पक्षी और मछलियाँ एक जटिल खाद्य श्रृंखला का हिस्सा हैं, जिस पर हजारों मछुआरों की आजीविका टिकी है।

तभी, झाड़ियों के पीछे से एक हलचल हुई। एक विशालकाय हाथी अपने झुंड के साथ शांत भाव से सड़क पार कर रहा था। बिस्वा ने तुरंत अयान को शांत रहने का इशारा किया। उन्होंने बताया, "ओडिशा हाथियों का राज्य है। मयूरभंज, महानदी और संबलपुर के एलीफेंट रिजर्व हमारे गौरव हैं। लेकिन आज बढ़ता शहरीकरण और जंगलों का कटना इनके अस्तित्व के लिए चुनौती बन गया है।"

संरक्षण का संकल्प और भविष्य की राह

दोपहर ढल रही थी और वे 'बरेहीपाणि' जलप्रपात के पास पहुँचे, जहाँ से गिरता पानी ऐसा लग रहा था मानो प्रकृति अपनी सुंदरता की घोषणा कर रही हो। यहाँ बिस्वा ने एक गंभीर विषय की ओर अयान का ध्यान खींचा –"सतत विकास"। उन्होंने कहा, "ओडिशा में खनिज संसाधनों की प्रचुरता है। हम लौह अयस्क और एल्युमीनियम उत्पादन में अग्रणी हैं, लेकिन हमें यह याद रखना होगा कि विकास की कीमत पर वनों का विनाश आत्मघाती है। अगर हम जंगलों को काट देंगे, तो ये झरने सूख जाएँगे और हमारी उपजाऊ भूमि रेगिस्तान बन जाएगी। हमें अपनी अर्थव्यवस्था और पारिस्थितिकी के बीच एक सेतु बनाना होगा।"

बिस्वा ने अपनी बात को सरकारी नीतियों और सामुदायिक भागीदारी से जोड़ा। उन्होंने बताया कि कैसे ओडिशा के जनजातीय समुदाय पीढ़ियों से जंगलों के संरक्षक रहे हैं। "पवित्र उपवन" (Sacred Groves) की परंपरा हमें सिखाती है कि प्रकृति की पूजा कैसे की जाती है। विभाग की पत्रिका "तोशाली" जैसे मंच इसी चेतना को जगाने का माध्यम हैं, ताकि हर नागरिक यह समझे कि उनकी जीवनशैली का प्रभाव सीधे तौर पर प्रकृति पर पड़ता है।

शाम को घर लौटते समय, अयान की आँखों में एक नई चमक थी। वह अब केवल एक पर्यटक नहीं था, बल्कि एक जागरूक नागरिक बन चुका था। उसने बिस्वा से वादा किया कि वह अपने स्कूल में "प्रकृति मित्र" क्लब बनाएगा और इस संदेश को आगे फैलाएगा।

●●●

श्रेष्ठ

श्री मनोहर कुमार झा
सहायक लेखा अधिकारी

घर का पहला बच्चा जिस दिन जन्म लेता है,
सच में वह दिन बहुत श्रेष्ठ होता है।
क्योंकि खुद के नाम संस्कार के पहले वह
घर के हर सदस्य को कुछ ना कुछ नाम देता है
या यूं कहें कि दुनिया का सबसे श्रेष्ठ ईनाम देता है।

कोई सीना चौड़ा करके कहता है कि आज मैं पिता बन गया,
तथा कोई नाना, कोई दादा, कोई चाचा
और कोई मामा बनने का दावा करता है।

इतने में कंजकली कमर मटकाते आती है
और खुद को यशोमती बताती है।
लल्ला लल्ला कहके शिशु को हृदय से लगाती है,
किलकारी सुन वह दुनिया को बताती है
कि देखो मेरे लल्ला ने मुझे मासी कहके पुकारा है

फिर नानी आती है और कहती है दे मुझे ये रो रहा है,
इसे इसके माँ के पास देती हूं।
देखो सच में आज का यह दिन कितना अद्भुत है
एक माँ ने अपनी बेटी को माँ कहकर पुकारा है।

खुद को यशोमती बताने वाली नानी से अड़ जाती है
और कहती है मैं भी तो इसकी माँ ही हूँ,
तभी तो मेरे लल्ला ने मुझे माँ सी कहकर पुकारा है
यह नन्हा सा मासूम बालक, घर को ऐसे आनंदित और
प्रकाशित किया हुआ है मानो जैसे आज सबसे बड़ा त्योहार है।
तभी तो 100 साल से भी बुजुर्ग परदादा
इसे श्रेष्ठ संतान की उपाधि देने को तैयार हैं।
ओ लल्ला! सच कहती हूँ मैं ये आज का दिन तेरा जन्मदिन नहीं,
ये हम सभी के लिए सबसे बड़ा त्योहार है।

•••

ओडिशा की अनमोल विरासत: जल, थल और जीवन

श्री प्रिय चंदन कुमार
सहायक लेखा अधिकारी

महासंगम की धरती और चिल्का का गौरव

ओडिशा की प्राकृतिक संपदा केवल घने जंगलों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका विस्तृत समुद्री तट और नदियाँ इसे विश्व के अन्य हिस्सों से अलग बनाती हैं। जब हम ओडिशा के वन्यजीव की बात करते हैं, तो हमारा ध्यान अक्सर बड़े बाघ अभयारण्यों की ओर जाता है, लेकिन ओडिशा का असली सौंदर्य उसके जल–थल संगम में छिपा है। कहानी शुरू होती है पुरी के समुद्र तट से लगी एक छोटी सी बस्ती से, जहाँ ओमप्रकाश नाम का एक पुराना मछुआरा रहता था। ओमप्रकाश ने अपने जीवन के 40 साल चिल्का की लहरों के साथ बिताए थे। उसके लिए चिल्का केवल एक झील नहीं, बल्कि एक जीवंत ऊर्जा का स्रोत थी। जब सरकारी अधिकारियों की एक टीम क्षेत्र के प्राकृतिक संसाधनों का सर्वेक्षण करने आई, तो ओमप्रकाश ने उन्हें वही दिखाया जो केवल अनुभवी आँखों से ही देखा जा सकता है।

"साहब" ओमप्रकाश ने टीम के प्रमुख को समझाते हुए कहा, "दुनिया भर के लोग यहाँ इरावदी डॉल्फिन (Irrawaddy Dolphins) देखने आते हैं। ये डॉल्फिन केवल हमारे लिए पर्यटन का साधन नहीं हैं, बल्कि ये इस बात का सबसे बड़ा सबूत हैं कि हमारा पानी अभी भी जीवन के अनुकूल और स्वच्छ है। चिल्का एशिया की सबसे बड़ी खारे पानी की झील है, और इसका संरक्षण हमारी सबसे बड़ी नैतिक जिम्मेदारी है।"

"प्रकृति हमसे कुछ मांगती नहीं, बस हमसे थोड़ा सा सम्मान और सुरक्षा चाहती है।"

गहिरमाथा और प्रकृति का अनुशासन

ओमप्रकाश की टीम ने अपना अगला पड़ाव केंद्रपाड़ा के गहिरमाथा समुद्री तट पर डाला। यहाँ की रेत पर हर साल एक प्राकृतिक चमत्कार होता है। लाखों "ऑलिव रिडले" कछुए (Olive Ridley Turtles) हजारों मील की समुद्री दूरी तय करके ठीक इसी जगह अंडे देने आते हैं। यह "मास नेस्टिंग", जिसे स्थानीय भाषा में "अरिबाडा" कहा जाता है, पूरी दुनिया में दुर्लभ और अद्भुत है। ओमप्रकाश ने बताया कि

कैसे गाँव के युवा अब इन कछुओं की रक्षा के लिए "टर्टल गार्ड्स" बन गए हैं।

"पहले अनजाने में लोग इनके अंडों को नुकसान पहुँचाते थे, लेकिन अब हम समझ गए हैं कि अगर ये कछुए नहीं रहेंगे, तो समुद्री पारिस्थितिकी का संतुलन बिगड़ जाएगा। ये कछुए ओडिशा के वन्यजीव संरक्षण की वैश्विक सफलता का सबसे बड़ा प्रतीक हैं।"

प्राकृतिक संसाधनों की चर्चा करते हुए अधिकारियों ने

पाया कि ओडिशा के तटीय इलाकों में मौजूद "मैंग्रोव" वन और रेत के टीले चक्रवात (Cyclones) के समय एक मज़बूत सुरक्षा दीवार बनकर खड़े रहते हैं। यह एक ऐसा प्राकृतिक संसाधन है जिसकी कीमत किसी भी आधुनिक तकनीक से अधिक है। यदि हम इन तटों को बचाए रखते हैं, तो हम लाखों नागरिकों की जान और संपत्ति को सुरक्षित रखते हैं।

सतकोसिया का मर्म और महानदी की गाथा

समुद्र से दूर, जब टीम ओडिशा के मध्य भाग में पहुँची, तो उनका सामना सतकोसिया गॉर्ज (Satkosia Gorge) से

हुआ। महानदी ने पहाड़ों को चीरकर यहाँ जो रास्ता बनाया है, वह भारत के सबसे सुंदर प्राकृतिक दृश्यों में से एक है। यहाँ का "घड़ियाल संरक्षण केंद्र" वन्यजीव प्रेमियों और शोधकर्ताओं के लिए एक विशिष्ट स्थान है।

सतकोसिया के घने जंगलों में "घड़ियाल" और "मगर" का अद्भुत सह–अस्तित्व देखा जा सकता है। टीम ने देखा कि कैसे नदी के संसाधनों का उपयोग बिना प्रकृति को छेड़े किया जा सकता है। यहाँ का "इको–टूरिज्म" मॉडल पूरे देश के लिए एक उदाहरण है, जहाँ स्थानीय जनजातीय समुदायों को रोज़गार मिलता है और बदले में वे ही इन जंगलों और नदियों के सबसे समर्पित रखवाले बनते हैं।

अधिकारियों ने सर्वेक्षण के दौरान यह भी नोट किया कि ओडिशा के ये वन न केवल लकड़ी देते हैं, बल्कि ये कंद–मूल, शहद, साल के पत्ते और औषधीय पौधों का एक विशाल भंडार भी हैं। "लघु वनोपज" (Minor Forest Produce) आज भी लाखों परिवारों की अर्थव्यवस्था का मूल आधार है।

देब्रीगढ़ और भविष्य का संकल्प

कहानी का अंतिम पड़ाव संबलपुर के पास स्थित देब्रीगढ़ वन्यजीव अभयारण्य था। हीराकुंड बाँध के विशाल जलाशय के किनारे स्थित यह अभयारण्य शांति और प्राकृतिक सौंदर्य का अद्भुत संगम है। यहाँ के "चौसिंगा" (Four-horned Antelope) और विभिन्न प्रकार के प्रवासी पक्षी इसे एक विशिष्ट पहचान प्रदान करते हैं।

सर्वे टीम ने पाया कि देब्रीगढ़ में पर्यटन को इस तरह विकसित किया गया है कि जानवरों के प्राकृतिक आवास में कोई हस्तक्षेप न हो। "नो प्लास्टिक ज़ोन" और सौर ऊर्जा का व्यापक उपयोग यहाँ की कार्यप्रणाली की विशेषता है।

ओमप्रकाश ने अपनी यात्रा समाप्त करते हुए कहा, "साहब, ओडिशा के पास सब कुछ है – पहाड़, नदियाँ, समुद्र और रहस्यमयी जंगल। हमें बस इनका 'संयमित उपभोग' करना सीखना होगा।"

प्रधान महालेखाकार कार्यालय जैसे महत्वपूर्ण संस्थानों के माध्यम से जब "तोशाली" जैसी पत्रिकाएँ इस संदेश को प्रसारित करती हैं, तो यह समाज के हर स्तर पर चेतना जगाने का कार्य करती हैं।

निष्कर्ष

ओडिशा की वास्तविक समृद्धि उसके केवल भूमिगत खनिजों में नहीं, बल्कि उसकी बहती नदियों, नीले समुद्र और वन्यजीवों की गूँज में है। गहिरमाथा के कछुओं से लेकर सतकोसिया के घड़ियाल तक, हर जीव हमारे जीवन चक्र का एक अटूट हिस्सा है। इनका संरक्षण करना ही ओडिशा का सच्चा विकास और हमारी साझा विरासत का सम्मान है।

•••

ओडिशा: प्रकृति और जीवन का संगम

सुश्री शुभश्री पात्रो
सुपुत्री – टी. प्रसाद राव पात्रो, लेखाकार

ओडिशा, भारत के पूर्वी तट पर बसा एक अनुपम राज्य है, जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता, वन्य जीवन और खनिज संसाधनों के लिए विश्व प्रसिद्ध है। इस राज्य की धरती, नदियाँ, झीलें, समुद्री तट और घने जंगल न केवल पर्यावरणीय धरोहर हैं, बल्कि यह आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। ओडिशा की हरी–भरी घाटियाँ और समृद्ध जैव विविधता इसे पर्यावरण प्रेमियों और शोधकर्ताओं के लिए आकर्षण का केन्द्र बनाती हैं।

ओडिशा के जंगलों में भारतीय हाथी, बाघ, गौर, भालू, हिरण और न जाने कितने छोटे और दुर्लभ जीव निवास करते हैं। नंदनकानन बायोलॉजिकल पार्क, जो भुवनेश्वर के नजदीक स्थित है, इन जीवों को प्राकृतिक वातावरण में संरक्षण प्रदान करता है। इसके साथ ही चिलिका झील, जो विश्व की दूसरी सबसे बड़ी खारे पानी की झील है, लाखों प्रवासी और देशी पक्षियों का घर है। यहाँ के कोइल, सारस और फ्लेमिंगो की विशाल संख्या देखना किसी कला प्रेमी के लिए सपना सच होने जैसा है।

"हरे–भरे जंगलों में बिखरी जीवन की चमक,
पक्षियों की चहचहाहट और नदियों की गंध।

प्रकृति की गोद में हर प्राणी है प्यारा,
संरक्षण ही है इसका सच्चा उपहार।"

ओडिशा की नदियाँ, जैसे महानदी, ब्राह्मणी और बूढ़ी महानदी, इस राज्य की कृषि और जल विद्युत का आधार हैं। इनके जल से सैकड़ों गांवों की प्यास बुझती है और खेतों में हरियाली छा जाती है। नदियों के किनारे बसे छोटे शहर और गाँव भी इन नदियों से जुड़े सांस्कृतिक और धार्मिक उत्सवों में जीवंतता पाते हैं। चिलिका झील के अलावा, राज्य के समुद्री तट मछली पालन और पर्यटन को बढ़ावा देते हैं। मछुआरे यहाँ के जीवंत तटों पर दिन–रात कड़ी मेहनत करते हैं, और उनकी जीवन शैली स्थानीय संस्कृति का अहम हिस्सा है।

"नदियों का बहना, जीवन की धारा,
समुद्र की लहरें, खुशियों का सहारा।
धरती की गहराई में खनिज का खजाना,
संसाधनों से भरी यह अनुपम कहानी ।"

ओडिशा खनिज संसाधनों के मामले में भी समृद्ध है। यहाँ लौह अयस्क, कोयला, बॉक्साइट, क्रोमाइट और गैस जैसी खनिज संपत्तियाँ प्रचुर मात्रा में पाई जाती हैं। इन संसाधनों ने राज्य को उद्योगों और विकास के क्षेत्र में सशक्त बनाया है। लेकिन यह भी सच है कि इन प्राकृतिक संसाधनों का अतिदोहन पर्यावरणीय असंतुलन पैदा कर सकता है। इसलिए, सतत विकास और संरक्षण के उपाय अत्यंत आवश्यक हैं।

"विकास हो, पर संतुलन भी रहे,
प्रकृति का हर उपहार जिए।
संरक्षण में ही है असली सफलता,
धरती और जीवन का मेल सजी।"

वन्य जीवन और प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण केवल जिम्मेदारी नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक पहचान और भविष्य

की सुरक्षा भी है। यदि हम जंगलों की कटाई रोकें, नदियों को स्वच्छ रखें और जैव विविधता का सम्मान करें, तो आने वाली

पीढ़ियाँ भी इस राज्य की सुंदरता और संसाधनों का आनंद ले सकेंगी। ओडिशा की प्रकृति हमें यह सिखाती है कि जीवन और पर्यावरण का संतुलन कितना महत्वपूर्ण है।

"हरे-भरे जंगल, नदियों का बहाव,
सभी जीवों में जीवन का स्वाद।
संरक्षण से बढ़ेगा समृद्धि का मान,
ओडिशा रहे हरियाली के साथ"

ओडिशा का वन्य जीवन और प्राकृतिक संसाधन न केवल राज्य की पहचान हैं, बल्कि यह हमें यह याद दिलाते हैं कि प्रकृति और मानव जीवन अटूट रूप से जुड़े हैं। हमें इसे संरक्षित करने और इसे आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाने का प्रयास हमेशा करना चाहिए। यही सच्चा सम्मान है हमारी मातृभूमि के लिए। ओडिशा का वन्य जीवन और प्राकृतिक संसाधन न केवल पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण हैं, बल्कि राज्य की आर्थिक और सांस्कृतिक धरोहर का भी हिस्सा है। इनके संरक्षण से भविष्य की पीढ़ियाँ भी इस प्राकृतिक संपदा का आनंद ले सकती हैं।

"संरक्षण करें, जीवन को सजाएँ,
धरती की गोद में हर प्राणी बसाएँ।
हरे-भरे जंगल, नदियों का बहाव,
प्रकृति की इस सुंदरता में है जीवन का स्वाद"

●●●

तू जहां मैं वहीं

श्री हलधर स्वाईं
वरिष्ठ लेखाकार

हर सुबह सूरज निकलता है
चाँद को पाने के लिए
पर चाँद छुप जाता है धरती की गोद में
कुछ पल बिताने के लिए
हम उसे रात कहते हैं
कभी–कभी आसमान भी रोता है
धरती के लिए
हम उसे बरसात कहते हैं।

हर शाम चाँद निकलता है
चाँदनी को पाने के लिए
अंधेरी गलियों में तारों के साथ
ये गाते हुए :–
तू कहाँ मेरी जान तू कहाँ
आवाज दे मैं यहाँ मैं यहाँ
दुनिया की इस भीड़ में हम खो गए कहाँ
दुनिया की इस भीड़ में हम खो गए कहाँ।

प्यार की दो गली है
प्यार की दो गली है
एक गली में तू है दूसरे में मैं हूँ
तू जहां मैं नहीं मैं जहां तू नहीं
तू जहां मैं नहीं मैं जहां तू नहीं।

सूरज गाता है
मैं धूप तू है छाया
मैं उजाला तू है काया
तू पुण्य है मैं हूँ पाप
तू प्यार है मैं हूँ अभिशाप
मैं सुबह हूँ तू मेरी शाम
मैं शरीर हूँ तू मेरी जान
मैं मृत्यु हूँ तो तू मेरा जीवन है
मैं दर्द हूँ तो तू मेरा सुकून है।

पूछो ये बहारों से पूछो चाँद सितारों से
पूछो इन फूलों से पूछो इन कलियों से
पूछो धरती या आसमान से
तू जहां मैं वहीं मैं जहां तू वहीं
तू जहां मैं वहीं मैं जहां तू वहीं।

•••

राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।
–महात्मा गांधी

ओडिशा का प्राकृतिक सौंदर्य

सुश्री अनिता दास
कनिष्ठ अनुवादक

ओडिशा भारत के पूर्वी तट पर स्थित एक ऐसा राज्य है, जो अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के साथ-साथ अद्वितीय प्राकृतिक सुंदरता और प्रचुर वन्य जीवन के लिए विश्व प्रसिद्ध है। बंगाल की खाड़ी के किनारे बसे इस राज्य को "प्रकृति की गोद" कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। यहाँ के घने जंगल, कलकल करती नदियाँ, विशाल झीलें और ऊंचे पर्वत शिखर न केवल आँखों को सुकून देते हैं, बल्कि जैव विविधता का एक विशाल खजाना भी समेटे हुए हैं। ओडिशा की भौगोलिक संरचना इसे प्रकृति प्रेमियों के लिए एक स्वर्ग बनाती है। राज्य को मुख्य रूप से तटीय मैदानों, मध्य पहाड़ी क्षेत्रों, पश्चिमी उच्च भूमियों और केंद्रीय नदी घाटियों में विभाजित किया जा सकता है।

विशाल समुद्र तट: ओडिशा के पास लगभग 480 किलोमीटर लंबी तटरेखा है। पुरी, कोणार्क, चांदीपुर और गोपालपुर के सुनहरे समुद्र तट पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। चांदीपुर तट की यह विशेषता है कि यहाँ ज्वार-भाटे के समय समुद्र का पानी कई किलोमीटर पीछे चला जाता है।

महानदी ओडिशा की जीवन रेखा है। इसके अलावा ब्राह्मणी, बैतरणी, ऋषिकुल्या और सुवर्णरेखा जैसी नदियाँ राज्य की भूमि को उपजाऊ बनाती हैं और इसके प्राकृतिक सौंदर्य में चार चांद लगाती है।

ओडिशा में कई खूबसूरत झरने हैं जैसे कि डुडुमा, खंडाधार और बरेहीपानी। ये झरने घने जंगलों के बीच से गिरते हुए अद्भुत दृश्य प्रस्तुत करते हैं।

ओडिशा के प्राकृतिक वैभव की बात चिल्का झील के बिना अधूरी है। यह एशिया की सबसे बड़ी और दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी खारे पानी की लैगून (झील) है। सर्दियों के मौसम में यहाँ कैस्पियन सागर, बैकाल झील और साइबेरिया

जैसे सुदूर क्षेत्रों से लाखों की संख्या में प्रवासी पक्षी आते हैं। चिल्का झील भारत में इरावदी डॉल्फिन के मुख्य आवासों में से एक है। पानी में अटखेलियां करती ये डॉल्फिन पर्यटकों के आकर्षण का मुख्य केंद्र होती हैं। झील के भीतर स्थित कालीजाई मंदिर और नलबाणा पक्षी अभयारण्य इसके धार्मिक और पर्यावरणीय महत्व को दर्शाते हैं।

ओडिशा का लगभग एक-तिहाई हिस्सा जंगलों से ढका हुआ है। ये वन विभिन्न प्रकार के दुर्लभ और संकटापन्न वन्यजीवों को आश्रय प्रदान करते हैं। राज्य में जैव विविधता के संरक्षण के लिए कई राष्ट्रीय उद्यान और वन्यजीव अभयारण्य बनाए गए हैं। मयूरभंज जिले में स्थित सिमलीपाल भारत के सबसे महत्वपूर्ण बाघ अभयारण्यों में से एक है। यह एक विशाल बायोस्फीयर रिजर्व है। यहाँ बंगाल टाइगर, एशियाई हाथी, गौर (भारतीय बाइसन) और चौसिंगा पाए जाते हैं। यह क्षेत्र अपनी घनी साल की झाड़ियों और खूबसूरत जलप्रपातों के लिए जाना जाता है।

केंद्रपाड़ा जिले में स्थित भितरकनिका देश का दूसरा सबसे बड़ा मैंग्रोव पारिस्थितिकी तंत्र है। खारे पानी के मगरमच्छ उद्यान विशालकाय खारे पानी के मगरमच्छों के लिए विश्व प्रसिद्ध है। यहाँ अत्यंत दुर्लभ "सफेद मगरमच्छ" (सांख्य) भी पाए जाते हैं। यह पक्षियों की विभिन्न प्रजातियों और किंगफिशर पक्षी के लिए भी एक उत्तम स्थान है।

भितरकनिका के पास स्थित गहिरमाथा दुनिया का सबसे बड़ा "ओलिव रिडले" कछुओं का घोंसला बनाने वाला स्थान है। हर साल लाखों कछुए अंडे देने के लिए प्रशांत महासागर से हजारों मील की यात्रा करके यहाँ के तटों पर आते हैं। इस दृश्य को देखना प्रकृति के सबसे चमत्कारी अनुभवों में से एक है।

भुवनेश्वर के बाहरी इलाके में स्थित नंदनकानन का अर्थ है "स्वर्ग का बगीचा'। यह सफेद बाघों के प्राकृतिक प्रजनन के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध है। यहाँ भारत की पहली "घड़ियाल प्रजनन योजना" भी शुरू की गई थी। ओडिशा के जंगलों में वनस्पतियों की भी अद्भुत विविधता पाई जाती है। यहाँ उष्णकटिबंधीय अर्ध-सदाबहार वन, नम पर्णपाती वन और शुष्क पर्णपाती वन पाए जाते हैं।

प्रमुख वृक्षः साल, सागौन, शीशम, बांस, और केंदु के पेड़ यहाँ बहुतायत में मिलते हैं। केंदु के पत्ते (बीड़ी पत्ता) राज्य की अर्थव्यवस्था और जनजातीय लोगों की आजीविका का एक बड़ा साधन हैं। गंधमार्दन पर्वत श्रृंखला जैसी जगहों पर दुर्लभ औषधीय जड़ी-बूटियाँ पाई जाती हैं, जिनका उल्लेख प्राचीन आयुर्वेदिक ग्रंथों में भी मिलता है।

पर्यावरण संरक्षण और चुनौतियाँ

ओडिशा की यह अमूल्य प्राकृतिक संपदा आज कई खतरों का सामना कर रही है। राज्य में प्रचुर मात्रा में खनिज (जैसे कोयला, लौह अयस्क, बॉक्साइट) मौजूद हैं। अत्यधिक खनन और औद्योगिक विकास के कारण जंगलों की कटाई हो रही है, जिससे वन्यजीवों के प्राकृतिक आवास नष्ट हो रहे हैं। जंगलों के कम होने से हाथियों और बाघों का इंसानी बस्तियों में आना आम हो गया है, जिससे दोनों तरफ जान-माल का नुकसान होता है।

ओडिशा का तटीय क्षेत्र अक्सर चक्रवातों की चपेट में आता रहता है, जिससे मैंग्रोव और तटीय पारिस्थितिकी को भारी नुकसान पहुंचता है। राज्य सरकार और विभिन्न गैर-सरकारी संगठन वन्यजीवों के संरक्षण, अवैध शिकार पर रोक लगाने और वनीकरण को बढ़ावा देने के लिए लगातार प्रयास कर रहे हैं। "इको-टूरिज्म" को बढ़ावा दिया जा रहा है ताकि स्थानीय लोगों को रोजगार मिले और वे पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक हों।

ओडिशा की प्राकृतिक सुंदरता और इसका वन्य जीवन ईश्वर का दिया हुआ एक अनमोल उपहार है। यह राज्य न केवल सुंदर दृश्यों की भूमि है, बल्कि पृथ्वी के पारिस्थितिक संतुलन को बनाए रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यदि हम चाहते हैं कि आने वाली पीढ़ियां भी इस अलौकिक सौंदर्य का आनंद ले सकें, तो हमें विकास और पर्यावरण के बीच एक सही संतुलन बनाना होगा। ओडिशा की प्रकृति का संरक्षण करना हम सभी का परम कर्तव्य है।

•••

जंगल की गोद में सर्दियों की यात्राः देब्रीगढ़ वन्यजीव अभयारण्य

सुश्री रिम्पा सरकार
लेखाकार

दिसंबर 2025 में हमें प्रकृति के बीच एक यादगार अवकाश बिताने का अवसर मिला, जब हमने पश्चिमी ओडिशा में हीराकुंड जलाशय के पास स्थित शांत और अपेक्षाकृत कम खोजे गए देब्रीगढ़ वन्यजीव अभयारण्य का भ्रमण किया। शहरों की भीड़–भाड़ और शोरगुल से दूर, देब्रीगढ़ ने अपने शांत जंगलों, धुंध भरी सुबहों और अनंत वन्य वातावरण से स्वागत किया।

हम ओटीडीसी (OTDC) के कॉटेज में दो दिनों तक ठहरे किया, जो हमारी यात्रा के लिए एक आदर्श स्थान साबित हुआ। कॉटेज साधारण लेकिन आरामदायक थे और प्राकृतिक परिवेश के साथ सुंदर ढंग से घुले–मिले हुए थे। अलार्म की जगह पक्षियों की चहचहाहट से सुबह जागना अपने आप में एक सुखद अनुभव था। ठंडी सर्दियों की सुबहों में हल्की धुंध के बीच सूरज की पहली किरणें जंगल को जीवंत कर देती थीं।

हमारी पहली सफारी सुबह–सुबह शुरू हुई और रोमांच से भरपूर रही। जैसे–जैसे हमारी गाड़ी अभयारण्य के ऊबड़–खाबड़ रास्तों से आगे बढ़ी, दोनों ओर साल और सागौन के ऊँचे पेड़ खड़े दिखाई दिए। जंगल की शांति को केवल पत्तों की सरसराहट और पक्षियों की आवाज़ें ही भंग कर रही थीं। हमें चीतल और सांभर हिरणों के झुंड देखने का सौभाग्य मिला, जो बड़ी सहजता से जंगल में विचरण कर रहे थे। कुछ जंगली सूअर भी रास्ता पार करते दिखे और लंगूर पेड़ों से छलांग लगाते नज़र आए। तेंदुए जैसे शिकारी जानवरों की मौजूदगी की संभावना ने हर मोड़ पर रोमांच बढ़ा दिया।

दोपहर में हीराकुंड जलाशय में की गई नाव यात्रा बिल्कुल अलग और बेहद सुकून देने वाली रही। शांत जल पर नाव के धीरे–धीरे आगे बढ़ने के साथ अभयारण्य का एक नया रूप सामने आया। जंगल से ढकी पहाड़ियाँ जलाशय में उतरती प्रतीत हो रही थीं और ठंडे आसमान की परछाइयाँ पानी में झिलमिला रही थीं। किनारों पर विश्राम करते प्रवासी पक्षी दिखाई दिए, जिन्होंने इस शांत दृश्य में और भी जान डाल दी। ठंडी हवा, पानी की हल्की लहरों की आवाज़ और चारों ओर फैली शांति ने इस नाव यात्रा को अविस्मरणीय बना दिया।

शामें ओटीडीसी कॉटेज में बेहद शांत और आरामदेह रही। सीमित सुविधाओं और बाहरी दुनिया से दूरी के कारण आपसी बातचीत और भी गहरी हो गई। जैसे–जैसे अंधेरा छाया, जंगल एक अलग ही रूप में डूब गया। शहर की रोशनी से दूर, तारों से भरा आसमान हमें प्रकृति की विशालता और सुंदरता का एहसास कराता रहा।

दूसरे दिन की सफारी ने देब्रीगढ़ की जैव विविधता के प्रति हमारा आकर्षण और बढ़ा दिया। अब हम जंगल की बारीकियों पर ध्यान देने लगे–जानवरों के ताज़ा पदचिह्न, अलग–अलग पक्षियों की आवाज़ें और सर्दियों की धूप में बदलते जंगल के रंग। अभयारण्य जीवंत होते हुए भी अपनी शांति बनाए हुए था, मानो आगंतुकों को बिना किसी हस्तक्षेप के प्रकृति को महसूस करने का अवसर दे रहा हो।

जब विदा लेने का समय आया, तो सभी को यही लगा कि दो दिन बहुत जल्दी बीत गए। देब्रीगढ़ वन्यजीव अभयारण्य ने हमें केवल वन्यजीवों के दर्शन ही नहीं कराए, बल्कि शांति, आत्मिक सुकून और प्रकृति से एक गहरा जुड़ाव भी दिया। दिसंबर 2025 की यह यात्रा हमारी स्मृतियों में हमेशा के लिए दर्ज हो गई, एक ऐसी यात्रा जहाँ समय धीमा पड़ गया और जंगल ने अपनी खामोशी में बहुत कुछ कह दिया।

•••

गाहिरमाथा : वात्सल्य की एक गाथा

श्री प्रज्ज्वल उपाध्याय
सहायक लेखा अधिकारी

प्रेम, वात्सल्य, लगन – यह कितने प्यारे शब्द हैं! यह शब्द साथ मिलकर एक ऐसी ऊर्जा का संचार करते हैं, जो एक नई दुनिया का सृजन कर सकती है। एक नवीन सृष्टि कैसी होती है? ठीक वैसी ही, जैसे नवजात को जन्म देने वाली मां का प्यार – अविरल, अविचल, निश्छल! जैसे प्यासी धरती को आच्छादित करने हमेशा उमड़ आते हैं काले मेघ, ठीक वैसे ही सदियों से हर वर्ष करोड़ों की तादाद में समुद्री कछुए मीलों की लंबी दूरी तय करके चले आते हैं ओडिशा के एक तट पर, लिखने बानगी प्रेम व वात्सल्य की – जिसका नाम है गाहिरमाथा।

यह कहानी है ओलिव रिडले कछुओं की। ओलिव रिडले कछुए विश्व की सबसे छोटी व सबसे व्यापक रूप से पाई जाने वाली कछुआ की प्रजाति है। प्रशांत, अटलांटिक व हिंद महासागर में इनका निवास पाया जाता है। यह कछुए अपनी "मास नेस्टिंग" अर्थात बहुत बड़ी संख्या में अंडे देने की विशिष्ट प्रवृत्ति के लिए विख्यात हैं। जिसे "अरिबाडा" कहा जाता है। लाखों की संख्या में मादा कछुए हजारों मील की दूरी तय करके इस तट पर साथ आती हैं। ओलिव रिडले कछुए आईयूसीएन की लाल सूची में "vulnerable" अंकित किए गए हैं। भारतीय वन्यजीव संरक्षण अधिनियम 1972 की पहली अनुसूची में इन्हें संरक्षण प्राप्त है। यही कारण है कि गाहिरमाथा को सन 1997 में वन्यजीव अभ्यारण्य का दर्जा प्रदान किया गया।

गाहिरमाथा ओडिशा के दक्षिण पूर्वी तट पर अवस्थित एक महत्वपूर्ण समुद्र कूल है। यह समुद्र कूल भितरकनिका के मैंग्रोव जंगलों को बंगाल की खाड़ी से विभाजित करता है और ओलिव रिडले कछुओं की दुनिया की सबसे महत्वपूर्ण प्रजनन स्थली है। केंद्रपाड़ा जिले में स्थित यह अभयारण्य ओडिशा का एकमात्र मरीन अभयारण्य है। यह उत्तर में धामरा नदी के मुहाने से लेकर दक्षिण में महानदी के मुहाने तक विस्तारित है। इस अभयारण्य का कुल क्षेत्रफल 1435 वर्ग किमी है, जिसमें बेला भूमि, समुद्री जल व जंगल भी शामिल हैं।

न सिर्फ ओडिशा, बल्कि संपूर्ण विश्व में गाहिरमाथा अपनी अनोखी पहचान रखता है। इसका क्षेत्रफल मेक्सिको व कोस्टारिका के तट से भी अधिक है। यहां अनेक पक्षियों की प्रजातियां भी पाई जाती हैं। भुवनेश्वर से 132 किलोमीटर दूर स्थित यह अभ्यारण्य प्रेम, त्याग, एकता व हौसले की जीती-जागती मिसाल है, जिसकी मनमोहक छटा देखते ही बनती है।

ओलिव रिडले कछुए अमूमन अक्टूबर महीने की शुरुआत से ही पलायन करना शुरू कर देते हैं। ऐसा पाया गया है कि वे श्रीलंका के समुद्र से उत्तरी दिशा की ओर पलायन करते हैं। गाहिरमाथा पहुंचने पर नवंबर से जनवरी के मध्य वे मिलन करते हैं। तत्पश्चात मादाएं लंबे समय के लिए समुद्र के तटीय क्षेत्र की ओर लहरों के साथ बहकर चली आती हैं। एक मादा तट पर स्थित रेत में 45 सेंटीमीटर जितना बड़ा गड्ढा खोद सकती है, जिसमें वह 150 से 180 अंडे देती है। 5 से 7 दिनों तक चलने वाली इस प्रक्रिया में एक समय पर 6 लाख मादाएं समुद्र तट पर अवतरित हो सकती हैं।

पर उनका यह सफर इतना आसान नहीं होता। प्रेम के इस इम्तिहान में उन्हें कई अग्नि परीक्षाएं देनी पड़ती हैं। वर्तमान मानव यहां भी अपनी हरकतों से बाज नहीं आया है। बंदरगाह एवं पर्यटन विकास संबंधी योजनाओं के लिए प्रजनन स्थली के बेधड़क अतिक्रमण से इन कछुओं की डगर कठिन हो गई है। इन कछुओं के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर पाबंदी है। फिर भी भूलवश मछुआरों के जाल में फंसकर हर वर्ष हजारों कछुए अपनी जान से हाथ धो बैठते हैं।

कई बार किसी गड्ढे में पहले से भरे हुए अंडे एक नई मादा के दिए गए अंडों के कारण बाहर आ जाते हैं। ऐसे अंडे अपनी पराकाष्ठा तक पहुंचने से पहले ही चील–कौओं के भोजन का ग्रास बन जाते हैं। सियार, पक्षी व केकड़े इन नवजात बच्चों के सबसे बड़े दुश्मन है। अंडे फूटने के बाद भी यह नन्हें कछुए उनका शिकार हो जाते हैं। शोध तो यह बताता है की हज़ार में से मात्र एक कछुए का बच्चा सफलतापूर्वक समुद्र में पहुंच पाता है।

हालांकि हाल के दशकों में इनके संरक्षण के प्रति कई सकारात्मक कदम उठाए गए हैं। कई गश्ती वाहिनियां तटीय क्षेत्र एवं अभयारण्य का निरीक्षण करती हैं। वन विभाग द्वारा बाबूबली व अगरनासि में "एंटी पोचिंग कैंपस" लगाए गए हैं। प्रजनन स्थली में आम जनता के गमनागमन पर रोक भी लगाई गई है। इन कदमों से इन नन्हें कछुओं की राह कुछ आसान हुई है।

इन नन्हें कछुओं का जन्म रात अथवा भोर की बेला में होता है। और यह बच्चे स्वत: ही सवेरे सूर्य के प्रकाश की ओर खींचे चले आते हैं, जो संयोगवश समुद्र की दिशा भी है। है ना प्रकृति का कितना सुंदर प्रयोग! समुद्र की विशाल लहरें और सूर्य का संवेग प्रकाश, मानो दोनों हाथ फैलाए इन नन्हें मेहमानों के स्वागत को आतुर खड़े प्रतीत होते हैं। प्रकृति के इस अमूल्य उपहार को आज हम सबको मिलकर संजोने की जरूरत है।

•••

सेवानिवृत्ति

क्रम सं.	नाम (श्री/ सुश्री/ श्रीमती)	पदनाम	सेवानिवृत्ति की तिथि
1.	कृष्ण चंद्र साहू-।।	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.10.2025
2.	मोदाशिर अहमद	पर्यवेक्षक	31.10.2025
3.	लिंगराज सिंह	पर्यवेक्षक	31.10.2025
4.	खिरोद चंद्र दास	पर्यवेक्षक	31.10.2025
5.	लक्ष्मीधर बेहेरा	पर्यवेक्षक	31.10.2025
6.	मुन्नू भोई	सहायक पर्यवेक्षक	31.10.2025
7.	बुद्धदेव नायक	वरिष्ठ लेखाकार	31.10.2025
8.	मुकुंद चंद्र नायक	वरिष्ठ लेखाकार	31.10.2025
9.	समद खान	एमटीएस	31.10.2025
10.	हाटा किशोर बेहेरा	पर्यवेक्षक	30.11.2025
11.	टुकुना कांडी	सहायक पर्यवेक्षक	30.11.2025
12.	अशोक कुमार मिश्रा	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.12.2025
13.	प्रताप कुमार दास	पर्यवेक्षक	31.12.2025
14.	अच्युतानंद साहू	पर्यवेक्षक	31.01.2026
15.	कामदेव मल्लिक	पर्यवेक्षक	31.01.2026
16.	अशोक कुमार पात्रा-।	पर्यवेक्षक	31.01.2026
17.	संजुक्ता मंजरी भोई	एमटीएस	31.01.2026
18.	बल्लव चंद्र नायक	पर्यवेक्षक	28.02.2026
19.	बासंती गौड़ा	एमटीएस	28.02.2026
20.	बसंत कुमार बेहेरा	एमटीएस	28.02.2026
21.	सरत चंद्र नायक	पर्यवेक्षक	31.03.2026
22.	प्रकाश चंद्र साहू	सहायक पर्यवेक्षक	31.03.2026

"तोशाली" पत्रिका परिवार सभी सेवानिवृत्त सहकर्मियों के स्वस्थ एवं दीर्घायु जीवन की कामना करता है।

श्री स्वामी शुभम बैजनाथ
उप महालेखाकार (निधि एवं पेंशन)

श्री हलधर स्वाईं
वरिष्ठ लेखाकार

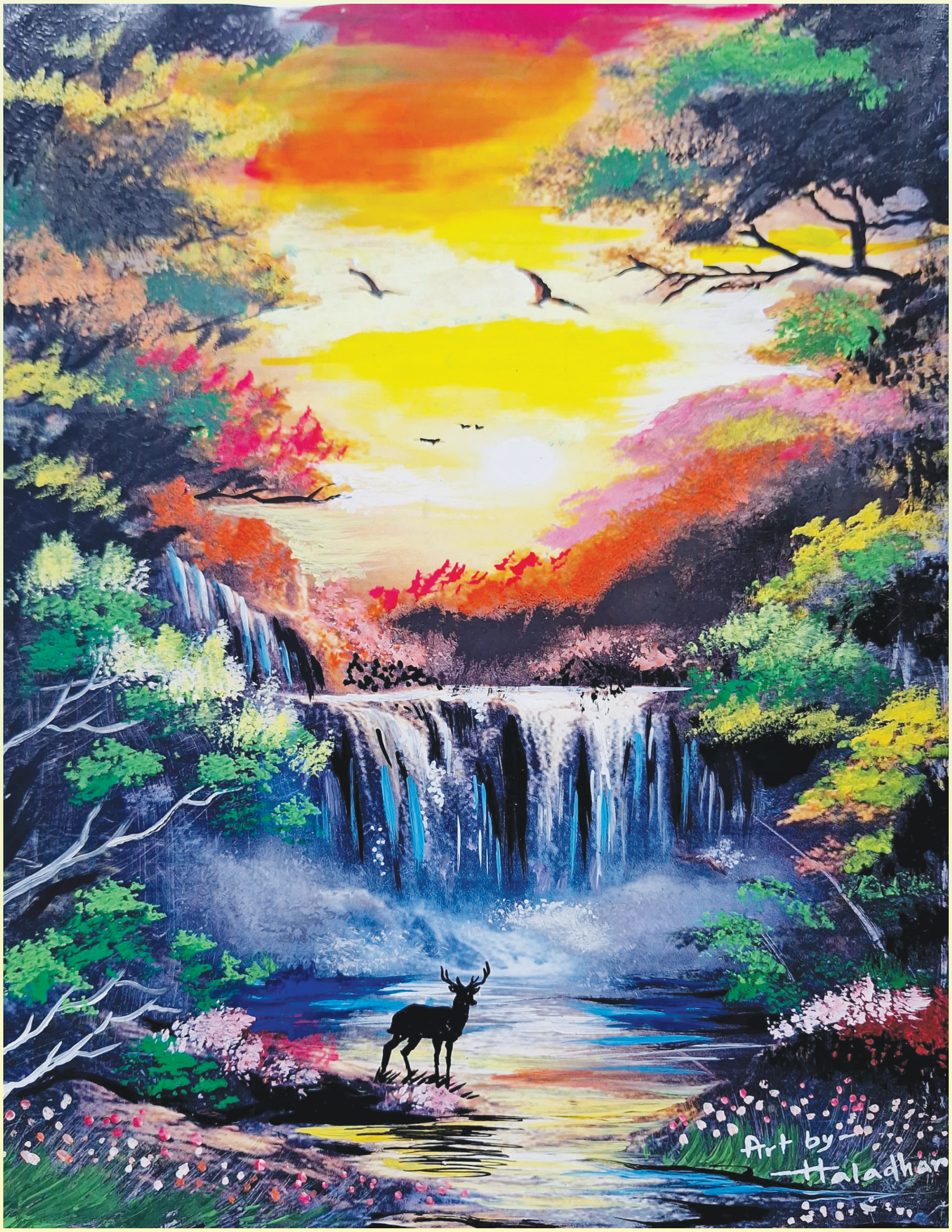

हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह-2025 के दौरान "तोशााली" पत्रिका के 109वें अंक का विमोचन करते अधिकारीगण

हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह-2025 के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता अधिकारी/ कर्मचारीगण

हिंदी पखवाड़ा-2025 के अवसर पर उपस्थित अधिकारीगण एवं राजभाषा परिवार

नराकास की 76 वीं बैठक में उपस्थित नराकास अध्यक्ष एवं विशिष्ट अतिथि

नराकास की 76 वीं बैठक में पुरस्कार प्राप्त करते व.उ.म.ले. (प्रशा.)

नराकास की 77 वीं बैठक में उपस्थित नराकास अध्यक्ष एवं विशिष्ट अतिथि

नराकास की 77 वीं बैठक में मंच संचालन करतीं सदस्य सचिव, नराकास तथा उपस्थित अधिकारीगण